रूस में शुद्धीकरण

आधुनिक साहित्य माला—२४

रूस में शुद्धीकरण

(अंग्रेजी की पुस्तक The Russian Purge का संक्षिप्त अनुवाद)

एफ० बेक

एन० डब्ल्यू० गोडिन

नई दिल्ली

आधुनिक साहित्य प्रकाशन

मूल्य एक रुपया चार आने

प्रकाशक
आधुनिक साहित्य प्रकाशन,
पोस्ट बाक्स नं० ६६४, नई दिल्ली ।

मुद्रक
गोपीनाथ सेठ, नवीन प्रेस, दिल्ली ।

इस पुस्तक में १९३६-३९ के उस भीषण रूसी शुद्धीकरण पर प्रकाश डाला गया है जिसका वहाँ के शासकवर्ग ने अपना शासन दृढ़ करने के लिए प्रयोग किया।

सूची

करने की आदत, घृणा अथवा पूर्व निर्धारित विचारों ने विरोधी रिपोर्टों को दूषित बना दिया है; या फिर यह रिपोर्टें कटु अनुभवों के भार से दबकर लिखी गई हैं।

इस पुस्तक के लेखकों की प्रचार करने या लोकप्रिय बनने की नीयत नहीं है। खोज-पड़ताल द्वारा पहुँचे हुए नतीजों के अलावा अन्य किसी प्रकार के निष्कर्षों को पेश करने से लेखकों ने अपने-आपको जान-बूझकर रोका है। असली तथ्य इतने उलझे हुए हैं और अभी तक हम उनके इतने अधिक निकट हैं कि निर्णयात्मक मूल्यांकन करने का प्रयास नहीं किया जा सकता। किसी भी प्रकार के नैतिक अथवा राजनीतिक निर्णयों को प्रस्तुत करने से भी लेखकों ने जान-बूझकर अपने-आपको रोका है। लेखकों का उद्देश्य एक यथार्थ चित्र पेश करना है और पाठक को अपने निर्णय पर स्वयं पहुँचने के लिए छोड़ देना है। सोवियत यूनियन विरोधाभासों और पारस्परिक प्रतिकूलताओं से इतना भरा है कि सोवियत पद्धति, सोवियत-जीवन और परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त करना और भी अधिक कठिन बन गया है। इन उलझनों में स्वयं सोवियत जनता भी मुश्किल से अपना रास्ता देख पाती है। विदेशियों के लिए यह उलझनें अक्सर समझ के बाहर होती हैं।

यह पुस्तक उन दो व्यक्तियों द्वारा लिखी गई है जिन्हें भाग्य ने एक सोवियत जेल में एक साथ ला मिलाया और जेल की कोठरी में महीनों के वाद-विवाद का यह परिणाम है। दोनों लेखको के देश, व्यवसाय और दृष्टि-कोणों में अन्तर है, और शायद यह अन्तर ही उनके लिए एक हद तक बहिर्मुखी होना सम्भव बना पाया है। एक इतिहासकार है और दूसरा वैज्ञानिक। बहिर्मुखता के पक्ष में उनकी अपनी व्यावसायिक विशिष्टताओं का प्रयोग उन्हें अपने निरूपणों की सावधानी के साथ जाँच करने और उनकी तालिका बनाने में तथा निष्कर्षों पर पहुँचने में सम्भवतः बहुमूल्य सिद्ध हुआ है।

: १ :

पार्टी-नीति

१९३६ और १९३९ के बीच के येझोव-काल के महान् शुद्धीकरण पर विचार करने से पूर्व, जो कि हमारा विषय है, हमें उससे पहले की घटनाओं पर एक नजर डालनी चाहिए।

विदेशों में ज़्यादातर लोगों का यह खयाल है कि अक्तूबर-क्रान्ति ने रूसी बौद्धिक-वर्ग को सम्पूर्णतः नष्ट कर दिया था। यह एक बिलकुल गलत धारणा है जो कि १९१८ और १९२२ के बीच रूसी उत्प्रवास द्वारा पैदा हुई थी। उत्प्रवास और 'चेका' का बौद्धिक-वर्ग के केवल संकीर्ण क्षेत्रों पर, जैसे कि सामन्तशाही, जमींदार और धनी व्यापारी, ज़ारशाही के उच्च-पदाधिकारी, धर्मपालिका का उच्चतर स्तर, सैनिक अफ़सरों और उद्योग-पतियों पर मोटी तौर पर प्रभाव पड़ा था। किन्तु इन लोगों पर भी उसी परिमाण में प्रभाव पड़ा था जिस परिमाण में इन्होंने गृह-युद्ध में क्रान्ति का सक्रिय विरोध किया था अथवा ऐसा करने का जिन पर सन्देह था। बौद्धिक-वर्ग का अधिकांश भाग फिर भी बचा रहा। बहुत-से भूतपूर्व सामन्त और बड़े जमींदार और जनरल सोवियत व्यवसायों में क्लर्कों और संदेशवाहकों के रूप में काम करते नज़र आते थे।

इसके विपरीत वैज्ञानिक एवं टेकनिकल बुद्धिजीवी, विशेषतः अधिक उन्नत शिक्षा-प्राप्त टेकनिशियन आरम्भ से ही सोवियत-शासन से आदर

और प्रोत्साहन प्राप्त करते रहे थे, यद्यपि वे भी बाकी जनता की तरह कठोर राजनीतिक नियन्त्रण में रहते थे। फिर भी अधिकांश लोग शासन के पक्ष में सामान्यतः और विशेषतः स्तालिन द्वारा अपनाई गई नीति के पक्ष में न थे और इसलिए लगभग १९२९ के बाद से सरकार उत्पीड़क एवं आतंक-वादी कार्यवाहियाँ करने के लिए बाध्य हो गई ताकि इन क्षेत्रों को, विशेषतः टेक्निशियन और इंजीनियरों के निष्क्रिय प्रतिरोध को भी कुचला जा सके। पुराने बुद्धिजीवी-वर्ग के बहुत-से इंजीनियरों को गिरफ्तार कर लिया गया और चाहे उन्हें लम्बी सज़ाएँ दी गई हों या न, जैसे ही उन्होंने आवश्यक अपराध-स्वीकृति की, उन्हें रिहा कर दिया गया। 'उद्योग-पार्टी' कहलाए जाने वाले एक दल पर दिखावे के लिए मुकदमे चलाए गए, जिनमें इंजी-नियरों और प्रोफ़ेसरों को फाँसा गया। हर मामले में अपराधियों पर तोड़-फोड़ करने और विप्लवकारी कार्यवाहियों का जुर्म लगाया गया, किन्तु सोवियत बुद्धिजीवी-वर्ग के शायद ही कुछ लोग ऐसे हों जो समझते थे कि ये दोषारोपण वास्तविक तथ्यों पर आधारित हैं। हजारों इंजीनियर, टेकनिशियन, कृषि एवं वन-विशेषज्ञ, डॉक्टर और वैज्ञानिक इस अल्पकालीन शुद्धीकरण के शिकार बने। अपराध-स्वीकृति के बाद उनमें से अधिकांश को शीघ्र ही मुक्त कर दिया गया और कई को तो महत्त्वपूर्ण पदों पर पुनः नियुक्त भी किया।

इस प्रकार सरकार अपनी नीति के समस्त विरोधियों को नष्ट करने के अपने लक्ष्य में सफल हुई। सोवियत यूनियन के इंजीनियरों को पढ़ाया गया कि वे सरकारी हुक्मों को किसी भी तरह के बहस-मुबाहिसे बिना ही स्वीकार करना सीखें और यहाँ तक कि जब वे ख़ुद समझते हों कि सरकारी हुक्म अनुचित अथवा टेकनिकल दृष्टि से त्रुटिपूर्ण हैं तब भी उन्हें उन हुक्मों की तामील करना सीखना चाहिए।

पार्टी और सरकारी अधिकारियों, वैज्ञानिक संस्थाओं, विश्वविद्यालयों और औद्योगिक कार्य-कलापों की 'सफाई' ने भी पंचवर्षीय योजना के समस्त विरोध को नष्ट करने में सहायता पहुँचाई है।

'सफ़ाई' (या चिश्तका) दबाव डालने का सबसे अधिक प्रचलित और सबसे अधिक प्रभावोत्पादक तरीका था। 'सफ़ाई' के फलस्वरूप किसी को भी पार्टी से, अपने दफ्तर या अपने कारखाने से 'साफ़' किया या बाहर निकाला जा सकता था। अन्य नरम कार्यवाहियाँ भी थीं जैसे कि 'संगठन-सम्बन्धी कार्यवाहियाँ'; जिनमें मामूली या 'सख्त' डाँट-फटकार, ट्रेड यूनियन से अस्थायी व स्थायी रूप से बाहर निकाला जाना और ऊँचे पद से नीचे उतार देना आदि शामिल था। हर एक कारखाने, कार्यालय या संस्था में 'सफ़ाई'-सम्बन्धी सभाएँ होती थीं जिनमें इस प्रकार की कार्यवाहियों के लिए पार्टी-प्रतिनिधि के प्रस्ताव का बहुधा सर्वसम्मति से अनुमोदन किया जाता था।

सामाजिक उत्पत्ति, या यह बहाना कि अमुक व्यक्ति ने अपनी सामाजिक उत्पत्ति छिपाई है, या वह किसी अन्य राजनीतिक दल का भूतपूर्व सदस्य रह चुका है, या पहले कभी उसने पार्टी के अन्दर विपक्षियों का समर्थन किया है, आदि बातों को अक्सर 'सफ़ाई' का कारण बताया जाता था। राजनीतिक अविश्वसनीयता-जैसा व्यापक अपराध या अन्य किसी भी प्रकार के अपराध को लेकर 'सफ़ाई' शुरू की जा सकती थी। पार्टी से बाहर निकाला जाना अक्सर गिरफ्तारी की भूमिका होती थी। सोवियत यूनियन के शिक्षित-वर्ग विशेषज्ञ, पार्टी-सदस्य और अधिकारियों के लिए 'सफ़ाई' बहुत-कुछ वही अर्थ रखती थी जो कि धनी किसानों के लिए रखती चली आई थी।

तथाकथित प्रोशर्वोतका (जाँच) और 'आलोचना एवं आत्म-विवेचन' की विभिन्न प्रक्रियाओं का शैक्षणिक क्षेत्र के सोवियत नागरिकों पर भी प्रयुक्त किया गया।

वैज्ञानिक एवं कलात्मक कार्यों तथा समस्त शास्त्रीय शिक्षा की कठोर आलोचना की जाती थी ताकि यह पता लगाया जा सके कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों से अर्थात् पार्टी के अधिकृत एवं प्रचलित रूप से मान्य नीति से कहीं कोई पथभ्रष्ट तो नहीं हो रहा। सोवियत जीवन में पार्टी-नीति एक भीषण महत्त्व रखती है—हरेक जगह उसे खींचकर ले आया जाता

है, यहाँ तक कि लोगों के निजी जीवनों में भी।

सैद्धान्तिक रूप से पार्टी की सामान्य नीति दक्षिण अथवा वाम पक्ष की ओर झुकने की हमेशा इजाज़त देती है और सोवियत यूनियन की एक बुनियादी कपोल कल्पना के अनुसार यह नीति सम्पूर्णतः सीधे रास्ते से आगे बढ़ती जा रही है। किन्तु व्यावहारिक रूप में वे विचार, जो कभी पार्टी-नीति के सुर के साथ मिले हुए थे, कभी बिलकुल उसके विपरीत जा पड़ते हैं। दूसरे शब्दों में पार्टी-नीति का रास्ता सीधा न होकर टेढ़ा-मेढ़ा है। फिर भी इस रास्ते के सीधेपन के झूठ को हमेशा बनाए रखा जाता है। अतः पार्टी के पुराने कागजातों का हवाला देना सख्त मना है। यदि सचेत पाठक स्तालिन की कृतियों के पुराने, अप्रचलित संस्करणों में लिखी कुछ बातें याद रख पाते हैं तो अजीब स्थिति पैदा हो जाती है—ऐसी स्थिति जिसके बहुत भयंकर परिणाम हो सकते हैं। उदाहरण के लिए स्तालिन की 'लेनिनवाद की समस्याओं' नामक पुस्तक के एक अंश में गृह-युद्ध में त्रॉत्स्की की विशेष सेवाओं का उल्लेख किया गया है। और बाद में त्रात्स्की को क्रांति से पहले ही 'पूँजीवाद और फासिज़्म का गुप्त समर्थक' बताया गया और कहा गया कि उसकी "क्रांतिकारी कार्यवाहियाँ अपने क्रांति-विरोधी सिद्धान्तों को केवल छिपाने के लिए ही थीं।"

अतः पार्टी की सामान्य नीति का हरेक टेढ़ा-मेढ़ापन 'पार्टी के इतिहास' को पीछे से बदले जाने के लिए बाध्य कर देता है और समस्त स्कूलों, विश्वविद्यालयों और पार्टी-क्षेत्रों के लिए अध्ययन का यह एक महत्त्वपूर्ण विषय है। १९३६ के शुद्धीकरण के बाद कोई भी ऐसा व्यक्ति न बचा था जिसे पार्टी के अधिकृत इतिहास लिखने का काम सौंपा जा सके, क्योंकि खतरा था कि वह लेखक या जिन व्यक्तियों का उसने गुण-गान किया है बाद में क्रांति-विरोधी साबित हों। अतः १९३८ में प्रकाशित अधिकृत पार्टी-इतिहास पर किसी लेखक का नाम न दिया गया। "पार्टी की केन्द्रीय-समिति के आयोग द्वारा और जे० स्तालिन के व्यक्तिगत सहयोग से" यह प्रकाशित हुआ था। आज भी वही इतिहास चलता है।

आलोचना और आत्म-विवेचना का एक-मात्र काम गलतियों और पथ-भ्रष्ट हो जाने को खोलकर दिखाना है। अपनी या दूसरों की पैरवी करने की इजाजत नहीं दी जाती और हरेक भूल में राजनीतिक दोष ढूँढ़ निकाला जाता है। प्रत्येक सोवियत नागरिक से आशा की जाती है कि वह अपने और अपने नीचे काम करने वालों का राजनीतिक उत्तरदायित्व सँभालेगा।

जब कोई व्यक्ति जाँच-पड़ताल की कार्यवाही का शिकार हो जाता है तो उसके उच्चाधिकारियों, उसके साथियों और निम्नाधिकारियों, सबको और साथ ही 'जनता के प्रतिनिधियों' को अर्थात् पार्टी और ट्रेड यूनियन आदि के प्रतिनिधियों को इस कार्यवाही में भाग लेने के लिए बाध्य होना पड़ता है। उदाहरण के लिए किसी एक विश्वविद्यालय में 'जनता के प्रतिनिधियों' को मिस्त्रियों, नौकरानियों, सन्देशवाहकों और क्लर्कों में से चुना जाता है और नतीजा यह होता है कि सुशिक्षित विशेषज्ञों का कार्य अधिकांशतः उन लोगों की आलोचना का विषय बनता है जिनका शैक्षणिक स्तर बहुत ही नीचा होता है। इस जाँच-पड़ताल की व्यापकता जनता के सामने सोवियत-जनतन्त्रवाद के एक अनिवार्य गुण के रूप में पेश की जाती है, यद्यपि इन जाँच-पड़ताल-सम्बन्धी सभाओं में दिये जाने वाले वक्तव्यों का रूप किसी सक्षम पार्टी-अधिकारी द्वारा पहले से ही निर्धारित किया जा चुका होता है। रात-रात तक चलने वाली यह सभाएँ बहुधा दिखावे के लिए ही होती हैं।

सफाई और जाँच-पड़ताल-सम्बन्धी यह कार्यवाहियाँ शुरू में भूतपूर्व जमींदारों, पदाधिकारियों और धर्माधिकारियों आदि के लिए ही खास तौर पर काम में लाई जाती थीं। १९२० की दशाब्दी के अन्त से यह कार्यवाहियाँ बढ़ने लगीं और किसान, वे लोग जो पार्टी के अन्दर ही रहकर वाद-विवाद में फँस जाते थे, मिस्त्री, वैज्ञानिक, कलाकार, राजनीतिज्ञ और पार्टी-अधिकारी भी इनमें शामिल किये जाने लगे और अन्त में १९३० की दशाब्दी में यह कार्यवाहियाँ पार्टी के उच्चतम अधिकारियों से लेकर खबर लाने-ले जाने वाले छोकरों और भाड़ झोंकने वालों तक, जनता के सब वर्गों पर लागू की जाने लगीं।

: २ :

लौह कमिस्सार

१ दिसम्बर १६३४ को एस० एम० किरॉव की हत्या के कुछ महीनों बाद एक नई राजनीतिक सफ़ाई शुरू हुई। किरॉव लेनिनग्राड-पार्टी-कमेटी का मन्त्री और पोलितब्यूरो का एक सदस्य था। इस बार आम तौर पर किये जाने वाले विज्ञापन के बिना ही चुपचाप सफाई शुरू हुई, जिसे "पार्टी-सदस्यों के निजी कागजातों की जाँच-पड़ताल" या "पार्टी-सम्बन्धी मामलों के विनियमीकरण" का विनम्रतापूर्वक नाम दिया गया। किन्तु इसका अन्त इस प्रकार की अन्य सब पूर्व कार्यवाहियों से कहीं बढ़-चढ़कर हुआ। 'वर्ग-सचेतनता' की दुहाई ने निन्दाओं और 'पोल खोलने' का एक भीषण क्रम जारी कर दिया। पार्टी-सदस्यों और साधारण सोवियत नागरिकों की साख इसी बात पर निर्भर थी कि वे कितने लोगों को पकड़वाते हैं। किसी भी तरह की शहादत जरूरी न समझी जाती थी। "जहाँ वर्ग-भावना बोलती है वहाँ प्रमाण अनावश्यक है," किएव विज्ञान-अकादमी के प्रोफेसर कॉमरेड कामिन्स्की का कथन था। खास तौर पर विशेष उत्साही लोगों ने तो किसी एक व्यक्ति की सचतेनता साबित करने के लिए उसके द्वारा पकड़ाए जाने वाले व्यक्तियों की संख्या तक भी तय करनी चाही थी। यह संख्या लगभग एक सौ व्यक्तियों की थी। कोई ठोस सबूत जरूरी न था; सिर्फ पुराने, अस्पष्ट दोषारोपणों से काम चल सकता था, जैसे कि

'सोवियत विरोधी रुख रखना', 'दुश्मन की मदद करना', 'वर्ग-सचेतनता में कमी', 'नैतिक पतन', 'पार्टी-नीति का अशुद्ध रूप 'प्रस्तुत करना', 'सामान्यतः पथभ्रष्ट हो जाना' आदि। अभियुक्त द्वारा अपनी पैरवी करने की कोशिश करना असम्भव था और अगर वह अपनी पैरवी कर भी पाता तो उसे फ़ायदे की बजाय नुक्सान ज्यादा होता। सबसे ज्यादा बुद्धिमानी इसमें थी कि अभियुक्त अपना दोष स्वीकार करके पश्चात्ताप करने लगे चाहे पश्चात्ताप करने को कोई भी कारण मौजूद न हो। कुछ भी हो, अन्त में अभियुक्त का भाग्य जाँच-पड़ताल के नतीजे से कम और एन० के० वी० डी० या अन्य पार्टी-अधिकारियों के गुप्त निर्णयों पर अधिक निर्भर करता था।

प्रत्यक्षतः इस प्रकार की पकड़ा-धकड़ी को प्रोत्साहन देने के फलस्वरूप सब प्रकार की बुराइयाँ चल पड़ीं। व्यक्तिगत प्रतिशोध और छोटे अधिकारियों द्वारा अपने बड़े अफ़सरों को हटवाकर उनकी जगह प्राप्त करने की आकांक्षा दूसरों की निन्दा का कारण बनती थी। इसमें एक बड़ा लाभ और यह था कि किसी प्रमुख अधिकारी की गिरफ़्तारी या उसके पद-च्युत होने का अर्थ था कि एक नये बने हुए मकान का एक हिस्सा खाली हो जायगा।

किसी के खिलाफ खबर देने का पहला नतीजा यह होता कि उसकी नौकरी जाती रहती। ऐसे व्यक्ति के पक्ष में बोलना भी खुद एक भारी जुर्म बन जाता था। निन्दित व्यक्ति अन्त में गिरफ़्तार कर लिये जाते और गिरफ़्तारी ज्यादातर एक प्रकार का छुटकारा साबित होती। कई लोग तो सचमुच एन० के० वी० डी० से अपनी गिरफ़्तारी की भीख माँगते, क्योंकि राजनीतिक कलंक और नौकरी पाने की असम्भवता उनका जीवन असहनीय बना देती थी।

और इस तरह 'सफाई' शुद्धीकरण के रूप में परिणत हो गई और क्रमशः जनता के सब भागों पर छा गई।

१६३६ की गरमियों में 'दिखावे' के मुकदमों का एक नया क्रम जारी हुआ। इन मुकदमों में राजकीय अभियोजक विशिन्स्की ने, जो कि मेनशेविक-

दल का भूतपूर्व सदस्य था, पहली बार एलान किया कि पार्टी के विपक्षीगण, खास तौर पर त्रॉत्स्की और बुखारिन अपने राजनीतिक जीवन के दौरान में ही क्रान्ति-विरोधी नहीं बने थे, बल्कि शुरू से ही वे विदेशी 'पूँजीवादी' और 'फासिस्टों' से सम्बन्ध बनाए हुए थे ताकि वे रूसी-क्रान्ति को रोक सकें और यदि क्रान्ति सफल हुई तो उसको उलट सकें।

येभ्रोव की जगह खौफनाक यागोदी गृह-विभाग का कमिस्सार बना। एक क्षण के लिए देश ने राहत की साँस ली, क्योंकि लोगों को विश्वास था कि अब नीति में परिवर्तन होगा। किन्तु शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि नीति में सिर्फ़ यही परिवर्तन हुआ कि उसकी सख्ती और बढ़ गई। समाचार-पत्रों ने येभ्रोव को 'लौह-कमिस्सार' बताकर उसका गुण-गान किया, जिसने कि ठीक आखिरी मौके पर एक ऐसे भयंकर षड्यन्त्र को खोल दिया जो कि देश के उच्चतम स्थानों में पहुँच चुका था।

१९३६-३९ की गिरफ़्तारियों में पहली गिरफ़्तारियों से यह फर्क था कि इस बार जनता की दृष्टि में प्रमुख व्यक्तियों को गिरफ़्तार किया गया था। व्यवस्थापकगण, पार्टी-एककों के मन्त्री, प्रादेशिक और जिला-समितियों के मन्त्री, औद्योगिक संस्थाओं और उनके विभिन्न विभागों के प्रधान, जन-कमिस्सरियटों के उच्च पदाधिकारी, विशेषतः यातायात संगठन के अधिकारी-गण, लाल सेना के अफसर, जिनमें सोवियत यूनियन के मार्शल तक शामिल थे, पार्टी संगठन के उच्चतम कार्यकर्ता, जिनमें केन्द्रीय समिति और पोलित-ब्यूरो के सदस्य तक थे, प्रसिद्ध लेखक, विद्वान् और टेकनिशियन सभी पर असर पड़ा था।

जब प्रमुख व्यक्तियों को गिरफ़्तार किया जाने लगा तो आरम्भ में कोई घोषणा न की गई और सोवियत जनता इस बात पर ग़ौर करने की अभ्यस्त हो गई कि किन मशहूर लोगों की तस्वीरें दीवारों से या दुकानों से हटाई जा रही हैं और कौन-कौन-सी राजनीतिक पुस्तिकाएँ अब नहीं बिकतीं या पुस्तकालयों में नहीं मिलतीं। तस्वीरों और किताबों का इस तरह गायब हो जाना गिरफ़्तारी का द्योतक था। स्कूलों की किताबों में इस शुद्धीकरण ने

तहलका मचा दिया। व्यक्तिगत व्यक्तित्व की नई नीति ने माशलों, जन-कमिस्सारों और अन्य उच्चाधिकारियों की तस्वीरों और उनकी प्रशंसा में संक्षिप्त लेखों से इन किताबों को भरना शुरू कर दिया था। नतीजा यह हुआ कि इन पुस्तकों के सारे संस्करणों को वितरण किये बिना ही नष्ट करना पड़ा। शुद्धीकरण की नीति इस गति से आगे बढ़ने लगी कि नई पुस्तक के प्रकाशन तक पुराने नायकों की जगह आये हुए नये नायक भी 'जनता के शत्रु' बन गए। वर्षों तक बच्चों को अपने पाठों को लिखकर उतारना पड़ा, क्योंकि किसी भी प्रकार की पाठ्य-पुस्तकें उपलब्ध न थीं। अधिक मूल्यवान् बैंक-नोटों पर पाँच उच्च पदाधिकारियों के हस्ताक्षर हुआ करते थे, जो कि बाद में सब-के-सब गिरफ़्तार कर लिये गए। १६३८ में रूबल के नये नोट जारी किये गए, जिस पर किसी के भी हस्ताक्षर न थे।

गिरफ़्तार किये गए लोगों के नामों के साथ उनकी कृतियाँ भी गायब हो गईं। जब एक प्रसिद्ध शिल्पकार, प्रोफेसर क्रातको गिरफ़्तार किया गया तो सार्वजनिक स्थानों और प्रदर्शनियों से उसकी समस्त कृतियों को हटा लिया गया, यद्यपि उसकी अधिकांश कृतियाँ सोवियत राज्य का गौरव-गान ही करती थीं। मास्को-स्थित क्रान्ति-संग्रहालय की आरम्भिक दर्शित वस्तुओं की संख्या क्रमशः कम होने लगी। इन वस्तुओं की जगह उन चित्रों ने ले ली जिनमें क्रान्ति में स्तालिन का कार्य और क्रान्ति के नेतृत्व में लेनिन के साथ स्तालिन या घनिष्ठ सम्पर्क दिखाया गया था।

किसी एक लेखक या कलाकार की गिरफ़्तारी उसकी कृति को स्वतः ही हानिकर सिद्ध कर देती थी और अन्त में वह निश्चय ही विलीन भी हो जाती, किन्तु टेकनिकल अथवा वैज्ञानिक कृतियों के लिए यह बात लागू न होती थी। ऐसे कार्य किसी दूसरे को स्थानान्तरित कर दिए जाते और फिर उस व्यक्ति के नाम पर ही आगे बढ़ाए जाते थे। उदाहरण के लिए जब हवाई-जहाजों के प्रसिद्ध डिजाइनर ए० एन० तूपोलैव को गिरफ़्तार किया गया तो ए० एन० टी० नाम के हवाई जहाजों के नाम बदल दिये गए जो कि उस डिज़ाइनर के नाम पर बने थे। हमारे एक साथी कैदी ने अपनी

गिरफ्तारी से कुछ पहले अपने चार साथियों के साथ पदार्थ-विज्ञान-विषयक एक कार्य पूरा किया था और विज्ञान-अकादमी के सम्मुख एक सम्मेलन में अपने कार्य पर एक व्याख्यान भी दिया था। रूसी और अंग्रेजी भाषा की दो वैज्ञानिक पत्रिकाओं में यह विवरण अक्षरशः प्रकाशित हुआ, किन्तु नाम केवल उन दो व्यक्तियों के ही दिये गए जो कि गिरफ्तार नहीं हुए थे।

सोवियत विकास के इस क्रम में स्तालिन के व्यक्तित्व की प्रशंसा आरम्भ हुई। विरक्षियों की हार के बाद से स्तालिन की महत्ता में तो कोई सन्देह ही नहीं था किन्तु अभी तक जनरल सेक्रेटरी की विनम्रता और प्रसिद्धि के प्रकाश से दूर रहकर केवल पार्टी की सामूहिक इच्छा का पालन करने की झूठ को ही कायम रखा गया था।

अब समाचार-पत्रों, प्रोपेगेण्डा और सार्वजनिक घोषणाओं में स्तालिन का नाम अधिकाधिक प्रमुखता प्राप्त करने लगा। स्तालिन की मूर्ति और चित्रों का रखना अनिवार्य बन गया—न केवल कारखानों और सार्वजनिक कार्यालयों में ही बल्कि उस प्रत्येक सोवियत नागरिक के घर में भी जो कि अपने-आपको स्वामि-भक्त दिखाना जरूरी समझता था। स्तालिन के मुँह से निकला हुआ प्रत्येक शब्द एक धार्मिक महत्ता प्राप्त करने लगा और उसको बार-बार उद्धृत किया जाने लगा। शायद ही कोई ऐसा विषय हो जिसमें स्तालिन की विशेष रुचि और उस विषय के विकास में स्तालिन की देन का उल्लेख किये बिना कोई भी पुस्तक या लेख का लिखा जाना सम्भव था। किन्तु सोवियत यूनियन में किसी एक व्यक्ति के नेतृत्व के सिद्धान्त को स्वीकार नहीं किया जाता। स्तालिन का प्रमुख स्थान तो उसके अद्वितीय व्यक्तित्व के कारण बताया जाता है और इस प्रकार सोवियत जनतन्त्रवाद और पार्टी की सामूहिक शक्ति की झूठ को सख्ती के साथ कायम रखा गया है।

'जनतन्त्रवाद' शब्द को ही पुराने धनिक-वर्ग के सिद्धान्तों की उपज बनाकर निन्दित करार किया जाता था किन्तु अब सोवियत ढंग का जनतन्त्रवाद सरकारी तौर पर सोवियत संविधान का मूलभूत सिद्धान्त घोषित किया गया है।

जनतन्त्रवाद की तरफ जाहिरा तौर पर इस झुकाव के दो कारण हैं। प्रथम, विदेशियों की नजरों में सोवियत यूनियन और फासिस्ट तानाशाही के बीच एक स्पष्ट रेखा खींचना आवश्यक समझा गया। किन्तु सोवियत जन-तन्त्रवाद पर जो जोर दिया जाता है उसके लिए यह पर्याप्त कारण नहीं। हमारी राय में सोवियत यूनियन में जनतन्त्रवाद की माँग की प्रबलता का कारण सच्चे जनतन्त्रवाद न कि दिखावे के जनतन्त्रवाद की माँग है। तानाशाही से देश ऊब चुका और जैसे-जैसे राज्य की सर्वव्यापक शक्ति उत्तरोत्तर कठोर और प्रत्यक्ष बनती जा रही है वैसे ही वास्तविक जनवादी नियन्त्रण के लिए जनता की इच्छा भी प्रबल होती जा रही है। जनता अपने-आपको जनतन्त्रवाद के लिए पूर्ण रूप से तैयार समझती है और जनता की यह भावना इतनी प्रबल है कि इस दिशा में कुछ-न-कुछ करने के लिए सरकार बाध्य है। यदि जनता को जनतन्त्रवाद का सार नहीं दिया जा सकता तो कम-से कम उसे जनतन्त्रवाद की छाया देना तो आवश्यक हो गया।

एक ओर तानाशाही के तरीकों को सख्ती से काम में लाना और दूसरी ओर झूठे जनवादी तरीकों को लागू करने के उल्लेखनीय परिणाम हुए हैं। समस्त मतदान, कारखानों की समितियों और पार्टी एककों-जैसे छोटे-से-छोटे एककों में गुप्त मतदान होते थे, किन्तु इन मतदानों का फल वस्तुतः एकमत और नेताओं की इच्छाओं के अनुसार ही होता था। यदि कोई व्यक्ति नेताओं की इच्छा के विरुद्ध वोट देने का साहस करता तो एन० के० वी० डी० द्वारा उसके पकड़े जाने के कई तरीके थे और किसी-न-किसी तरह उसे अपने 'विरोधी' रुख के लिए प्रायश्चित्त करने के लिए बाध्य होना पड़ता था। उसके पकड़े जाने का एक तरीका शायद उसके द्वारा नासमझी में कही गई बातें भी थीं। जनवादी प्रक्रियाओं का आभास देने के लिए कुछ लोगों को पहले से ही जरूरी हिदायतें देकर अक्सर कुछ विपक्षी वोट भी प्राप्त कर लिए जाते थे।

इस बात का सदा प्रबन्ध रखा जाता था कि कोई भी व्यक्ति या समूह, चाहे वह कितना ही नगण्य क्यों न हो, पार्टी-एकक के सेक्रेटरी की अधिकृत

अनुमति प्राप्त किये बिना किसी भी प्रकार का अपनापन प्रदर्शित न कर सके। सब प्रकार का 'सामूहिक प्रतिनिधित्व', जब तक कि पार्टी की ओर से ही आरम्भ न हुआ हो, निषेध था और 'सोवियत-विरोधी कार्य' समझा जाता था। सोवियत 'जनतन्त्रवाद' का सबसे अधिक उल्लेखनीय गुण, जिसका विदेशों में इतना प्रचार किया जाता है, व्यक्ति द्वारा अपने तरीके से काम करने की शक्ति पर सरकारी एकाधिकार है।

यह शुद्धीकरण जिस समय अपने चरम शिखर पर पहुँचा हुआ था उसी समय सर्वोच्च सोवियत के लिए चुनाव हुए। निर्वाचित सदस्यों की बैठक होने तक पार्टी की प्रकाशित सूचियों में दिये गए अधिकांश उम्मीदवार गिरफ़्तार हो चुके थे। कई तो मतदान आरम्भ होने से पूर्व ही गिरफ़्तार हो चुके थे। जैसे-जैसे इस नये जनतन्त्रवाद के चरित्र का बनावटीपन स्पष्ट होने लगा, वैसे ही जनता की इसमें दिलचस्पी कम होने लगी। एक पद के लिए केवल एक ही उम्मीदवार का सूचियों के साथ निर्वाचन केवल एक राजनीतिक प्रदर्शन बनकर रह गया।

गिरफ़्तारियों की संख्या १९३७ से १९३८ के अन्त तक लगातार बढ़ती रही। कई कार्यालयों में यह संख्या सौ प्रतिशत से भी अधिक बढ़ गई। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि किसी पदाधिकारी के बाद उसका उत्तराधिकारी भी गिरफ़्तार कर लिया गया। किसी एक कार्यालय के तीन मैनेजरों का एक के बाद एक गिरफ़्तार किया जाना कोई असाधारण बात न थी। कियेव विज्ञान-अकादमी के तेरह मन्त्रीगण, जो कि १९३१ और १९३८ के बीच एक के बाद एक नियुक्त किये गए थे, सब ही गिरफ्तार कर लिये गए। इस काल में नियुक्त कियेव-विश्वविद्यालय के सात प्रिंसिपलों में से छः गिरफ्तार किये गए और एक अपनी मौत से मर गया।

शहरों में गिरफ्तार किये जाने वाले और विशेषतः बुद्धिजीवी-वर्ग के लोगों पर ज़्यादातर जासूसगिरी का जुर्म लगाया जाता था। 'प्रोरावोतका'-सम्बन्धी सभाओं में—मज़दूरों की उन सभाओं में जिनमें उपस्थिति अनिवार्य थी, यह बात स्पष्ट की जाती। इन सभाओं की कार्यवाहियों में और जाँच

पड़ताल-सम्बन्धी सभाओं की कार्यवाहियों में, जिनका हम जिक्र कर चुके हैं, कुछ फर्क था। 'प्रोराबोतका'-सभाओं में वक्तागण खतरनाक जासूसों और तोड़-फोड़ करने वाले लोगों को फुरती के साथ नाकामयाब बनाने के लिए एन० के० वी० डी० का शुक्रिया अदा करते और उन लोगों को सख्त सजा दिये जाने की माँग भी पेश करते। गिरफ्तार लोगों के व्यक्तिगत जीवनों की घटनाओं को ऐसे बयान किया जाता कि वे जनता के शत्रु नजर आने लगते। अपने अधिक-से-अधिक उन साथियों पर दोषारोपण करना भी जरूरी समझा जाता था जो तब तक गिरफ्तार न हुए थे। इस बात ने सबसे अधिक स्वामि-भक्त नागरिकों में भी विद्रोह पैदा कर दिया। इन सभाओं में प्रत्येक प्रमुख कार्यकर्त्ता को बोलना पड़ता था और उस प्रत्येक कथन को शक की निगाह से देखा जाता था जो गिरफ्तार लोगों के अपराध पर सन्देह प्रकट करता था।

इतना सब होते हुए भी इन अभियोगों पर सामान्यतः विश्वास नहीं किया जाता था। किन्तु देशभक्त नागरिकों का विश्वास था कि इन गिर-फ्तारियों के पीछे जरूर कुछ है—असावधानी से पर बुरी नीयत से न कही हुई कोई बात, किसी सचमुच दोषी व्यक्ति से पुराना सम्बन्ध या जान-पह-चान। इन गिरफ्तारियों और अपराध-स्वीकृतियों की बारीकियों के बारे में—जिनकी हम आगे चलकर विवेचना करेंगे—औसत रूसियों की उतनी ही जानकारी थी जितनी कि विदेशियों की। 'दिखावे' के बड़े-बड़े मुकदमों में की गई अपराध स्वीकृतियों पर विदेशियों को जितना विश्वास था सोवियत यूनियन में उतना ही या उससे भी कम विश्वास किया जाता था। वे औसत सोवियत नागरिक के लिए उतनी ही पेचीदी थीं जितनी कि गैर-सोवियत नागरिक के लिए।

अन्त में सोवियत यूनियन में कोई भी ऐसा व्यक्ति न रहा जिसका कम-से-कम एक रिश्तेदार या निकट मित्र जेल में न हो

शुद्धीकरण का फल क्रमशः प्रकट होने लगा और देश के आर्थिक जीवन और उसकी सामरिक स्थिति पर भी प्रभाव पड़ने लगा। देश के

प्राय: प्रत्येक कारखाने और रेलवे-स्टेशन, प्रत्येक स्कूल अथवा शिक्षा-संस्था के मुखियाओं को हटाया जा चुका था। यही बात असंख्य सामूहिक फारमों प्राय: समस्त सरकारी कार्यालयों और सारे सैनिक ढाँचे के लिए लागू होती थी। देश के प्राय: प्रत्येक मुख्य पद पर बहुत से अनुभवहीन उत्तराधिकारियों को बैठाया और हटाया गया। कार्य-कौशल का उल्लेखनीय पतन हो गया। मज़दूरों की लगातार सभाओं और गिरफ्तार किये जाने के हर वक्त मौजूद डर ने, अपने-आप काम करने की शक्ति और अनुशासन को भंग कर दिया और इसलिए काम चालू रखने के लिए सख्ती बरतना ज़रूरी हो गया। उस दिन से आज तक सोवियत यूनियन में काम से एक दिन की भी अनुचित गैर-हाज़िरी का मतलब एक साल की सज़ा है। तीन बार काम पर पन्द्रह मिनट देर से पहुँचने का मतलब है नौकरी से बरखास्त हो जाना या बहुत हुआ तो नीचे पद पर काम करना।

येज़ोव शुद्धीकरण-जैसे प्रत्येक आन्दोलन की कुछ स्वाभाविक सीमाएँ होती हैं। १९३८ के अन्त तक सोवियत यूनियन एक ऐसी स्थिति पर पहुँच चुका था कि जब प्राय: प्रत्येक नर-नारी के विरुद्ध दोष और अभियोग इकट्ठे हो चुके थे। दोषारोपण की लहर अपनी चरम सीमा तक पहुँच चुकी थी। जापान के साथ युद्ध की आशंका ने इस लहर को एक बार और ऊँचा उठाया जिसके परिणामस्वरूप पुन: बेशुमार गिरफ्तारियों और सख्त सज़ाओं का दौर चला। लेकिन इसके बाद जल्दी ही बाढ़ का ज़ोर कम हो गया। गिरफ्तारियों की संख्या धीरे-धीरे कम होने लगी और जनता पर पड़ा हुआ भय का परदा धीरे-धीरे हटने लगा। सरकार ने ज़रूर ही समझ लिया होगा कि पुराने रास्ते पर लगातार चलते रहने से पूरी दुर्गति हुए बिना नहीं बचा जा सकता। १९३९ के आरम्भ में येझोव राजनीतिक रंगमंच से उसी तरह अचानक ग़ायब हो गया जिस तरह कि वह आया था। उसकी जगह बेरिया ने ले ली जो कि स्तालिन का एक निकटतम साथी और स्तालिन की तरह ही जॉर्जिया-निवासी है। लोगों को विश्वास हो गया कि एक नया युग आरम्भ हुआ है। हज़ारों की तादाद में कैदियों को रिहा किया गया और

बहुतों को उनके पुराने पदों पर और कई को तो पहले से भी ऊँचे पदों पर नियुक्त किया गया। रिहा किये हुए लोगों की संख्या का अनुमान लगाना कठिन है। शिक्षित वर्ग के बन्दियों में, जिनका हम ज्यादा ठीक अनुमान लगा सकते हैं, दस से पचास प्रतिशत व्यक्तियों को रिहा किया गया, जिनमें से अधिकांशत: वे लोग हैं जिन्हें अभी तक सजा नहीं दी गई है।

एन० के० वी० डी० द्वारा की गई पूछताछ के तरीकों की बुराइयों के बारे में अखबारों में पहली बार चर्चा होने लगी। इसका दोष एन० के० वी० डी० के अन्दर काम करने वाले तथाकथित षड्यन्त्रकारियों, क्रान्ति-विरोधियों और फासिस्टों को दिया जाने लगा। नतीजा यह हुआ कि कई जगह मजिस्ट्रेटों पर खुले आम मुकदमे चलाये गए, जिनमें शहादतें पेश की गईं कि किस तरह जबरदस्ती से लोगों से झूठे अपराध स्वीकार कराये गए। उन लोगों पर भी मुकदमा चलाया गया जिन्होंने सरकार के कहने पर अपने साथियों की निन्दा करने और उन पर अभियोग लगाने की जनता से खुल्लमखुल्ला मांग की थी।

एन० के० वी० डी० के शासन और उसके कर्मचारियों में परिवर्तन केवल उसकी व्यवस्था का धीमा पड़ना है। उसके ढांचे और उसके कार्य में कोई मौलिक परिवर्तन नहीं हुआ है। बहुत से उन अधिकारियों को, विशेषत: पार्टी-क्षेत्रों के अधिकारियों को, जिन्हें रिहा करने के बाद उनके पूर्व पदों पर नियुक्त किया गया था, युद्ध छिड़ने के बाद उन्हें फिर गिरफ्तार करके हमेशा के लिए ग़ायब कर दिया गया, हालांकि इस बीच उनकी जांच-पड़ताल करने वाले मजिस्ट्रेटों को भी गिरफ्तार कर लिया गया। इसका एक उदाहरण हम बाद में देंगे।

: ३ :

पूछताछ

जब कोई आदमी गिरफ्तार होता था तो बाहरी दुनिया से उसको बिलकुल अलग कर दिया जाता था; एन० के० वी० डी० से सम्बन्धित प्रत्येक बात अन्धकार और रहस्य में छिपी रहती। जिन्होंने पुनः स्वतन्त्रता प्राप्त की थी वे बन्दीगृह के अपने अनुभवों के बारे में, यहाँ तक कि अपने घनिष्ठतम मित्रों तक से कुछ न कहते थे, क्योंकि कुछ न कहने के लिए एन० के० वी० डी० ने उन्हें चेतावनी दे रखी थी। किन्तु येझोव-काल के आरम्भ में जनता में अफ़वाहें फैल गईं थीं कि 'प्रोरावोतका' सभाओं में उद्धरित और दिखावे के मुकदमों में पेश की जानेवाली अपराध-स्वीकृतियां बुरे व्यवहार, मारपीट और धमकियों के जोर पर हासिल की गई थीं। एन० के० वी० डी० के मकानातों और जेलों के आसपास की सब जगहों को विदेशियों और उन लोगों से खाली करवा लिया गया था जिनसे असली बातें छिपाने के खास कारण मौजूद थे। उन कोठरियों से हर रात चीखें उठती सुनाई देती थीं जिनमें कैदियों से पूछताछ की जाती थी।

रूसी जनतन्त्र की दांडिक विधि के ५८वें अनुच्छेद पर या किसी अन्य सोवियत जनतन्त्र की दाण्डिक विधि के समान अनुच्छेद पर अभियोग आधारित किए जाते थे। ५८वाँ अनुच्छेद ही समस्त संहिता में केवल एक-मात्र राजनीतिक अनुच्छेद है, जिसके लगभग चौदह अंश हैं, जिनमें से हम

केवल निम्न लिखित अंशों का ही उल्लेख करेंगे : १. (राजद्रोह); २. (सशस्त्र विद्रोह); ६. (जासूसगिरी); ७. (जान-बूझकर तोड़फोड़); ८. (आतंक); १०. (क्रान्ति-विरोधी प्रचार); ११. (क्रान्ति-विरोधी दल के साथ सहयोग) ।

गिरफ्तारी के बाद कुछ दिनों से लेकर एक वर्ष तक के समय में पहली पूछताछ होती थी। कायदे के मुताबिक यह पूछताछ दस दिनों के अन्दर ही होनी चाहिए थी। हर एक कैदी अपने परिचित साथी कैदियों से सावधानी के साथ अलग रखा जाता। कैदी की पैरवी करने वाले वकील से सलाह-मशवरा करने की बात कभी किसी ने न सुनी और ज्यादातर तो वकील रखने की इजाज़त ही न मिलती थी। जब कभी सलाहकार रखने की इजाज़त दे दी जाती तो वह सिर्फ दिखावे के लिए ही होती थी। अभियुक्त की गिरफ्तारी और उसका भविष्य निर्धारित करने में न्यायपालिका का कोई उल्लेखनीय हाथ न होता। गिरफ्तार किए जाने वालों की सूची अथवा गिरफ्तार किए जाने वालों के वारंट सरकारी न्यायवादी के समक्ष हस्ताक्षर के लिए पेश किए जाते। न्यायवादी को न गिरफ्तारी का कारण बताया जाता और न यह कि अपराध किस प्रकार का है। हमें उन बहुत से सरकारी न्यायवादियों से यह बात मालूम हुई है जो कि बाद में खुद गिरफ्तार होकर हमारी कोठरी में बन्द होने आये थे।

अभियोग सदैव गुप्त होता था और यदि मामला कचहरी में पेश होना होता तो मुकदमे की तारीख से कुछ दिन पहले पूछताछ की कोठरी में सरकारी तौर पर देखने के लिए अभियोग-पत्र पेश किया जाता। अगर जल्दी ही अपराध मान लिया जाता तो पूछताछ कुछ दिनों में ही खतम हो जाती, नहीं तो हफ्तों या महीनों और अक्सर रुक-रुककर एक वर्ष तक चलती रहती। अभियुक्त द्वारा अपराध स्वीकार किए बिना कभी पूछताछ ख़तम नहीं हो सकती थी। यह एक ऐसा नियम था जिसका प्रायः कभी अपवाद नहीं हुआ। अतः पूछताछ का एकमात्र उद्देश्य अपराध स्वीकार कराना था।

बहुत ही कम मामले ऐसे थे जिनमें वास्तविक घटनाओं को लेकर गिरफ्तारियां की जाती थीं, जैसे कि कारखाने या रेलवे की दुर्घटनाएँ, गोदाम या यातायात में सामान की बरबादी, अथवा असावधानी से कही हुई कोई बात या अपनी निजी राय की अभिव्यक्ति। एक विचित्र उदाहरण उस नौजवान किसान का है जिसने एक सामूहिक फ़ार्म की दावत में शराब पीकर एक दूसरे किसान पर ईर्ष्यावश एक कुल्हाड़ी फेंक मारी और निशाना चूक-कर वह कुल्हाड़ी स्तालिन के चित्र पर जा लगी। उस आदमी को गिरफ्तार कर लिया गया और आतंकवादी कार्यवाही का अभियोग लगाकर उसे आठ वर्ष के लिए बलात्-श्रम की सजा दी गई। ऐसे मामलों में पूछताछ का उद्देश्य इस प्रकार अपराध स्वीकार करवाना होता है ताकि वह अपराध जान-बूझकर की गई राजनीतिक कार्यवाहियों का परिणाम साबित हो सके।

किन्तु अधिकांश मामलों का वास्तव में ऐसा कोई आधार नहीं होता था। हरेक मामले में दरअसल नासमझी के साथ कही हुई बातों की एन० के० वी० डी० के पास बेशुमार रिपोर्टें होती थीं और इनमें से कुछ बातें जरूर ऐसी होती होंगी जिन्हें व्यापक अर्थों में 'जासूसगिरी' या 'क्रान्ति-विरोधी प्रचार' करार किया जा सकता था। यदि अभियुक्त इन बातों को लेकर ही अपना अपराध स्वीकार करता तो जाँच करने वाला मजिस्ट्रेट यह कहकर कि वह इस बारे में सब-कुछ जानता है अभियुक्त के कथन को बिलकुल भी महत्त्व प्रदान नहीं करता; हरएक ही इस प्रकार की बातें कहता था और इस तरह की अपराध-स्वीकृति 'मंजूर नहीं' की जाती थी।

अधिकांश मामलों में गिरफ्तारी का एक सबसे बड़ा कारण तथाकथित 'बाहरी गुण' होता था। किसी व्यक्ति की सामाजिक उत्पत्ति, उसका विगत या वर्तमान कार्य, किसी एक व्यक्ति के साथ उसका सम्बन्ध या मैत्री, अक्सर कई बार किसी अधिकृत सोवियत-संस्था में उसकी सदस्यता अथवा उसका कार्य, उसकी जाति या किसी विदेशी राष्ट्र से उसका सम्बन्ध उसका 'बाहरी गुण' माना जाता था। जेल की कोठरी में पहुँचते ही उसके साथी उसके बाहरी गुण को तुरन्त पहचान लेते थे, लेकिन जाँच करने वाला मजिस्ट्रेट

इसे उसकी गिरफ्तारी का असली कारण कभी नहीं समझता था।

पूछताछ का तरीका यह होता था, जिसे एन० के० वी० डी० के अधिकारीगण गर्व के साथ येझोव का तरीका कहते थे, कि गिरफ्तार व्यक्ति का प्राथमिक कार्य बहुत-कुछ अपनी कल्पना-शक्ति द्वारा स्वतः अपने खिलाफ मामला तैयार कर लेता था। हरेक गिरफ्तार को न सिर्फ अपना 'किस्सा' खुद गढ़ना पड़ता था, बल्कि उस किस्से को वास्तविक घटनाओं से सम्बन्धित कर या तोड़-मरोड़कर ऐसा बनाना पड़ता था कि उसकी हरेक बात पर विश्वास किया जा सके।

इस बात का विचित्र परिणाम यह होता कि अभियुक्त जाँच करने वाले मजिस्ट्रेट को यह विश्वास दिलाने की भरसक कोशिश करता कि उसकी मन-गढ़ंत कहानी बिलकुल सच्ची है और उसने अत्यन्त गम्भीर राजनीतिक अपराध किए हैं, ताकि उन कहानियों को असम्भव या महत्त्वहीन समझकर रद्द न कर दिया जाय। उन कहानियों को रद्द करने का मतलब यह होता कि पूछताछ तब तक जारी रहती जब तक कि एक ऐसी नई कहानी नहीं गढ़ी जाती जिसके द्वारा पर्याप्त रूप से गम्भीर राजनीतिक अपराध साबित न हो जाता। व्यक्ति से जिस बात की आशा की जाती थी वह अपराध-स्वीकृति की अपेक्षा उसके व्यक्तित्व, उसकी सामाजिक स्थिति, शिक्षा, पार्टी-सदस्यता आदि पर अधिक निर्भर करती थी। उदाहरण के लिए अधिकांश किसानों और काम न सीखे हुए मजदूरों ने यह साधारण अपराध स्वीकार करके छुट्टी पा ली कि क्रान्ति-विरोधी प्रचार के लिए उन्होंने अमुक खाद्यों या पेट्रोल की कमी बताना या यह कहना शुरू किया था कि सोवियत कारखानों में बने हुए जूते अच्छे नहीं होते, या इसी तरह की और कोई बात कही थी। यह अपराध-स्वीकृति ५८वें अनुच्छेद के अन्तर्गत तीन से सात वर्ष तक के लिए बलात्-श्रम की सजा देने के लिए काफी थी।

इन मनगढ़ंत कहानियों में बहुधा सृजनात्मक कल्पना के कारण पारस्परिक अन्तर हो जाता था। शिक्षा-सम्बन्धी वस्तुओं का निर्माण करने वाले कारखाने में काम करने वाले एक मजदूर ने, जहाँ कि ब्लैकबोर्ड और ग्लोब

आदि बनाए जाते थे, बताया कि वह एक ऐसे संगठन का सदस्य था जिसका उद्देश्य कृत्रिम ज्वालामुखियों द्वारा समस्त सोवियत यूनियन को उड़ा डालना था। जासूसगिरी के भी कई उल्लेखनीय दृष्टान्त थे। एक ग्रीक डॉक्टर ने सालोनाइका-स्थित अपने सम्बन्धियों को पत्र लिखते हुए कुछ उन छोटी मछलियों के नाम बता दिए जिन्हें रूस में मलेरिया के मच्छरों को मारने के लिए पाला जा रहा था। एक अन्य अभियुक्त ने मौसम-सम्बन्धी भविष्यवाणी की नकल करके पोलिश राजदूत को लिख भेजी, जो कि सदा सार्वजनिक उद्यान में लगी रहती थी। कियेव विश्वविद्यालय के प्रोफेसर बाइलिन ने आत्म-विवेचना के दौरान में बताया कि एक पाठ्य-पुस्तक में उन्होंने अनजाने में नीपर नदी की जगह-जगह की गहराइयों को लिख दिया, जिसके फलस्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और उन्होंने स्वीकार किया कि उनका उद्देश्य जासूसगिरी था अर्थात् युद्ध होने पर जर्मन-सेना को मदद पहुँचाना। एक दूसरे प्रोफेसर ने, जो कि जर्मनी से आया हुआ एक यहूदी शरणार्थी था, भ्रमण करते हुए जर्मन-एजेण्टों को सूचित कर दिया कि ऑब नदी में कितनी दूर तक जंगी क्रूज़र जा सकते हैं; एक तीसरे प्रोफेसर ने अप्रत्यक्ष रूप से जापानी राजदूत को यहूदी बालकों के राजनीतिक रुख के बारे में खबर पहुँचा दी।

लेकिन ज़्यादातर मामलों में भरसक कोशिश करने के बाद भी अभियुक्त की कल्पना उपयुक्त कहानी नहीं गढ़ पाती थी। कई बार जाँच करने वाला मजिस्ट्रेट भी कहानी गढ़ने में मदद करता और अभियुक्त की कोठरी में रहने वाले साथी बन्दियों से तो हमेशा ही मदद ली जाती थी; सब लोग एक साथ इकट्ठे होकर एक ऐसी कहानी गढ़ने बैठते जिस पर विश्वास किया जा सके। कुछ लोग पूरी तरह आत्म-सम्मान खो बैठे थे और खाने-पीने की चीजें या सिगरेटों के रूप में छोटी-सी सौगात पाकर सलाह देने के लिए तैयार रहते थे। हमें कुछ लोग ऐसे भी मिले जो केवल दयावश कैदियों की बात सुनते और ऐसी कहानियाँ गढ़ने में उनकी मदद करते ताकि दूसरों पर कम-से-कम दोषारोपण हो। एक ऐसे ही दोस्त ने हमें सलाह दी

थी कि "ज़्यादा-से ज़्यादा झूठ और कम-से-कम सच" काम में लाना चाहिए और आज तक हम उसके आभारी हैं।

हरेक व्यक्ति को कम-से-कम उस एक आदमी को पकड़वाना पड़ता था जिसने उसे 'भरती' किया था, अर्थात् जिसने उसे क्रान्ति-विरोधी कार्यवाहियों में लगाया था और उसका पथ-प्रदर्शन किया था। हरेक से यह भी आशा की जाती थी कि वह उन ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को पकड़वाए जिनको उसने खुद 'भर्ती' किया था और जिन्हें राजनीतिक अपराधों को करने के लिए उसने उकसाया था, या जो उसके साथ किसी एक ही क्रान्ति-विरोधी दल में काम करते थे। पूछताछ के दौरान में घण्टे-घण्टे पर और दिन-प्रतिदिन कैदी से पूछा जाता, "तुम्हें किसने भरती किया ?" और "तुमने किसे भर्ती किया ?"

इन प्रश्नों का उत्तर देने का अर्थ था दूसरों पर दोष थोपना और शुद्धात्मा व्यक्ति के लिए यह एक भयंकर नैतिक समस्या बन जाती। सबसे अच्छा तरीका उन लोगों के नाम लेना था जो मर चुके थे या सोवियत-यूनियन से हमेशा के लिए बाहर जा चुके थे। हमें एक ऐसा आर्मिनियन पादरी मिला जिसकी स्मरण-शक्ति बहुत तीव्र थी और जिसने स्वीकार किया कि गत तीन वर्षों में दफनाये हुए प्रत्येक आर्मिनियन को उसने भर्ती किया था। जिस कोठरी में कैदी को बन्द किया जाता था अक्सर उसमें मरे हुए लोगों की एक सूची होती थी जिसका वह लाभ उठा सकता था। कोठरी में रहने वाले जल्दी-जल्दी बदले जाते थे और नामों की सूचियाँ मुँह-ज़बानी एक से दूसरे के पास पहुँचाई जाती थी और यह जानकारी बहुतों को बचा देती थी। गिरफ्तार और सजा पाये हुए लोगों के नाम लेना एक अरुचिकर आवश्यकता थी, किन्तु सम्पूर्णतः निन्दनीय न थी। जाँच करने वाला मजिस्ट्रेट दूसरे कैदियों के लिखित वक्तव्यों को दिखा देता था और तब उन बातों को सिर्फ स्वीकार करना ही रह जाता था। कई बार दो कैदियों को एक-दूसरे के सामने खड़ा कर दिया जाता और उनका परिचित कैदी जाँच करने वाले मजिस्ट्रेट के सामने उनके मुँह पर कहता कि उन्होंने दरअसल

किसी निर्दोष वार्तालाप के दौरान में उसे या उसने उनको किसी गम्भीर राजनीतिक अपराध करने के लिए तैयार किया था। कैदियों के अपने बनाये हुए सख्त नैतिक नियमों के अनुसार इस प्रकार का बयान विशेषतः निन्दनीय नहीं समझा जाता था।

कई लोग ऐसे थे जिन्हें दूसरों पर दोषारोपण करने में कतई संकोच नहीं होता था। वे सैकड़ों लोगों की चुगलियाँ खाते और इसे एक खेल समझते थे या इस तरह की सारी पूछताछ को वे एक मज़ाक में बदल देते थे। उदाहरण के लिए, एक डिवीज़नल कमाण्डर ने घोषित किया कि उसने अपनी पलटन के प्रत्येक अफ़सर को यहाँ तक कि कम्पनी कमाण्डर तक को 'भरती' किया था।

लेकिन इस तरह की बढ़ा-चढ़ाकर बातें कहे बिना भी क्रान्ति-विरोधी व्यक्तियों की सूची पहाड़ की तरह अनिवार्यतः बढ़ने लगी। एन० के० वी० डी० की सूचियों में आखिर सोवियत यूनियन की समूची आबादी का प्रायः प्रत्येक वयस्क व्यक्ति शामिल हो गया; यह स्थिति शायद १९३८ के मध्य तक पहुँच चुकी थी और ज़्यादा गिरफ्तारियों के लिए अब यह व्यवस्था निरर्थक और हास्यास्पद साबित होने लगी। लेकिन देश के प्रत्येक निवासी और विशेषतः महत्वपूर्ण पदाधिकारियों के खिलाफ 'प्रमाणों' का इकट्ठा करना केवल अंकगणित का एक हिसाब नहीं था, बल्कि एन० के० वी० डी० की सोच-समझकर काम में लाई गई एक नीति थी जिसके द्वारा किसी भी समय किसी भी सोवियत नागरिक को गिरफ्तार करने का एक बहाना मिल गया।

हरेक उच्च पदाधिकारी को क्रान्ति-विरोधी, जासूस और देशद्रोही करार देने के लिए एन० के० वी० डी० के पास उसके नाम की एक मिसिल तैयार रहती थी। गृह-विभाग के जन-कमिस्सार के रूप में बेरिया की नियुक्ति और एन० के० वी० डी० के प्रमुख कर्मचारियों के एक साथ स्थानान्तरण के बाद भी हमें उन मामलों के बारे में मालूम है जिनमें कैदियों से साफ़ तौर पर ऐसे बयान माँगे गए और उन्होंने दिये कि जिनके द्वारा प्रमुख

वैज्ञानिकों और विद्वानों पर विदेशी जासूसों के साथ काम करने का अभियोग लगाया गया जब कि उसी समय दूसरी ओर उन्हें स्तालिन-पदक और अन्य ऊँचे इनाम दिए जा रहे थे। इन लोगों को गिरफ्तार नहीं किया गया। इनमें से यहाँ उस एक व्यक्ति का उल्लेख किया जा सकता है जिसकी मृत्यु हो चुकी है। अपनी मृत्यु के समय वह यूक्रानियन विज्ञान अकादमी का अध्यक्ष था। वह प्रसिद्ध शरीर-विज्ञानवेत्ता प्रोफेसर बोगोमोलेट्स था, जिसके जीवन की वृद्धि-सम्बन्धी अनुसन्धान-कार्य का गैर-सोवियत समाचार-पत्रों में अक्सर उल्लेख हुआ करता था। अन्य गिरफ्तार वैज्ञानिकों से कम-से-कम दस ऐसे बयान लिये गए जिनमें उसे फासिस्ट और जासूस बताया गया था।

अपराध स्वीकार कराने और दोषारोपण करने वाले वक्तव्यों को प्राप्त करने के लिए एन० के० वी० डी० ने एक विस्तृत प्रविधि निकाली। अभियुक्त के विशिष्ट गुणों को देखते हुए, उसकी राजनीतिक महत्ता और उसके अभियोग का खयाल रखते हुए इस प्रविधि को प्रयुक्त किया जाता था। केन्द्रीय आदेशों पर, न कि व्यक्तिगत अफसरों की सूझ-बूझ पर यह तरीके बनाये गए थे और थोड़े-बहुत स्थानीय अन्तर के बाद इन्हें एक साथ सारे सोवियत यूनियन में काम में लाया गया। जब-कभी इन हिदायतों में तब-दीली की जाती तो उसका असर हर जगह पड़ता। उदाहरण के लिए बेरिया की नियुक्ति के बाद मारपीट करना पूरी तरह बन्द तो नहीं हुआ लेकिन बहुत कम कर दिया गया।

पहला कदम था तथाकथित 'समझाना-बुझाना।' जाँच करने वाला मजिस्ट्रेट आम तौर पर सजा से पूरी तरह छुटकारा दिलाने या कम-से-कम हल्की सजा देने का वायदा करके कैदी को अपने-आप अपना अपराध स्वीकार करने के लिए समझाता-बुझाता। मजिस्ट्रेट द्वारा समझाने-बुझाने की यह कोशिश बड़ी पैनी होती थी और मानव-प्रकृति तथा सोवियत नागरिक के मानसिक गठन के पूर्ण ज्ञान पर आधारित होती थी; और अभियुक्त के चरित्र के विशेषतः अनुरूप बनाकर उसे काम में लाया जाता था। कई बार तो इसी क्रम में अभियुक्त अपना अपराध स्वीकार कर लेता। कई प्रकार के

बुद्धिजीवी इस तरह के समझाने-बुझाने के बड़ी आसानी के साथ शिकार बन जाते, खास तौर पर क्योंकि यह क्रम बहुत दिनों तक चलता रहता था। समझाने-बुझाने के अलावा डाँट-फटकार और धमकियों से भी बहुत काम लिया जाता था; समझाने-बुझाने के क्रम के बाद ही आम तौर पर यह तरीके काम में लाए जाते थे। कैदी की जिद और हठ के लिए उसे गम्भीर परिणाम की धमकी दी जाती; सख्त सजा या गोली से मार डालने तक की सम्भावना उसके सामने रखी जाती।

अप्रत्यक्ष तरीके भी अक्सर काम में लाए जाते थे। उदाहरण के लिए जब पूछताछ के दौरान में अपराध स्वीकार कराने के लिए मजिस्ट्रेट 'शान्ति-पूर्ण' तरीके काम में ला रहा हो तो उसी समय पास के कमरे से किसी औरत की दर्दनाक चीख-चिल्लाहट सुनाई देती।

ज्यादातर कैदी के घर वालों से बदला लेने की धमकी दी जाती। उसकी पत्नी या माता-पिता की गिरफ्तारी की धमकी दी जाती और उससे कहा जाता कि उसके बाल-बच्चों का नाम बदल करके उन्हें किसी अनाथालय में रख दिया जायगा ताकि वे उसे फिर कभी न मिल सकेंगे। स्विट्जरलैंड की एक स्त्री ने, जो कि १९४५ के बाद स्विट्जरलैंड लौट पाई थी, हमारे सामने सबूत पेश किया कि इस प्रकार की धमकियाँ सचमुच काम में लाई गईं। उसने बताया कि उसकी रिहाई के बाद किसी एक ऐसे अनाथालय मे रखे हुए उसके बच्चों को ढूँढ़ निकालना असम्भव हो गया।

यह कहना पड़ेगा कि येझोव काल में जिन कैदियों के घर वालों से बदला नहीं लिया गया वे सचमुच अपवाद थे। अगर किसी कैदी का परिवार किसी मामूली से कुछ अच्छे मकान में रहता था तो उसे वहाँ से निश्चय ही तुरन्त निकाल बाहर किया जाता और वे लोग उस शहर में रहने का अपना अधिकार भी खो बैठते। बाहर निकाले जाने तक की कई विभिन्न श्रेणियाँ थीं जिनको अत्यन्त विधिपूर्वक नियमित किया गया था।

यह नहीं कहा जा सकता कि एन० के० वी० डी० ने कैदियों के बच्चों को अपने काबू में करने की विधिवत् कोशिश की। यह बात केवल कुछ उच्च

पदाधिकारियों के बच्चों के लिए लागू होती थी। ज्यादातर मामलों में रिश्तेदार और दयालु पड़ोसी बच्चों की देखभाल कर पाते थे और गिरफ्तारी करने वाले एन० के० वी० डी० के कर्मचारी भी बच्चों के रहने का इन्तजाम करने में अक्सर मदद देते थे।

अपराध स्वीकार कराने की प्रक्रिया का एक आवश्यक अंग था एक कोठरी से दूसरी कोठरी में कैदियों का स्थानान्तरण। जो कोई भी अपराध स्वीकार करने से हठपूर्वक इन्कार करता उसे खास तौर पर भरी हुई कोठरी में या उस कोठरी में रखा जाता जहाँ का वातावरण विशेषतः अप्रिय होता और कई बार ऐसी कोठरी में उसे पूछताछ की नौबत आए बिना कई महीनों तक रहना पड़ता। अक्सर केवल यह दिखाने के लिए कि अधिकारियों के पास दबाव के कितने तरीके हैं और उनका क्या प्रभाव पड़ता है कैदियों की कोठरियाँ बदली जातीं। उदाहरण के लिए किसी एक आदमी को उस कोठरी में रखा जाता जहाँ के दूसरे कैदियों से पूछताछ चल रही थी और इस दौरान में उन्हें सख्त मार पड़ चुकी थी; उसके सब साथी कैदियों पर दुर्व्यवहार के चिह्न मौजूद होते और फिर उसे थोड़े दिन बाद ऐसी कोठरी में भेज दिया जाता जहाँ के कैदी अपनी कहानियाँ गढ़कर अपना-अपना अपराध स्वीकार कर चुके थे। उसके साथियों में कुछ लोग ऐसे होते जिन्हें बाहर से खाने-पीने की चीजें और कपड़े आदि मँगाने की इजाजत मिल चुकी होती, या जिन्हें अपने परिवार के लोगों से मिलने और उनकी खबर पाने की दरअसल इजाजत मिल चुकी थी, या उन्हें यह बताया जा चुका था कि उनके परिवार वालों को रहने की जगह और काम दिलाने में एन० के० वी० डी० ने क्या किया है। अपराध-स्वीकृति के फलस्वरूप मिलने वाली सजा और बन्दी-कैम्पों की हालत को लेकर कैदियों में बहुत उत्साह दिखाई देता था। मिसाल के तौर पर, आपसे कहा जाता कि जिस सुदूरस्थित स्थान पर आपको निर्वासित किया जायगा वहाँ आप अपना निजी काम कर सकेंगे, कि बाद में आपका परिवार भी वहाँ आपके पास रह सकेगा, या कि शीघ्र ही एक आम रिहाई होने वाली है—अक्टूबर क्रान्ति के बीसवें

वार्दिकोस्त्र पर १९३७ के पतझड़ तक तो जरूर ही हो जाएगी।

एक सबसे अधिक प्रचलित और सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण तरीका था पूछताछ को जान-बूझकर देर तक चलाते रहकर कैदी को सोने न देना। अक्सर कई दिनों और रातों तक पूछताछ चलती रहती और पूछताछ करने वाले तीन-चार लोग एक के बाद एक करके अभियुक्त से बार-बार पूछते रहते कि उसे किसने और उसने किन-किन लोगों को 'भरती' किया है। साधारण पूछताछ अधिकांशतः रात को ही होती थी। वर्षों के अनुभव द्वारा एन० के० वी० डी० ने देर तक पूछताछ चलाए रखने की एक प्रविधि निकाल ली थी जिसका मुकाबला करने में प्रायः कोई भी सफल नहीं हो पाता था। सख्ती के कई दर्जे थे। कैदी को बैठने की इजाज़त दी जा सकती थी, या उसे खड़ा ही रखा जाता और कई बार तो अति कष्टकर स्थिति में खड़ा रखा जाता। लगातार नींद की जरूरत बने रहने का अत्यन्त विपाक्त प्रभाव होता है। नींद की आवश्यकता अन्य सब इन्द्रियजनित चेतनाओं से, यहाँ तक कि भूख और प्यास से भी ज्यादा जरूरी बन जाती है और अन्त में मानसिक एकाग्रता की सारी शक्ति जाती रहती है। यदि किसी आदमी को सोने न दिया जाय तो वह मतिभ्रम का शिकार हो जाता है; उसे अपने आसपास मक्खियाँ भिनभिनाती नजर आती हैं; वह अपने-आपको कीड़े-मकोड़े और चूहों से घिरा पाता है; उसकी आँखों के सामने धुआँ उठता रहता है और क्योंकि पूछताछ के आखिरी दिनों में उसे खड़ा रखा जाता है उसे अपने पैर मांस के फूले हुए बेशक्ल लोथड़े नजर आते हैं। इस तकलीफ़ को इतनी देर तक सह लेना भी कम तारीफ़ की बात न थी। हमें एक ऐसे कैदी के बारे में मालूम है जिससे ग्यारह दिन तक लगातार पूछताछ की जाती रही और आखिरी चार दिन तो उसे जबरदस्ती खड़ा रखा गया।

अभी तक उल्लिखित सब तरीकों को एन० के० वी० डी० की शब्दावली में 'सांस्कृतिक' कहा जाता है, अर्थात् पूछताछ के हिंसक तरीकों की अपेक्षा यह अधिक सम्मानित तरीके हैं।

एन० के० वी० डी० वाले हमेशा ही 'सांस्कृतिक' तरीकों को काम में लाने की तबालत नहीं उठाते। अक्सर मारपीट से ही पूछताछ शुरू होती थी। खास तौर पर सीधे-सादे लोगों या उन लोगों के साथ यह तरीका काम में लाया जाता है जिनके व्यवसाय या चरित्र ने उनमें तकलीफ़ सहने का ज़्यादा माद्दा पैदा कर दिया हो, जैसे कि सैनिकगण या स्वयं एन० के० वी० डी० के अधिकारी। हिंसक तरीकों में मारपीट का सबसे अधिक प्रयोग किया जाता था। साधारण मामलों में हाथ से ही मारा जाता, किन्तु अधिकांशतः अधिक सुविधाजनक चीजें काम में लाई जातीं, जैसे कि टूटी हुई कुरसी के पाये। यह सिर्फ़ मौके की बात न थी कि अधिक सुविधाज़नक अस्त्र जैसे कि कोड़े या रबड़ के डण्डे काम में नहीं लाए जाते थे। यह बात भी कि सिर्फ जांच करने वाला मजिस्ट्रेट या उसके सहकारी ही मारते थे (जेल के कर्मचारी कभी नहीं मारते थे) इस झूठ को कायम रखने की इच्छा की द्योतक थी कि मारपीट करना नियमित तरीकों में शामिल न था, सिर्फ व्यक्तिगत मजिस्ट्रेट की तबियत पर निर्भर था।

एन० के० वी० डी० के एक उच्च पदाधिकारी ने जो खुद गिरफ्तार हो चुका था, हमें बताया कि यद्यपि मारपीट से सारे सोवियत यूनियन में विधिवत् काम लिया जाता था, फिर भी मारपीट का प्रयोग करने के लिए लिखित आदेश कभी नहीं दिए जाते थे और न एन० के० वी० डी० के ट्रेनिंग स्कूलों में ही कभी इसका ज़िक्र किया जाता था। मुँहज़बानी दी जाने वाली हिदायतों में ही सिर्फ यह कहा जाता कि किसी-न-किसी तरह कैदियों से अपराध स्वीकार कराना होगा और मारपीट या हिंसा के अन्य रूप बरदाश्त किए जा सकते हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि हालाँकि कैदियों को अक्सर स्थायी चोट पहुँचती थी जैसे कि गुर्दों को, लेकिन खास तौर पर यह खयाल रखा जाता था कि कैदियों पर पूछताछ के प्रत्यक्ष स्थायी चिह्न न रह जायँ।

मारपीट के अलावा यन्त्रणा के अन्य तरीके भी रह-रहकर काम में लाए जाते थे। कैदी को बहुत ज्यादा नमकीन चीजें खिलाना और फिर उसे

प्यासा रहने देना, चमकीली रोशनियों का प्रयोग और अन्य कई समान तरीके इनमें शामिल थे।

अपराध स्वीकार कराने के लिए एन० के० वी० डी० द्वारा काम में लाए जाने वाले तरीकों को जानने से यह जानना कहीं ज्यादा जरूरी है कि आखिर जुर्म कबूलवाने के लिए वे इतनी तवालत क्यों उठाते थे। प्रत्यक्षतः एन० के० वी० डी० का लक्ष्य जनता की उन कई संदिग्ध श्रेणियों का उन्मूलन करना था जिनमें शासन के वास्तविक और सम्भावित विरोधियों के मिलने की आशंका थी।

उप-मानव या स्वभाव से हीन मनुष्य का सिद्धान्त सोवियत विचारधारा या सोवियत न्याय में कोई स्थान नहीं रखता। क्रान्ति के आरम्भिक काल में 'वर्ग शत्रु' का सिद्धान्त और सर्वहारा वर्ग में पैदा न होने वाले लोगों के साथ विभेद की नीति निश्चय ही इस बात की द्योतक थी कि मनुष्य-मनुष्य में अन्तर समझा जा रहा है, लेकिन कम्युनिस्टों ने किसी एक ऐसी श्रेणी की सदस्यता के कारण ही केवल किसी को खतम करने की इजाज़त कभी नहीं दी। क्रान्ति के आरम्भिक दिनों में भी, कुछ अपवादों के अतिरिक्त, कभी भी सामन्त-वर्ग या भूतपूर्व शासक-वर्ग के लोगों को केवल इसीलिए गोली का शिकार नहीं बनाया गया कि वे उन वर्गों के थे। उन पर क्रान्ति-विरोधी कार्यवाहियों का दोष लगाया जाता और यह सच है कि कई बार यह दोषारोपण अनुचित ही होता था। धनी किसानों की बरबादी ही केवल एक ऐसा उदाहरण है जिसमें व्यक्ति के प्रति न्याय बरतने का खयाल किए बिना ही समूचे वर्ग के खिलाफ़ कार्यवाही की गई थी। लेकिन यहाँ भी एक वर्ग को न कि उसके व्यक्तिगत सदस्यों को नष्ट किया गया; उन्हें तो अस्थायी बलात्-श्रम द्वारा योग्य सोवियत-नागरिक बनने की 'पुनः शिक्षा' दी गई।

इसके अलावा, येझोव काल में तो विभेद-नीति सरकारी तौर पर छोड़ दी गई; गम्भीरता के साथ घोषणा की गई कि पिता के लिए पुत्र उत्तरदायी नहीं है। स्तालिनवादी संविधान के कार्यान्वित होने के बाद ही सोवियत-

इतिहास का क्रान्तिकारी युग अधिकृत रूप से समाप्त हो गया, घोषणा की गई कि शासन-विरोधी वर्ग और जनता के ऐसे भाग अब नहीं रहे कि राज्य के बचे-खुचे विरोधी केवल आपराधिक व्यक्ति हैं।

यदि रूसी फ्रैंच-क्रान्ति के ढाँचे का या नात्सियों का अनुसरण करते और विपक्षी या खतरनाक समझे जाने वाली श्रेणियों का उन्मूलन करना तय कर लेते तो उन्हे संसार के सामने आसानी से पहचाने जाने वाले उन 'बाहरी गुणों' का प्रकाशन भी करना पड़ता जिनके कारण हमारे बहुत से साथी जेल की कोठरियों में मौजूद थे। इन 'बाहरी गुणों' में कुछ उन श्रेणियों की सदस्यता भी शामिल थी जिन्हें अधिकृत रूप से महानतम आदर प्राप्त था, जैसे कि समस्त उच्च पार्टी-अधिकारी, सब बड़े अफ़सर और लाल लड़ाके जिन्होंने क्रान्ति और गृह-युद्ध में प्रशंसनीय कार्य किया था।

सोवियत सरकार को अपने विपक्षियों को, अथवा तथाकथित विपक्षियों को व्यक्तिगत रूप में दण्ड देना था, हालांकि इनकी संख्या लाखों में थी। एन० के० वी० डी० को व्यक्तिगत अपराध का स्पष्ट प्रमाण चाहिए था—न केवल विदेशियों को दिखाने के लिए बल्कि सोवियत जनता के लिए भी, ताकि न्याय के प्रति उनकी सैद्धान्तिक भावना सन्तुष्ट हो सके। बड़े पैमाने पर गिरफ़्तारियाँ और तथ्यात्मक साक्षी की कमी का अर्थ था कि स्पष्ट प्रमाण सदा नहीं मिलता था। अतः सरकार को अपने कार्यकरण के तरीकों को न्यायोचित ठहराने के लिए अपराध-स्वीकृतियों और आत्माभियोगों की आवश्यकता थी।

अभियुक्तों द्वारा गढ़ी हुई कहानियों के झूठ को अच्छी तरह जानने वाले और कभी-कभी सनकीपन से उसे मान भी लेने वाले मजिस्ट्रेटों की संख्या कम न थी। इनमें से अधिकांश इन मनगढ़न्त कहानियों की सब बातें स्वीकार न करते हुए भी कम-से-कम दिखाने के लिए तो यह विश्वास करते थे कि इन कहानियों में सत्य का कुछ अंश अवश्य है और इस कारण उन्हें अपनी कार्यवाहियाँ अपनी दृष्टि में उचित दिखाई देती थीं।

किन्तु पूछताछ करने वाले प्रायः सारे अधिकारीगण येभ्जोव-काल में ही और कुछ बाद के महीनों मे बिलकुल गायब हो गए। इनकी जगह अपेक्षाकृत युवा अधिकारियों ने ले ली जो कि ज़्यादातर सीधे-सादे लोग होते थे और अभियुक्त के अपराध में कभी शंका नहीं करते थे। कुछ अपवाद भी थे जिन्हें 'अत्यधिक उत्साह' का परिणाम बताकर निन्दित किया गया।

: ४ :

बन्दी जीवन

पूछताछ के अलावा सोवियत यूनियन में बन्दी-जीवन अन्य देशों के बन्दी-जीवन से विशेष भिन्न न था, किन्तु शुद्धीकरण के सामूहिक चरित्र और देश के जीवन में उसके प्रमुख स्थान के कारण कुछ विशिष्टताएँ आ ही गई थीं।

एन० के० वी० डी० द्वारा बन्दीगृह प्रशासित होते थे, किन्तु पूछताछ करने वाले विभाग से यह भिन्न था। सजा पाये हुए कैदियों से पूछताछ किए जाने वाले कैदी अलग रखे जाते थे, ताकि पूछताछ किए जाने वाले कैदी सजा पाये हुए कैदियों के भाग्य के बारे में बहुत कम पता लगा पाते थे। यह जानकारी केवल उन कैदियों द्वारा ही हो पाती थी जिन्हें किसी-न-किसी कारणवश सजा पाये हुए कैदियों की जेलों और बलात्-श्रम कैम्पों से फिर पूछताछ के लिए वापस बुला लिया जाता था।

जेल में आने के बाद कैदियों का शारीरिक निरीक्षण बेहद बारीकी के साथ किया जाता था। सब कागज़ात और धातु की बनी चीज़ें जैसे कि पेटियों के बकसुए और जूतों के फीते तक जब्त कर लिए जाते और कपड़ों से धातु व सीव के बटन तक निकाल लिए जाते। कपड़ों की हरेक सीवन और शरीर के हरेक अंग की छिपी हुई चीज़ों के लिए तलाशी ली जाती। कम-से-कम एक पखवाड़े में एक बार शारीरिक निरीक्षण के साथ कैदियों की

कोठरियों की भी उतनी ही सावधानी के साथ तलाशी ली जाती थी।

सोवियत जेलों में एक आम अभ्यास ऐसा था जिसे कैदी ताने के साथ "स्तालिन द्वारा जीवित व्यक्ति की देखभाल" कहते थे। लोगों को आत्म-हत्या से रोकने के लिए बड़ी सावधानी रखी जाती थी। सीढ़ियों के नीचे जाल बिछे रहते थे ताकि कैदी ऊपर से कूदकर मर न सकें। कैदियों से कैदियों की हजामत बनवाई जाती थी। बन्दीगृह-प्रशासकों को व्यक्तियों अथवा समूहों की भूख-हड़ताल का बहुत भय लगता था और इन हड़तालों को रोकने या तोड़ने की हर तरह से पूरी कोशिश की जाती थी। जब-कभी कहीं कोई भूख-हड़ताल होती भी तो—हमारे अनुभव में केवल व्यक्तिगत हड़तालें ही आई थीं—और जब हड़ताल करने वाले की दुर्बलता घातक साबित होने लगती तो उसे जबरदस्ती खिलाया-पिलाया जाता। उन लोगों को जो सोवियत जेलों की दशा से अनभिज्ञ थे—और खास तौर पर जो फ़ासिस्ट जेलों से ही केवल परिचित थे—यह बात समझ में नहीं आती थी कि जो राज्य व्यक्तिगत जीवन को इतना नगण्य समझता है वह आत्महत्याओं को रोकने के लिए क्यों इतने प्रबल प्रयत्न करता है। इसका उत्तर यह है कि सोवियत सरकार एन० के० वी० डी० के उपयुक्त विभाग, जैसे कि पूछताछ और न्याय-सम्बन्धी विभाग द्वारा व्यक्ति के जीवन में दखल देना उचित समझती थी और अपने उद्देश्य-पूर्ति के लिए कुछ भी करने से नहीं रुकती थी, लेकिन दूसरी ओर वही सरकार बन्दीगृह-प्रशासकों को प्रत्येक बन्दी के जीवन के लिए उत्तरदायी ठहराती थी। यही इस विरोधाभास का कारण था कि एक ही कोठरी में एक ओर तो ऐसे कैदी थे जो पूछताछ के असर से बुरी तरह पीड़ित थे और जिनका कोई खयाल तक नहीं करता था और दूसरी ओर ऐसे थे जिन्हें सरदी, जुकाम और सिर-दर्द से बचाने के लिए हर तरह की दवाइयाँ लगातार दी जाती थीं।

सोवियत जेलों की एक और खासियत यह भी थी कि कैदियों को आपस में बातचीत करने का बहुत कम मौका दिया जाता था। एक कोठरी

में कई कैदी होते थे और उन्हें ज्यादातर एक कोठरी से दूसरी कोठरी में बदला जाता रहता था, लेकिन इस बात का खास ख़याल रखा जाता था कि एक कैदी किसी दूसरे ऐसे कैदी.से न मिल सके जिसे वह जानता हो या जिसका उसके मामले से कोई भी सम्बन्ध हो। एन० के० वी० डी० द्वारा प्रत्येक व्यक्ति के सामाजिक क्षेत्र की पूरी जानकारी के कारण ही यह सम्भव हो पाता था। किसी भी कैदी को अपनी कोठरी के अलावा अन्य किसी कोठरी के कैदियो से मिलने की इजाजत नही थी। कैदियो को वार्डनो की निगरानी में अपनी पीठ के पीछे हाथ करके दालानों से गुजरना पड़ता था।

येझोव-काल में अन्दरूनी जेलों के कैदियों के लिए दरवाजों को थपथपा-कर भी आपस में बात कर सकना असम्भव था। कैदियो ने ऐसा करने की कोशिश जरूर की लेकिन आप कैसे जानते कि भड़काने वाले किसी सरकारी पिट्ठू की यह करतूत नहीं है और इसलिए ऐसी थपथपाहट पर गौर न करना ही सबसे अच्छा था। सजा पाये हुए कैदियो को बड़ी जेलों मे थोड़ी-बहुत थपथपाहट जरूर चलती थी।

बाहरी दुनिया से समाचार और सूचनाएँ पाने का एकमात्र साधन नये गिरफ्तार हुए लोग थे। १९४० के आरम्भ मे बहुत से कैदियो को यह तक मालूम न हुआ कि युद्ध शुरू हो चुका है। दुबारा पूछताछ के लिए रोके हुए कैदियो को जेलो मे कभी-कभी जाँच करने वाले मजिस्ट्रेट की आज्ञा से कैदियो को कुछ पत्र पहुँच पाते थे।

जब कोई कैदी किसी दूसरी कोठरी में बदलकर भेजा जाता तो हरेक उससे फौरन पूछने लगता कि उसकी पहली कोठरी में कौन-कौन साथी थे। इस प्रकार कभी-कभी उनको दो-तीन आदमियों से होते हुए उन लोगों के बारे में कुछ खबर मिल जाती थी जिनमें उनकी दिलचस्पी थी। चूँकि मरद और औरत बन्दी आपस में कभी नहीं मिल पाते थे अतः उन्हे अपनी पत्नियों के बारे में कभी कुछ नहीं मालूम हो पाता था।

शहर में कैदियों को लाने-लेजाने के लिए सामान ढोने वाली जैसी गाड़ियाँ काम में लाई जाती थी और अक्सर उन पर 'रोटी' या 'गोश्त'

छिपा रहना था ताकि नगर-निवासियों को वे निर्दोष नजर आएँ। गाड़ियों के अन्दर कई विभाग होते थे जिनके अन्दर हवा आने-जाने के लिए सिर्फ छोटे-छोटे छेद होते थे और जगह इतनी कम होती थी कि मुश्किल से कोई आदमी बैठ या खड़ा हो पाता था। हरेक विभाग में हमेशा दो या तीन आदमी ठूँस दिए जाते थे। कैदियों की भाषा में इन गाड़ियों को 'काला कौवा' कहा जाता था। कई जेलों में पूछताछ किए जाने वाले या एक जेल से दूसरी जेल में भेजे जाने वाले कैदियों को जहाँ रखा जाता था उसे 'कुत्तों का घर' कहते थे। यह छोटे-छोटे दरबे होते थे जिनमें कैदियों को अक्सर घण्टों तक और कई बार आधे-आधे दिन तक रखा जाता था। इन दरबों में कैदियों को छोड़ देना और यह दिखाना कि अनजाने में ऐसा हुआ है कैदियों को 'नरम' बनाने का एक 'सांस्कृतिक' तरीका था।

येझोव के पूर्वाधिकारी यागोदा के शासन में कैदियों के साथ अधिकाधिक सख्त बरताव किया जाता था और यह इस सिद्धान्त पर आधारित था कि कैदी को अपनी सजा की सख्ती महसूस करानी जरूरी है। येझोव की नियुक्ति के बाद जेलों के कायदे-कानून और ज्यादा सख्त हो गए। उदाहरण के लिए जेल की खिड़कियाँ बन्द कर दी गईं, जिसके फलस्वरूप कैदियों को आकाश का केवल थोड़ा-सा भाग ही दीख पड़ता था। सब तरह के खेलों की, खास तौरपर शतरंज की, मुमानियत थी। मास्को, लुबियानक और बूतुरका की जेलों को छोड़कर अन्य सब जेलों में कैदियों को किताबें बिलकुल नहीं दी जाती थीं। १६३६ के मध्य में बेरिया की नियुक्ति के बाद खेलों और किताबों की फिर इजाजत दे दी गई। यह एक महान् सुधार था क्योंकि जेल के पुस्तकालय सामान्यतः अच्छे होते थे। येझोव-काल में तनिक-से अपराध, जैसे कि कैदी के पास से सूई की प्राप्ति के लिए भी उसे एक खास कोठरी में बन्द कर दिया जाता। यह जेल के अन्दर एक दूसरी जेल थी जिसमें आम तौर पर मिलने वाले अपर्याप्त राशन का भी आधे से दो-तिहाई भाग तक ही दिया जाता था। उनको गरम कपड़े भी नहीं दिए जाते और सिर्फ रात को ही लेटने की इजाजत दी जाती

और वह भी पथरीले फर्श पर।

विभिन्न जेलों में विभिन्न प्रकार की सफाई रहती थी। एन० के० वी० डी० की अन्दरूनी जेलों में ज्यादा अच्छी सफाई रहती थी।

अन्दरूनी जेलों, खास तौर पर मास्को की जेलों और अन्य प्रान्तीय जेलों की तथाकथित 'बड़ी कोठरियों', खास तौर पर छोटे शहरों और गाँवों की जेलों में बड़ा अन्तर था। इन छोटी जेलों की दशा बहुत ही भयानक होती थी।

१६३६ तक कैदियों को जीवित रहने-भर के लिए काफी खाना मिल जाता था, हालाँकि कितने दिनों की भी सजा क्यों न हो, कैदी हमेशा ही बेहद कमजोर होकर लौटता था। हर रोज के भोजन में ५००-६०० ग्राम भद्दी काली रोटी, २० ग्राम चीनी और दिन में दो बार शोरबा, आम तौर पर गोभी का शोरबा, मिलता था जिसमें पौष्टिक तत्त्व बिलकुल न होता था। कई जेलों में एक बड़ी चम्मच दलिया, आम तौर पर जौ का दलिया और गरम पानी या काम में लाई हुई पत्तियों की चाय दिन में तीन बार दी जाती थी। जो लोग ज्यादा दिनों तक जेल में रह चुके थे, वे हमेशा भूखे बने रहते और विभिन्न जेलों में मिलने वाला भोजन ही उनकी बातचीत का मुख्य विषय होता।

अन्दरूनी जेलों में डाक्टरी देखभाल काफी अच्छी होती थी, सिर्फ पूछताछ के शिकार बने हुए कैदियों की ही उपेक्षा की जाती थी और वह भी जब तक कि उनके घाव घातक साबित न होने लगें। डाक्टर लोग कैदियों के स्वास्थ्य की चिन्ता और 'पूछताछ के क्रम' में बाधा न डालने के भय के बीच अक्सर गम्भीर द्विविधा में रहते थे। एक कैदी को, जिसकी पसलियाँ पूछताछ के दौरान में तोड़ दी गई थीं, 'पसलियों के वातशूल' का रोगी बताया गया, लेकिन फिर भी उसका पूरा डाक्टरी इलाज किया गया। कोठरियों में मौत बहुत कम होती थी। अक्सर कैदी अधिकारियों की सारी निगरानियों के बावजूद भी तौलियों से फाँसी लगाकर या शीशे के टुकड़ों से नसें काटकर आत्महत्या करने में सफल हो जाते थे। किन्तु इस

तरह के काम बहुत ही कम हो पाते थे।

कैदियों के गिरे हुए स्वास्थ्य के कारण जेल के अस्पतालों में अक्सर मौतें हो जाया करती थीं। रोगों की व्यापकता अधिक नहीं थी किन्तु प्रान्तों की बाहरी जेलों की बड़ी कोठरियों में सफ़ाई-सुथराई की कमी के कारण अक्सर पेचिश हो जाया करती थी। छूत की बीमारी, खास तौर पर मियादी बुखार के टीके हमेशा लगते ही रहते थे।

कायदे के मुताबिक कैदियों को हर रोज़ घूमने जाने की इजाज़त थी। दस-पन्द्रह मिनट का यह घूमना जेल के छोटे अहाते में ही होता था जो कि बाहरी दुनिया से ऊँची दीवारों द्वारा अलग रहता था। दो कतार बनाकर और सिर झुकाकर चुपचाप अहाते का चक्कर नियमानुसार लगाया जाता था। कई शहरों में अहाते के दोनों ओर दो पहरेदार बन्दूकें लिये तैनात रहते थे। चूँकि जेलों में जगह से ज़्यादा लोग भरे हुए थे, इसलिए यह घूमना कई बार रात को होता था। बरफ़ से ढके हुए और तेज रोशनियों में चमकते हुए इन अहातों का दृश्य इतना अद्‌भुत प्रतीत होता था कि कभी भुलाया नहीं जा सकता।

येझोव-काल में जेलों का खचाखच भरा रहना कैदियों के लिए सबसे बड़ी तकलीफ़ थी। एक कोठरी में जितने लोगों के लिए दरअसल जगह होती थी उससे आठ या दस गुने ज़्यादा लोग उसमें भरे जाते थे। प्रान्तीय जेलों की अपेक्षा मास्को की जेलों में कैदियों की भरमार सहना ज्यादा आसान था। मास्को की जेलों में लकड़ी के तख्तों के बने हुए पलंग थे और गद्दे भी दिये जाते थे। कैदियों के लिए इन पलंगों के नीचे भी सोने का प्रबन्ध था, जिसे कैदी व्यंग के साथ 'ज़मीन के अन्दर' या 'गुप्त रूप' से सोना कहते थे। इस तरह और पलंगों के बीच तख्ते लगाकर (जिसे 'हवाई जहाज' कहा जाता था) एक वर्गगज़ ज़मीन में तीन आदमियों को सुलाना सम्भव था। लेकिन प्रान्तीय जेलों में कैदियों की संख्या इतनी ज्यादा होती थी कि जहाँ-कहीं बिस्तरे और पलंग मौजूद भी थे, उन्हे ज्यादा कैदियों के लिए जगह बनाने के लिए हटा दिया जाता था। उनको मछलियों की

तरह एक करवट लेकर एक कतार में सोना पड़ता था। हरेक कतार का एक नेता होता था जो तय करता था कि उनको कब करवट बदलनी है; वे सारे वक्त एक ही करवट नहीं सो सकते थे, और सब लोगों को तंग किए बिना कोई करवट भी नहीं बदल सकता था। कई कोठरियों में तो इतनी भीड़ होती कि लोग बारी-बारी से सोते थे। जब एक कोठरी के आधे लोग एक डिब्बे में भरी हुई मछलियों की तरह फर्श पर लेट जाते तो बाकी लोगों को खड़े रहना पड़ता था।

कई कोठरियों में, खास तौर पर जहाँ कि कोठरी का नेता मानव-प्रकृति और साहित्य का प्रेमी तथा प्रबल व्यक्तित्व वाला होता, जैसा कि बहुधा हुआ ही करता था, तो बड़ी लगन के साथ गम्भीर वादविवाद आरम्भ हो जाता। विभिन्न विषयों पर, जैसे कि साहित्य, इतिहास, सामरिक इतिहास, प्राकृतिक विज्ञान और इंजीनियरिंग पर व्याख्यान होते और यहाँ तक कि पूरे पाठ्यक्रम का अध्ययन होता। चूँकि कई विभिन्न देश और जाति के लोग कैदियों में थे अतः भाषा-विज्ञान का अध्ययन भी हो जाता था। ऐसे भी उदाहरण थे कि जेल में किये हुए गणित-सम्बन्धी कार्य का बाद में मौलिक अनुसन्धान-कार्य के रूप में प्रकाशन हुआ। यह याद रखना चाहिए कि यह सब काम कागज-पेंसिल के बिना ही होता था। साबुन की चौड़ी टिकिया जैसी-चीजों को लिखने की पट्टी बनाकर काम में लाया जाता था। यह पुस्तक भी एन० के० वी० डी० की कोठरी में लेखकों के एक महीने के वादविवाद से उत्पन्न हुई है।

साधारणतः यह प्रतीत होता था कि पूछताछ की प्रक्रिया के अतिरिक्त नियमों का पालन होते रहने पर एन० के० वी० डी० के अधिकारीगण अनावश्यक सख्ती नहीं बरतते थे, बल्कि येभ्झोव-काल के अन्त से कुछ पहले तो ऐसा मालूम होने लगा था कि बन्दियों के प्रति उनकी सद्भावना बढ़ने लगी है। 'जनता के शत्रुओं' की भीषण संख्या और मनगढ़ंत कहानियों तथा अपराध-स्वीकृतियों का प्रत्यक्ष मिथ्यापन अन्त में इतना व्यापक रूप से स्वीकार किया जाने लगा कि कोई भी, यहाँ तक कि स्वयं एन० के० वी०

डी० के अधिकारी भी इसे विशेष महत्त्व प्रदान नहीं करते थे।

कैदियों की तादाद बहुत बढ़ जाने पर भी, विशेषाधिकार-प्राप्त बन्दियों के लिए अन्दरूनी जेलों की खास कोठरियों में बिलकुल भीड़ न रहती थी। १९३९ के आरम्भ से जेल की कोठरियाँ धीरे-धीरे खाली होने लगीं और उस वर्ष के अन्त तक यद्यपि कैदियों की संख्या सामान्यतः अधिक ही थी फिर भी पहले से बहुत कम हो चुकी थी। गिरफ्तारियाँ तब भी होती थीं लेकिन उनकी संख्या कम हो चुकी थी और पूछताछ के लिए रोके हुए बहुत से कैदियों को रिहा कर दिया गया। हिटलर-स्तालिन समझौते के बाद गिरफ्तार हुए लोगों में अधिकांशतः वे थे जिन्होंने जर्मन फासिज़्म की बुराई की थी और इस प्रकार समझौते की आलोचना करने का अपराध किया था।

हरेक मामले में पूछताछ की अवधि अलग-अलग होती थी। अधिकांश कैदियों की पूछताछ में जैसे कि सामूहिक खेतों के किसान और साधारण मज़दूरों के मामले में अधिक समय न लगता था। बुद्धिजीवी और शिक्षित लोगों की पूछताछ में काफी समय लग जाता था; कई बार तो कुछ महीनों से लेकर दो-ढाई वर्ष तक पूछताछ चलती रहती थी। औसत समय चार से पाँच महीने तक का होता था।

विभिन्न न्यायालयों अथवा न्यायपालिकाओं में से कोई भी दण्ड की घोषणा कर सकता था। अधिकांश बन्दियों के दण्ड की घोषणा उनकी अनुपस्थिति में एन० के० वी० डी० की न्यायपालक समिति द्वारा होती थी—प्रान्तीय नगरों में 'ट्रॉयका' नामक तीन व्यक्तियों की समिति द्वारा या मास्को में एक 'विशेष एन० के० वी० डी० परिषद्' द्वारा। जिन कचहरियों में कैदी मौजूद होते वहाँ उनकी बहुत कम सुनवाई हो पाती थी। एक सर्वोच्च न्यायालय के सैनिक बोर्ड की कचहरी थी जो या तो मास्को में बैठती या बड़े शहरों में अदालत करने जाती थी। कोर्ट-मार्शलों में अभियोजक या अभियुक्त के वकील के बिना ही फ़ैसले हो जाते थे और गवाहों तक को न बुलाया जाता था। प्रादेशिक न्यायालयों में सरकारी वकील और अभियुक्त के वकील बहुत थोड़े मामलों में ही आने दिए जाते थे। येझोव-काल की समाप्ति पर

और बेरिया की नियुक्ति के बाद से अभियुक्त की अनुपस्थिति में एन० के० वी० डी० की न्यायपालक समितियों द्वारा दण्ड घोषित करना कम हो गया। जेलों में कहा जाता था कि यह तरीका बिलकुल बन्द हो चुका है, पर १९४० में भी हमने ऐसे फ़ैसले देखे थे।

अभियुक्त को निर्दोषी ठहराकर मुक्त भी किया जाता था, किन्तु ऐसे उदाहरण बहुत कम मिलते थे। सजा की सख्ती मामले की बारीकियों और अभियुक्त की अपराध-स्वीकृति पर निर्भर न होकर इस बात पर अधिक निर्भर करती थी कि अभियुक्त कौन है, उसकी सामाजिक स्थिति क्या है, और साथ ही एन० के० वी० डी० के अगाध तरीकों पर भी; लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण बात थी कि सजा किस समय सुनाई जा रही थी। दण्ड निर्धारित करने के लिए कोई साधारण पथ-प्रदर्शक सिद्धान्त नजर न आता था। अतः दण्ड की अवधि को स्वयं अभियुक्त द्वारा भी कोई विशेष महत्त्व नहीं दिया जाता था।

दण्ड-प्राप्त बन्दियों को उनकी पुरानी कोठरियों में फिर न भेजा जाता था ताकि उनका भाग्य और बन्दी-कैम्पों की हालत, जिनमें वे रह चुके थे, दूसरे लोगों के लिए एक रहस्य ही बनी रहे। बन्दी-कैम्पों के बारे में सिर्फ उन लोगों से जानकारी प्राप्त हो पाती थी जिन्हें दुबारा पूछताछ के लिए बुलाया जाता या जो कि किसी नये अभियोग के फलस्वरूप वहाँ लाए जाते थे।

दण्ड-प्राप्त बन्दियों को वितरण के लिए संक्रमण कैम्पों मे भेजा जाता था। उनकी रवानगी के बाद से ही गुलग नामक कैम्पों के सरकारी प्रशासन के अधीन वे हो जाते, जो कि एन० के० वी० डी० के अन्तर्गत ही एक महान् संगठन था। संसार के इतिहास में शायद कभी भी कोई ऐसा संगठन नहीं रहा है जो कि इतने ज्यादा लोगो की जिम्मेवारी उठाने में इसकी बराबरी कर पाया हो।

सफ़र के दौरान में और संक्रमण-कैम्पों में राजनीतिक कैदी पहली बार आपराधिक बन्दियों से परिचय प्राप्त करते थे। आपराधिक कैदी कैम्प के कामों में प्रमुख भाग लेते थे, हालाँकि राजनीतिक कैदियों की तुलना में यह

अपराधी होते थे। राजनीतिक कैदियों की तुलना में इन्हें विशेषाधिकार प्राप्त थे। इन्हें जनता का शत्रु नहीं समझा जाता था और वे राजनीतिक कैदियों को तिरस्कृत समझते थे। इन अपराधियों में से ही ओवरसियर और कैदियों के मुखिये या फोरमैन चुने जाते थे; वे ही कैदियों को काम बाँटते और कैदियों के दैनिक जीवन के सब महत्त्वपूर्ण अंगों पर अधिकार रखते थे। राजनीतिक कैदियों का प्रथम अनुभव और शायद इसका कभी कोई अपवाद नहीं हुआ, अपनी सब चीजें जैसे कि गरम कपड़े और मजबूत जूते आदि छिन जाना था। सफ़र के दौरान में या संक्रमण-कैम्प में या फिर बन्दी-कैम्प में पहुँचने के बाद उनकी चीजें लूट ली जाती थीं। आपराधिक कैदी लूट की चीज़ों के लिए लॉटरी निकालते और उन्हें आपस में बाँट लेते थे। दिन-दहाड़े पहरेदार की नजरों के सामने खुल्लमखुल्ला यह लूट-मार होती और वह इस मामले में पूर्णतः तटस्थ बना रहता। सोवियत कार्य-कलापों के लिए गुलग द्वारा मजदूरों की भरती की जाती थी और इस प्रकार गुलग-मजदूर भरती करने की एक संस्था बन गई। देश के प्रायः समस्त बड़े कल-कारखानों में कैदियों के दस्ते काम करते थे। कई औद्योगिक कार्य-कलापों में विशेषतः साइबेरिया और सुदूरस्थित क्षेत्रों में तो कैदियों के बिना काम चलना ही असम्भव था। सोवियत यूनियन के कई उद्योग तो गुलग द्वारा भेजे हुए बलात्-श्रमिकों से ही पूरी तरह चलते थे। उत्तर और साइबेरिया के लकड़ी उद्योग, सुदूरपूर्व की सोने की खानें और अन्य सुदूर-स्थित क्षेत्रों की लोहे व धातु की खानें, खास तौर पर कज़ाकिस्तान के कारागान्दा नामक कोयले के क्षेत्र ऐसे उद्योगों में शामिल हैं। सड़कें, नहरें और रेलवे लाइनों के बनाने का काम भी गुलग द्वारा करवाया जाता था। १९३८ में ही यूरेनियम और रेडियम का उत्पादन तथा अन्य सम्बन्धित उद्योगों में गुलग द्वारा काम करवाया जाता था। सोवियत यूनियन में यूरोप-जितने बड़े भागों पर गुलग का प्रशासन था। इनमें कोमी जनतन्त्र, जो कि यूरोपीय रूस का उत्तरी भाग है, कारागान्दा की कोयले की खानें और समस्त उत्तरी व उत्तर-पूर्वी एशिया के इलाके प्रमुख थे, जिनमें लेना व कोलिमा

नामक दो महान् नदियों के जलाशय विशेष उल्लेखनीय हैं। कहा जाता है कि लेना और कोलिमा जलाशयों के सोने के उत्पादन का संसार में दूसरा स्थान है।

गुलग के पास प्रत्येक विषय के अति उच्च-शिक्षा-प्राप्त विशेषज्ञों की एक बहुत बड़ी संख्या मौजूद रहती थी। इन विशेषज्ञों में से प्रायः सभी को पूछताछ के दौरान में आश्वासन दिलाया गया था कि उन्हें अपना-अपना काम करने का अवसर प्रदान किया जायगा, लेकिन डाक्टरों के अलावा, जो कि कैम्पों में मेडिकल अफसरों के बतौर काम करते थे, साधारणतः अन्य किसी को ऐसा मौका नहीं दिया गया। हमने अधिकांश इंजीनियरों, विश्व-विद्यालयों के प्रोफेसरों, कलाकारों, अध्यापकों और धर्म-प्रचारकों को सबकी तरह मामूली मजदूरी करते देखा था।

गुलग के श्रमिकों की भीषण संख्या हमारी आँक के अनुसार १९३८ में १४०,००,००० थी और समूचे उद्योगों तथा इलाकों पर नियन्त्रण रखने के कारण सोवियत जीवन में एक महान् पार्ट अदा कर वह संगठन सोवियत अर्थ-व्यवस्था का एक मूलभूत स्तम्भ बन चुका था। युद्ध से पहले सारे संसार की लकड़ी की पैदावार का एक महत्त्वपूर्ण भाग गुलग के अधीन था। गुलग की महत्ता पूर्व आयोजित या पूर्व निर्धारित नहीं थी। लेकिन गुलग ने अपने बलात्-श्रमिकों द्वारा सोवियत अर्थ-व्यवस्था में एक ऐसा महत्त्व-पूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया था कि उसके बिना काम चलाना सरकार के लिए मुश्किल था। इस संगठन को भंग कर देना और उसके मजदूरों की एक साथ रिहाई समूची सोवियत व्यवस्था को ही हिला देती। सुयोग्य कार्य-कर्ताओं की उपलब्धि में इतनी अधिक वृद्धि हो जाती कि सोवियत यूनियन के समस्त उद्योगों और क्षेत्रों का सम्पूर्ण पुनर्संगठन आवश्यक हो जाता।

श्रमिक-कैम्पों में, और वास्तव में सोवियत यूनियन में हर जगह व्यक्ति-गत मजदूरों या मजदूरों के समूहों द्वारा नित्य किए जाने वाले काम की मात्रा नियत थी। जो काम करने से इन्कार करते या जो शारीरिक कारणों से अस-मर्थ थे उनको इतना कम खाना दिया जाता था कि उन्हें यथार्थतः भूख से

मार देना था। नियत काम को पूरा करना उन लोगों तक के लिए भी असाधारण रूप से कठिन था जो कि सख्त शारीरिक श्रम के आदी थे। जो नियत काम से ज्यादा काम कर दिखाते थे उन्हें इतना खाना दिया जाता था जो कि बहुत अधिक शारीरिक श्रम करने वाले की साधारण खुराक होती थी—हर रोज एक किलोग्राम रोटी, दिन में दो बार मछली का शोरबा और कभी-कभी कुछ सूखी मछली और चीनी आदि। इस श्रेणी में बहुत कम लोग आते थे और जो आते थे वे आपराधिक कैदी होते थे जिनका काम ही यह देखना था कि रोजमर्रा का नियत काम पूरा हो रहा है। जो नियत काम के नजदीक पहुँच पाते थे उन्हें हर रोज ५००–६०० ग्राम रोटी और दिन में एक बार भद्दी किस्म का गरम खाना दिया जाता था। जो नियत काम करने में असफल रहते उन्हें हर रोज ३०० ग्राम रोटी और कम तादाद व ज्यादा भद्दी किस्म का गरम खाना दिया जाता था। इस श्रेणी में अनेक बुद्धिजीवी थे जो शारीरिक श्रम करने के अभ्यस्त न होने के कारण अपना नियत काम करने में असमर्थ रहते थे।

सब लोगों की यही राय थी कि आपराधिक कैदियों से दोस्ती बनाए रखने पर बहुत-कुछ निर्भर करता था। जो लोग इन अपराधियों से दोस्ती करने में सफल होते वे दफ्तरों का काम या ऐसा ही अन्य कोई हल्का काम पाकर अपना जीवन अधिक सहनीय बना लेते थे। उदाहरण के लिए हम जर्मन राइखस्टाग के कम्युनिस्ट नेता अर्नेस्ट टोर्गलर के पुत्र से मिले। राइखस्टाग के मुकदमे के खिलाफ, जिसमें उसका पिता एक प्रमुख अभियुक्त था, लन्दन और पेरिस की क्षोभ-प्रदर्शन की सभाओं में उस लड़के को पेश किया गया जो कि उस समय तेरह वर्ष का था। अन्त में युवा टोर्गलर ने सोवियत रूस में जाकर शरण ली। जब उसे जर्मन 'जासूस' करार कर बलात्-श्रम की एक लम्बी सज़ा दे दी गई तो उसने अपने अपराधी साथियों के जंगली तरीकों को इतनी अच्छी तरह अपना लिया कि उसे कैम्प में मरे हुए लोगों के मृत-शरीरों को हटा देने का आरामदेह काम मिल गया। मुर्दों को हटा देने का काम आसान था। सुदूर उत्तर में स्थित कोमी जनतन्त्र के

पहाड़ी इलाके में यह कैम्प था, जहाँ एक नदी बहती थी जो वर्ष के अधिकांश भाग तक बर्फ से जमी रहती थी। मुर्दों को एक खास तौर पर बनाई हुई ढाल पर सिर्फ लुढ़का देना भर पड़ता, और वे लुढ़कते हुए बर्फ से जमी हुई नदी पर जा पड़ते और वहीं पड़े रहते जब तक कि वसन्तकालीन बाढ़ उन्हें बहाकर नहीं ले जाती। हिटलर-स्तालिन समझौते के बाद युवा टोर्गलर को गेस्टेपो के हाथ सौंप दिया गया और राजनीतिक रूप से संदिग्ध व्यक्तियों की पलटन में उसे रख दिया गया जहाँ कि वह लड़ते-लड़ते मारा गया।

सब सूत्रों से प्राप्त समाचारों के अनुसार कैम्पों में मरने वालों की संख्या काफी अधिक थी और वहाँ के सख्त हालातों को देखते हुए यही उम्मीद भी की जाती थी। कैम्पों की व्यवस्था त्रुटिपूर्ण थी और खाद्य-सामग्रियाँ भी सदा नियमित रूप से उपलब्ध नहीं होती थी। कैम्पों से लौटकर आने वाले प्रायः सब लोगों को रक्त-विकार का एक प्रबल रोग हो जाता था। यह कहना गलत न होगा कि मौत ने दो-तीन साल में ही कैदियों की संख्या आधी कर दी थी।

कैदी द्वारा अ[illegible] के बाद दुबारा पूछताछ के लिए बन्द किये हुए कैदियों की जेलों से सजा पाये हुए कैदियों की जेलों में कुछ ज्यादा अच्छा व्यवहार होता था। राजनीतिक कैदियों को कुछ बड़ी प्रान्तीय जेलों में केन्द्रित रखा गया था। इनमें से एक बड़ी जेल श्वेत सागर के सोलोवेत्स्क नामक द्वीप पर एक भूतपूर्व मठ में स्थित थी।

हरेक कैदी को सजा देते समय बता दिया जाता था कि उसको अपने सम्बन्धियों के साथ पत्र-व्यवहार करने का अधिकार प्राप्त है या नहीं। बलात्-श्रम के लिए भेजे हुए कैदियों को यह विशेषाधिकार अक्सर प्राप्त होता था और इसलिए उन्हें पार्सल तथा पत्र भेजे जा सकते थे, पर सबका कहना यही था कि ये चीजें कैदियों को कभी मिलती न थी।

श्रमिक कैम्पों की दशा बहुत ही बुरी होती थी और अक्सर असहनीय हो उठती थी, किन्तु यह कैम्प के इलाके में सोवियत रहन-सहन की दशा का परिणाम था, न कि कैदियों को जान-बूझकर तकलीफ पहुँचाने के इरादे

मार देना था। नियत काम को पूरा करना उन लोगों तक के लिए भी असाधारण रूप से कठिन था जो कि सख्त शारीरिक श्रम के आदी थे। जो नियत काम से ज्यादा काम कर दिखाते थे उन्हें इतना खाना दिया जाता था जो कि बहुत अधिक शारीरिक श्रम करने वाले की साधारण खुराक होती थी—हर रोज एक किलोग्राम रोटी, दिन में दो बार मछली का शोरबा और कभी-कभी कुछ सूखी मछली और चीनी आदि। इस श्रेणी में बहुत कम लोग आते थे और जो आते थे वे आपराधिक कैदी होते थे जिनका काम ही यह देखना था कि रोजमर्रा का नियत काम पूरा हो रहा है। जो नियत काम के नजदीक पहुँच पाते थे उन्हें हर रोज ५००–६०० ग्राम रोटी और दिन में एक बार भद्दी किस्म का गरम खाना दिया जाता था। जो नियत काम करने में असफल रहते उन्हें हर रोज ३०० ग्राम रोटी और कम तादाद व ज्यादा भद्दी किस्म का गरम खाना दिया जाता था। इस श्रेणी में अनेक बुद्धिजीवी थे जो शारीरिक श्रम करने के अभ्यस्त न होने के कारण अपना नियत काम करने में असमर्थ रहते थे।

सब लोगों की यही राय थी कि आपराधिक कैदियों से दोस्ती बनाए रखने पर बहुत-कुछ निर्भर करता था। जो लोग इन अपराधियों से दोस्ती करने में सफल होते वे दफ्तरों का काम या ऐसा ही अन्य कोई हल्का काम पाकर अपना जीवन अधिक सहनीय बना लेते थे। उदाहरण के लिए हम जर्मन राइखस्टाग के कम्युनिस्ट नेता अर्नेस्ट टोर्गलर के पुत्र से मिले। राइखस्टाग के मुकदमे के खिलाफ, जिसमें उसका पिता एक प्रमुख अभियुक्त था, लन्दन और पेरिस की क्षोभ-प्रदर्शन की सभाओं में उस लड़के को पेश किया गया जो कि उस समय तेरह वर्ष का था। अन्त में युवा टोर्गलर ने सोवियत रूस में जाकर शरण ली। जब उसे जर्मन 'जासूस' करार कर बलात्-श्रम की एक लम्बी सजा दे दी गई तो उसने अपने अपराधी साथियों के जंगली तरीकों को इतनी अच्छी तरह अपना लिया कि उसे कैम्प में मरे हुए लोगों के मृत-शरीरों को हटा देने का आरामदेह काम मिल गया। मुर्दों को हटा देने का काम आसान था। सुदूर उत्तर में स्थित कोमी जनतन्त्र के

पहाड़ी इलाके में यह कैम्प था, जहाँ एक नदी बहती थी जो वर्ष के अधिकांश भाग तक बर्फ से जमी रहती थी। मुर्दों को एक खास तौर पर बनाई हुई ढाल पर सिर्फ लुढ़का देना भर पड़ता, और वे लुढ़कते हुए बर्फ से जमी हुई नदी पर जा पड़ते और वहीं पड़े रहते जब तक कि वसन्तकालीन बाढ़ उन्हें बहाकर नहीं ले जाती। हिटलर-स्तालिन समझौते के बाद युवा टोर्गलर को गेस्टेपो के हाथ सौंप दिया गया और राजनीतिक रूप से संदिग्ध व्यक्तियों की पलटन में उसे रख दिया गया जहाँ कि वह लड़ते-लड़ते मारा गया।

सब सूत्रों से प्राप्त समाचारों के अनुसार कैम्पों में मरने वालों की संख्या काफी अधिक थी और वहाँ के सख्त हालातों को देखते हुए यही उम्मीद भी की जाती थी। कैम्पों की व्यवस्था त्रुटिपूर्ण थी और खाद्य-सामग्रियाँ भी सदा नियमित रूप से उपलब्ध नहीं होती थी। कैम्पों से लौटकर आने वाले प्रायः सब लोगों को रक्त-विकार का एक प्रबल रोग हो जाता था। यह कहना गलत न होगा कि मौत ने दो-तीन साल में ही कैदियों की संख्या आधी कर दी थी।

कैदी द्वारा अपराध-स्वीकृति के बाद दुबारा पूछताछ के लिए बन्द किये हुए कैदियों की जेलों से सजा पाये हुए कैदियों की जेलों में कुछ ज्यादा अच्छा व्यवहार होता था। राजनीतिक कैदियों को कुछ बड़ी प्रान्तीय जेलों में केन्द्रित रखा गया था। इनमें से एक बड़ी जेल श्वेत सागर के सोलोवेत्स्क नामक द्वीप पर एक भूतपूर्व मठ में स्थित थी।

हरेक कैदी को सजा देते समय बता दिया जाता था कि उसको अपने सम्बन्धियों के साथ पत्र-व्यवहार करने का अधिकार प्राप्त है या नहीं। बलात्-श्रम के लिए भेजे हुए कैदियों को यह विशेषाधिकार अक्सर प्राप्त होता था और इसलिए उन्हें पार्सल तथा पत्र भेजे जा सकते थे, पर सबका कहना यही था कि ये चीजें कैदियों को कभी मिलती न थी।

श्रमिक कैम्पों की दशा बहुत ही बुरी होती थी और अक्सर असहनीय हो उठती थी, किन्तु यह कैम्प के इलाके मे सोवियत रहन-सहन की दशा का परिणाम था, न कि कैदियों को जान-बूझकर तकलीफ पहुँचाने के इरादे

का परिणाम था। ज्यादा-से-ज्यादा यह कहा जा सकता है कि यह उलझी हुई बुरी व्यवस्था का परिणाम था। हमारे संवाददाता इस बात पर सहमत थे कि अनजाने में पैदा हुई मुश्किलों के कारण सबसे ज्यादा तकलीफ उठानी पड़ती थी। उदाहरण के लिए कई हजार कैदियों को कुछ काम करने के लिए साइबेरिया ले जाया गया, लेकिन जब वे वहाँ पहुँचे तो न रहने की कोई जगह थी और न झोंपड़ियाँ बनाने के लिए औज़ार ही थे। कई बार खाने-पीने की रसद खतम हो जाती या महीनों तक सारे कैम्पों को लहसुन बिना रहना पड़ता। नतीजा यह होता कि लहसुन के एक ज़रा से टुकड़े के लिए हत्या तक कर दी जाती, क्योंकि सोवियत यूनियन की समस्त जेलों में रक्त-विकार से बचने के लिए यही एक विटामिन-युक्त चीज थी।

सोवियत कैम्पों की हालत कई मानों में उतनी ही बुरी कही जा सकती है जितनी कि नात्सी कैम्पों की, लेकिन सोवियत कैम्पों का चरित्र सम्पूर्णतः भिन्न था। बड़े पैमाने पर कैदियों की बरबादी, जान लेने वाले इंजेक्शन देकर उन पर प्रयोग या केवल उन्हें अपमानित करने के लिए उनसे व्यर्थ के काम करवाना सोवियत राज्य में कभी नहीं हुआ। सोवियत कठोरता विचारात्मक थी, भावात्मक नहीं। चीज़ों की कमी और अन्य उलझनों पर बन्दी कैम्पों की दशा निर्भर करती।

: ५ :

कैदी

अब हम कैदियों की विभिन्न श्रेणियों का यथाक्रम उल्लेख करेंगे। यह स्वभावतः बहुत कुछ एक स्वेच्छाचारी प्रक्रिया है। कई बार यह श्रेणियाँ आपस में मिल-जुल जाती थी। आप सदा पूर्ण विश्वास के साथ यह नहीं कह सकते थे कि अमुक व्यक्ति कम्युनिस्ट पार्टी में अपने प्रमुख पद के कारण गिरफ्तार हुआ या क्योंकि उसका नाम बताता है कि उसकी उत्पत्ति पोलैण्ड से हुई है। हमारे द्वारा उल्लिखित श्रेणियों में से किसी एक का भी सदस्य होना एक 'बाहरी गुण' था जो कि गिरफ्तारी के लिए पर्याप्त कारण था, यद्यपि केवल इसी कारण गिरफ्तार होना अनिवार्य न था।

सोवियत यूनियन के बाहर यह मान लिया जाता था कि किसी एक व्यक्ति की गिरफ्तारी और उसके द्वारा किये हुए किसी अपराध, या कम-से-कम उस अपराध के अभियोग में एक सीधा सम्बन्ध है। लोग इस विचार को इतने पूर्ण रूप से मान बैठे हैं कि उनके लिए यह समझना कठिन है कि सोवियत यूनियन में ऐसे किसी आवश्यक सम्बन्ध का अस्तित्व नहीं। रूस की गिरफ्तारियाँ विशेषतः शुद्धीकरण के जमाने की गिरफ्तारियाँ एक सम्पूर्णतः भिन्न पद्धति पर आधारित थी। तुलना के लिए आधुनिक भौतिक विज्ञान के परिगणित निर्धारण के सिद्धान्त के उल्लेख से अधिक अच्छा उदाहरण नहीं हो सकता। इस सिद्धान्त के अनुसार किसी एक व्यक्तिगत

परिणाम का रूप किन्हीं एक परिस्थितियों में पहले से नहीं बताया जा सकता। आज इस बारे में केवल यह कह सकते हैं कि अमुक परिस्थितियों में अमुक मात्रा की सम्भावना है, यह गणित के द्वारा बताया जा सकता है कि ऐसा होने पर ऐसा होगा। रूस के व्यक्तिगत लोगों के लिए भी बहुत-कुछ यही बात लागू होती थी। गिरफ्तारी के कारण वे 'बाहरी गुण' थे जिनसे अब सब परिचित हैं; किसी एक श्रेणी का सदस्य होना ही पर्याप्त कारण था। युद्धकालीन स्थिति को देखने से एक अच्छा उदाहरण मिलता है—शत्रु-देश के लोग आप-से-आप गिरफ्तार कर लिए जाते, या जैसा कि नात्सी जर्मनी में हुआ कि शोषित समूह के लोगों को वे दण्ड भुगतने पड़ते थे जिनका उनके व्यक्तिगत अपराधों से कोई सम्बन्ध न था, किन्तु यहाँ एक महत्त्वपूर्ण अन्तर था। युद्धकालीन शत्रु या नात्सी जर्मनी में एक यहूदी के लिए होने वाले अप्रिय परिणाम प्रायः अनिवार्य ही थे। सोवियत यूनियन में किसी एक श्रेणी के सदस्य के लिए यह परिणाम अनिवार्य न थे। उसके बच सकने की सम्भावना सदैव नगण्य नहीं होती थी। सामान्यतः जिस व्यक्ति का पद जितना ऊँचा होता उतनी ही उसकी बच सकने की सम्भावना कम होती थी और कई बार तो यदि कोई व्यक्ति दुर्भाग्यवश एक से अधिक श्रेणियों का सदस्य होता, जैसे कि कोई सोवियत पार्टी-अधिकारी विदेश में भेजे गए किसी सोवियत मण्डल का सदस्य भी होता तो गणितीय अनुमान के सिद्धान्तों के अनुसार उसके बच सकने की सम्भावना भी कम हो जाती थी।

किसी व्यक्ति-विशेष का गिरफ्तार होना या न होना कई अप्रधान कारणों पर निर्भर करता था, जैसे कि जेलों में कैदियों की अत्यधिक संख्या, एन० के० वी० डी० की फाइलों की स्थिति, उस व्यक्ति-विशेष का व्यक्तित्व, उसके विरुद्ध प्राप्त रिपोर्टों की संख्या, उसके द्वारा की जाने वाली अपराध-स्वीकृति आदि। पिछली दो बातों का कोई विशेष महत्त्व प्रतीत न होता था। अधिकांश मामलों में किसी एक व्यक्ति की गिरफ्तारी का कारण पूछना ही निरर्थक था।

कई लोग कुछ चालाकियों से काम लेकर गिरफ्तारी से बच भी जाते थे। एक प्रसिद्ध विद्वान् ने मुझे बताया कि उसके कुछ मित्रों ने, जिनमें कुछ अनुभवी कम्युनिस्ट भी शामिल थे, शुद्धीकरण के समय उसे शराबी बन जाने का बहाना करने की सलाह दी और यह भी कहा कि उसे कभी-कभी शराब के हल्के नशे में ही व्याख्यान देने चाहिएँ। इस तरह १६३० की दशाब्दी के आरम्भ में विशेषज्ञों के प्रथम शुद्धीकरण से वह बचने में सफल हुआ। दूसरा लोकप्रिय तरीका था अपना काम और अपनी रहने की जगह बीच-बीच में बदलते रहना। किसी एक सोवियत कार्य-कलाप के किसी एक नये श्रमजीवी पर ध्यान देने में एन० के० वी० डी० को काफी समय लग जाता था—कम-से-कम छः महीने से एक वर्ष तक का समय तो लग ही जाता था। उस व्यक्ति के बारे में गुप्त रिपोर्टों को इकट्ठा करने में, जिसे आम तौर पर 'सामग्री' कहा जाता, काफी समय लग जाता था। उस व्यक्ति द्वारा प्रश्नोत्तरी भरने में ताकि उसे किसी एक श्रेणी में रखा जा सके और जहाँ वह पहले काम करता था वहाँ से उससे सम्बन्धित कागजातों को मँगाने में अनिवार्यतः काफी देर लग जाती थी—खास तौर पर क्योंकि यह सब चीजें मामूली डाक से न मँगवाकर एन० के० वी० डी० के सन्देशवाहक द्वारा मँगवाई जाती थीं। यह सब कागजात ठीक जगह पहुँचने में बहुत वक्त लेते थे और कई बार पहुँच भी नहीं पाते थे।

एन० के० वी० डी० वाले गिरफ्तार किए जाने वाली श्रेणियों के कुछ लोगों को कई बार छोड़ देते थे ताकि यह दिखाया जा सके कि उन श्रेणियों का सदस्य होना ही गिरफ्तारी का कारण नहीं है बल्कि प्रत्येक व्यक्ति अपने निजी अपराध के कारण गिरफ्तार किया गया है। इस प्रकार गिरफ्तार न किये गए लोगों में लाल सेना के कई उच्च पदाधिकारी थे, जैसे कि जूकॉव और यूरोपीय देशों की कम्युनिस्ट पार्टी के कुछ प्रमुख नेता, जैसे कि पीयक और एरकोली।[1] वैज्ञानिकों और विद्वानों के लिए सोवियत यूनियन की विज्ञान अकादमी का सदस्य होना एक प्रकार की छूट

१. जो अब अपने असली नाम टोगलियाटी से जाना जाता है।

थीं, जिसके फलस्वरूप कई पुराने विद्वान् गिरफ्तार होने से बच गए; किन्तु यह बात सब जगह समान रूप से लागू नहीं, क्योंकि यूक्रेन और अन्य जन-तन्त्रों के विज्ञान एकाडमी के विद्वानों को गिरफ्तार किया गया था। हमें कई ऐसे उदाहरण भी मालूम हैं जिनमें प्रान्तीय वैज्ञानिकों को अपनी जाँच के समय राजनीतिक कठिनाइयों में फँस जाना पड़ा और जब गिरफ्तार होने की नौबत आ गई तो उन्होंने मास्को की किसी शैक्षणिक संस्था में अपना तबादला करवा लिया और इस प्रकार वे गिफ्तारी से बिलकुल बच गए या गिरफ्तार होने के थोड़े समय बाद ही रिहा कर दिये गए।

गिरफ्तार किए जाने वाले लोगों की निम्नलिखित प्रमुख श्रेणियाँ थीं।

पार्टी-संगठन

प्रथम विचारणीय श्रेणी स्वयं कम्युनिस्ट पार्टी के उच्च और मध्यम कार्यकर्ताओं में से थी। सोवियत रूस की घटनाओं से अपरिचित लोगों को यह एक अजीब बात नजर आएगी कि देश के शासक-दल में सक्रिय भाग लेने वालों में भी वे 'बाहरी गुण' हो सकते हैं जिनके कारण उनकी गिर-फ्तारी हो जाय। लेकिन इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि केवल कुछ सर्वोच्च अधिकारी, पोलितब्यूरो के कुछ सदस्य और देश के कुछ मुख्य पदा-धिकारियों को छोड़कर, पार्टी के प्रायः सब बड़े अधिकारियों को १६३६ और १६३६ के बीच गिरफ्तार कर लिया गया। इनमें प्रान्तीय, प्रादेशिक, जिला और नगर-समितियों के प्रायः सब मन्त्री तथा सब बड़े औद्योगिक कार्य-कलापों, ट्रस्टों, यातायात कम्पनियों और कल-कारखानों से सम्बन्धित समितियाँ भी थीं। विश्वविद्यालय, हाई स्कूल, वायरलेस समिति और प्रकाशन-गृह-जैसी अन्य संस्थाओं के मन्त्री भी गिरफ्तार कर लिये गए। इस सम्बन्ध में यह ध्यान रखना चाहिए कि सोवियत संस्थाओं में मन्त्री-पद परम्परागत रूप से उस संस्था के वास्तविक नेता को ही मिलता है। यह परम्परा इसलिए आरम्भ हुई क्योंकि लेनिन के समय से ही स्तालिन कम्युनिस्ट पार्टी का मन्त्री था।

येझोव-काल में उच्च पार्टी-अधिकारियों की गिरफ्तारी एक ऐसी चीज

थी जिसके लिए सोवियत यूनियन का ढाँचा बिल्कुल तैयार नहीं था, किन्तु वह उस राज्य का एक विशिष्ट गुण था। इसकी विस्तृत विवेचना हम आगे चलकर करेंगे। यहाँ हम केवल यही कहेंगे कि इसके परिणामस्वरूप एक पूर्णतः नये पार्टी-संगठन का निर्माण हुआ, यद्यपि इसमें भी ऊँचे पदों पर पहले ही लोग थे। जब इनमें से एक से एक प्रमुख विद्वान् ने पूछा कि क्यों इतने अधिक देशी और विदेशी कम्युनिस्टों को गिरफ्तार किया गया तो उसने उत्तर दिया, "आप क्या आशा करते हैं? कम्युनिस्ट वे लोग हैं जिन्होंने स्वयं अपनी सरकार की आलोचना की है और दिखा दिया है कि वे उसके खिलाफ़ कार्यवाही करने में समर्थ हैं। ऐसे लोगों को सोवियत यूनियन में प्रमुख पदों पर कैसे रहने दिया जा सकता था?" निश्चय ही इस उत्तर में सत्य का कुछ अंश छिपा हुआ है।

गिरफ्तार पार्टी-अधिकारियों में तीन प्रमुख किस्म के लोग नजर आते थे। पहली किस्म में थे पुराने बोल्शेविक जो कि पहले मजदूर, सिपाही या मल्लाह थे। इनमें से अधिकांश आदर्शवाद के कारण पार्टी के सदस्य बने थे। पार्टी के अन्दर वर्षों तक उत्तरदायी प्रशासनीय कार्य करने के कारण उनमें से बहुतों ने एक ऊँचे दर्जे की संस्कृति प्राप्त कर ली थी और साथ ही व्यावहारिक ज्ञान का एक बड़ा भण्डार इकट्ठा कर लिया था। इनमें से अधिकांश गम्भीर व्यक्ति थे जो अपने उत्तरदायित्व को समझते थे। ट्रॉस्कीवादी और बुखारिनवादी निकाले जा चुके थे, किन्तु इस तरह के अधिकांश पार्टी-सदस्य पार्टी-नीति से सदा सहानुभूति न रखते हुए भी चुप रहते थे और इसीलिए वे बने रहे। पार्टी के पुराने सदस्यों में इस किस्म के लोग ही वास्तव में ज्यादा थे। वे यह नहीं समझ सकते थे कि सोवियत यूनियन उस क्रम में पदार्पण कर चुकी है कि जिसमें उन लोगों की जरूरत नहीं जो कि क्रान्तिकारी आदर्शों के लिए लड़े थे। इन लोगों ने अनिच्छा के साथ किन्तु आज्ञापूर्वक धनी किसानों के विनाश में सहायता दी; पर फिर भी नई पार्टी के लिए रास्ता साफ करने के लिए इनका हटना जरूरी था। वर्गनों का प्रसिद्ध वाक्य "क्रान्ति स्वयं अपने बच्चों को हड़प जाती है" शायद खास

तौर पर इन्हीं लोगों के लिए गढ़ा गया हो।

दूसरी किस्म थी उन लोगों की जो स्तालिन द्वारा बनाई हुई पार्टी-नीति के सच्चे और पक्के समर्थक थे। इनमें वे लोग थे जिन्होंने पार्टी-अनुशासन पर अपना समस्त जीवन आधारित कर रखा था, जो कि पार्टी-अनुशासन का धर्मान्धता के साथ पालन करते थे। जिस आदर्श के लिए वे सब-कुछ बलिदान करने के लिए तैयार थे वह स्तालिन नहीं था बल्कि पार्टी थी जो कि पोलितब्यूरो में मूर्तिमत होकर स्तालिन की अध्यक्षता में थी। वे किसी खास दबाव के बिना ही सब स्वीकार कर लेते थे, क्योंकि पार्टी उनसे यह बलिदान चाहती थी और किसी कारणवश इस बलिदान माँगने का कारण न बताना चाहती थी।

इस समूह का एक आदर्श प्रतिनिधि लेविन था जो कि एक ज़िला-समिति का भूतपूर्व मन्त्री और कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति का सदस्य तथा १९१७ से पार्टी का सदस्य था। प्रसंगवश यह कहा जा सकता है कि वह मास्को पार्टी-समिति के मन्त्री और बाद में पोलितब्यूरो के प्रसिद्ध सदस्य श्चरबाकॉव का साला या बहनोई था, पर इस रिश्तेदारी ने उसकी मदद न की। जब जाँच करने वाले मजिस्ट्रेट ने उसे बताया कि उसकी बीवी ने उसे जनता का शत्रु होने के कारण तलाक़ दे दी है तो वह रोता हुआ अपनी कोठरी में वापस लौटा। कोठरी में अपने साथियों के बीच वह अपने-आपको कट्टर पार्टी-नीति का हिमायती बताता। वह शासन की तनिक-सी भी आलोचना या किसी प्रकार के असन्तोष की भावना को ज़रा भी बरदाश्त नहीं कर सकता था। वार्तालाप में या कैदियों द्वारा दिए जाने वाले व्याख्यानों में आ जाने वाली सैद्धान्तिक त्रुटियों की निन्दा करने से वह कभी नहीं चूकता। उसकी वर्ग-चेतना प्रशंसनीय थी। उसका चरित्र कलंकरहित और दृढ़ था और वह अपने कटु अन्त तक एक सच्चा आदर्श-वादी बना रहा। एक बार उसने सीख देने वाली एक कहानी सुनाई, जिसकी बचपन की सीख सोवियत जनता के एक बड़े भाग के दृष्टिकोण का प्रति-निधित्व करती थी।

"एक माँ अपने बच्चे को किसी मूर्खतापूर्ण कृत्य के लिए दण्ड देती है जिसके लिए वह बालक निर्दोष है," उसने कहा। "बच्चे को यह अन्याय बुरा लगता है और वह रोता हुआ अपने बाप के पास दिलासा पाने के लिए जाता है। बाप कहता है, 'माँ ने तुम्हारे साथ बुरा किया। आओ हम एक नई माँ ढूँढ लाएँ।' लेकिन बच्चा फूट-फूटकर रोने लगता है और अपने-आपको अपनी माँ की गोद में डाल देता है—उस माँ की गोद में जो कि अन्यायी थी, जिसने उसे ग़लत बात पर सज़ा दी थी, लेकिन जो कि फिर भी उसी की माँ थी।"

एक तरह से लेनिन ठीक था। सोवियत जनता का एक बड़ा भाग सोवियत शासन के कई पहलुओं से असन्तुष्ट होते हुए भी सोवियत राज्य को अपनी माता समझता था और उसके स्थान पर अन्य कोई राज्य नहीं चाहता था।

तीसरी किस्म के पार्टी-अधिकारी पहली दोनों किस्मों से बिलकुल भिन्न थे। इनमें वे लोग थे जो बहुत दिनों बाद जाकर पार्टी के सदस्य बने थे और वह भी मुख्यतः व्यक्तिगत आकांक्षाओं की सन्तुष्टि के लिए। वे लोग वास्तव में अवसरवादी थे। वे लोग पार्टी-अनुशासन को स्वाभाविक समझकर स्वीकार कर लेते थे और प्रत्येक प्रश्न पर पार्टी की नीति को पहले से ही समझ लेने की उन्होंने दक्षता प्राप्त कर ली थी और उस नीति के हर तोड़-मरोड़ का बड़ी मुस्तैदी के साथ अनुसरण करते थे। पार्टी के प्रति उनकी स्वामि-भक्ति इतनी अटल थी कि अक्सर वे राजा से भी ज़्यादा राज-भक्त नज़र आते थे। जैसे-जैसे सोवियत जीवन एक धर्म-शासन की भाँति विभिन्न पदों का एक क्रम बनता गया इन लोगों ने अपने उत्तरोत्तर बढ़ते हुए विशेषाधिकार-प्राप्त पदों की समुचित प्रशंसाओं और सुविधाओं को स्वीकार किया। पार्टी के वे अनेक गैर-सदस्य भी इस किस्म में शामिल थे जिन्हें गैर पार्टी बोलशेविक या सोवियत सक्रियवादी कहा जाता था और जिनकी आकांक्षाओं की पराकाष्ठा पार्टी में प्रवेश पाना था। किन्तु खेद है कि पार्टी के प्रति अपनी स्वामि-भक्ति और लगन के बावजूद भी उन्होंने

अपने-आपको जेलों में पाया, क्योंकि वे बहुत ऊँचे पदों पर पहुँच चुके थे। उनकी जगह सामान्यतः उनकी किस्म के ही अपेक्षाकृत युवा पार्टी-अधि-कारियों ने ले ली।

पार्टी के पदाधिकारी एक के बाद एक करके शीघ्रतः गिरफ्तार होने लगे। इतने शीघ्र परिवर्तन होने लगे कि ऐसा मालूम होता था कि एक ही काम को कई अधिकारियों से बदल-बदलकर करवाया जा रहा है। नतीजा यह हुआ कि जीवन-वृत्ति को ही सब-कुछ समझने वाले लोगों ने प्रमुखता प्राप्त कर ली। पदावधि की अल्पकालीनता किसी जान-बूझकर बनाई गई व्यवस्था के कारण नहीं थी, किन्तु इसके फलस्वरूप सोवियत यूनियन में कई विशिष्टताएँ नजर आने लगीं। जीवन-वृत्ति के पीछे भागने वाले लोगों ने अपनी अटलता और लगन दिखाने के लिए पार्टी-नीति को बेवकूफी की हद तक पहुँचा दिया जिसके फलस्वरूप अन्त में वे पथभ्रष्ट करार दिये गए। इस किस्म के लोग स्वभाव से भ्रष्टाचार की ओर झुके हुए थे और अपने निजी स्वार्थ के लिए अपने पदों से लाभ उठाते थे। उन्होंने अपने कार्यों से जनता में और विशेषतः अपने नीचे काम करने वालों में अपने लिए घृणा और द्वेष उत्पन्न कर दिया और यह भी उनकी पदावधि की अल्प-कालीनता का एक कारण था।

लाल लड़ाके, पुराने बोलशेविक और राजनीतिक अभिशस्त व्यक्ति

गृह-युद्ध में लाल लड़ाकों ने एक प्रमुख भाग लिया था। वर्षों तक वे श्वेत सेना के मोर्चे के पीछे रहकर गुरेला-युद्ध चलाते रहे थे और कम्युनिस्ट विजय में उनका निश्चयात्मक सहयोग था। लाल लड़ाका होना सोवियत यूनियन में सदा एक उच्च सम्मान का सूचक था और १९४० की दशाब्दी तक लाल लड़ाकों को अधिकृत रूप से वही सम्मान प्राप्त था। खाद्याभाव के जमाने में और खाद्य-कार्ड-पद्धति के उन्मूलन से पूर्व लाल लड़ाकों को विशेष राशन और विशेषाधिकार दिए जाते थे। उदाहरण के लिए उन्हें ट्रॉली गाड़ियों के बाहरी हिस्सों में सफर करने की इजाजत थी जो कि रूस में एक महान विशेषाधिकार समझा जाता था, क्योंकि ट्रॉलियाँ हमेशा ही

ही लाल लड़ाकों और पुराने बोलशेविकों को रखा जाना चाहिए। वे सब अपनी-अपनी संस्थाओं में संगठित थे और प्रायः सभी शुद्धीकरण के शिकार बने। इन पर यह अभियोग लगाया गया कि जारशाही गुप्त-पुलिस ओख्राना ने इन्हें यदि क्रान्ति सफल हो तो क्रान्ति-विरोधी कार्यवाही करने के लिए गुप्तचरों और जनता को भड़काने वालों के रूप में रखा था। इन लोगों ने अपने जीवन के उत्तम वर्षों को जारशाही शासन के विरुद्ध संघर्ष करने में व्यतीत किया था, फलतः यह अभियोग इनके लिए अपमानजनक थे। किन्तु पूछताछ के तरीके ऐसे थे जिन्होंने इन्हें उपयुक्त अपराध-स्वीकृति के लिए बाध्य कर दिया। यह समझना मुश्किल नहीं है कि जब इन लोगों ने येझोवकालीन सजा की जारशाही जमाने की राजनीतिक कैद से तुलना की तो वे विरोध नहीं कर पाए। जो-कुछ उन पर बीत रही थी उसकी तुलना में, जैसा कि उन्होंने बिना अपवाद बताया, जारशाही जमाने का उनका अनुभव एक सुखद स्वप्न था। भूतपूर्व 'काटोरगा' राजनीतिक बन्दियों की संस्थाएँ लाल लड़ाकों की संस्थाओं की तरह ही भंग कर दी गई थीं।

सेना

तानाशाही की कला राज्य के उन विभिन्न तत्त्वों के संतुलन में ही है जिन पर तानाशाह की शक्ति निर्भर करती है, अर्थात् एक-दूसरे को लड़ाते रहना और यह देखना कि कोई भी बहुत शक्तिशाली न बन जाय। इस काम के लिए तानाशाह के पास अक्सर एक हथियार होता है, जो कि राज्य के समस्त तत्त्वों को चिंतित बनाए रखने में सफल होता है। इस हथियार का खास काम तानाशाही की सुरक्षा को बनाए रखना है।

जैसे-जैसे तानाशाही के अंकुश के नीचे एन० के० वी० डी० एक राज्य के अंतर्गत दूसरा राज्य बनकर इस हथियार के रूप में विकसित होने लगा वैसे ही अन्य तत्त्वों की शक्ति भंग करना आवश्यक हो गया। त्रॉत्स्कीवाद के भग्नावशेषों और त्रॉत्स्की के स्थायी क्रान्ति के सिद्धान्त नष्ट कर देने तथा रूस से बाहर कॉमिण्टर्न की सबसे शक्तिशाली पार्टी की हार के बाद

साम्राज्यवाद और सैनिक विजय के पथ पर तानाशाही अग्रसर होने लगी इस नीति को कार्यान्वित करने में लाल सेना को एक बड़ा भाग सौंपा गया, अतः उसके लिए तानाशाह के हाथों में पूर्ण रूप से रहना आवश्यक हो गया।

इस नीति-परिवर्तन के बाहरी चिह्न दिखाई देने लगे थे। बड़े सैनिक अधिकारियों को अपनी महत्ता का भान होने लगा था। उन्हें अच्छे रहन-सहन की विशेष सुविधाएँ प्रदान की जाने लगीं और उच्च अधिकारियों को अच्छे-अच्छे मकान और बड़ी-बड़ी तनख्वाहें मिलने लगीं। वे शान-शौकत से रहने लगे। हर रोज दावतें होतीं और नाच-गान तथा सेना का परम्परागत सम्बन्ध पुनः स्थापित हो गया। उच्च अधिकारीगण अपने-आपको पार्टी और एन० के० वी० डी० से अधिकांशतः स्वतन्त्र समझने लगे। सैनिक क्षेत्रों में पार्टी-नेताओं का आम तौर पर मजाक उड़ाया जाने लगा। "जिन्दगी बेहतर थी, जिन्दगी ज्यादा सुखी थी।"

सम्भव है कि कुछ क्षेत्रों में सैनिक तानाशाही के विचार से भी खेल खेला गया हो। 'बोनापार्टिस्ट षड्यन्त्र' था या नहीं, जैसा कि अधिकृत रूप से बताया गया और जैसा कि बाहरी देशों में बहुत लोगों का विश्वास था, पर यह किरोव की हत्या-जैसी ही एक जटिल समस्या बन गई थी।

तथ्य असल में यह है कि मार्शल तुखाचेवस्की को, जो कि १६२० में पोलैण्ड के विरुद्ध की गई कार्यवाही का नेता थे और स्कूलों की प्रत्येक पाठ्य-पुस्तक में जिनका चित्र पाया जाता था, गिरफ्तार कर लिया गया और एक बन्द कमरे में उन्हें सजा सुना दी गई, जहाँ हरेक को जाने की इजाजत नहीं थी और अन्त में घोषणा की गई कि उन्हें गोली मार दी गई है। उनके बाद और बहुत से लोगों को गिरफ्तार किया गया। सोवियत यूनियन के प्रायः प्रत्येक सैनिक कमाण्ड के प्रधान सेनापति गिरफ्तार कर लिये गए, जिनमें माकिरे भी था, जो कि लाल सेना का सबसे अधिक विख्यात व्यक्ति और क्रान्ति द्वारा उत्पन्न हुए सैनिक संगठन के नये नेताओं का वास्तविक प्रतिनिधि था। राजनीतिक प्रशासन के अध्यक्ष गामारनिक ने आत्महत्या कर

लीं। एक उपलब्ध सूचना के अनुसार, जो पूर्णतया विश्वसनीय प्रतीत होती थी, हमें मालूम हुआ कि सोवियत यूनियन के ५ मार्शलों में से २, १५ सेनापतियों में से ६, ५८ कोर कमाण्डरों में से २८, १६५ डिवीजनल कमाण्डरों में से ८५ और ४०३ रेजीमेण्टल कमाण्डरों में से १६५ ऐसे थे जो गिरफ्तारी से बच पाए। यह गिरफ्तारियाँ केवल उच्च पदाधिकारों तक ही सीमित न थीं। गिरफ्तार अफसरों के अनुमान के अनुसार लड़ाई के मोर्चे के पदाधिकारियों में से ६० से ७० प्रतिशत लोग गिरफ्तार किये गए। इन अंकों से यह स्पष्ट है कि जिस अफसर का पद जितना ही ऊँचा होता उसकी गिरफ्तारी की सम्भावना उतनी ही अधिक बढ़ जाती थी। उदाहरण के लिए एक साधारण मेजर या मोर्चे के पद से निम्न पदाधिकारी को केवल इसीलिए गिरफ्तार नहीं किया जाता था क्योंकि वह अफसर था। हमें जेल की कोठरियों में कई छोटे अफसर ऐसे मिले जो कि सम्पूर्णतः भिन्न कारणों को लेकर गिरफ्तार किये गए थे—जैसे कि किसी राष्ट्रीय अल्पसंख्यक जाति का सदस्य होना, या कभी विदेश होकर लौट आना, या बाहरी देशों से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध रखना।

सेना से सम्बन्धित प्रशासनीय और टेक्निकल अथवा शैक्षणिक संस्थाओं के गैर-सैनिक कर्मचारियों को भी इसी सैनिक श्रेणी में गिना गया। उदाहरण के लिए यूक्रेन की एक सैनिक अकादमी के समस्त शैक्षणिक और प्रशासनीय कर्मचारी, जिनमें स्टेनोग्राफर तक शामिल थे, गिरफ्तार कर लिये गए।

अफसरों में दो खास किस्में थीं। प्रथम उच्च पदों में वे अफसर थे जो कि क्रान्ति से पूर्व भी अफसर रह चुके थे और जो कि लाल सेना के निर्माण पर उसमें भरती हुए थे। लेनिन ने अपने एक प्रसिद्ध भाषण में बताया कि लाल सेना में रहकर लड़ने वाले क्रान्ति के पूर्व अफसरों की संख्या नगण्य नहीं थी। तुखाचेव्स्की भी इन्हीं अफसरों में शामिल था।

अक्तूबर-क्रान्ति और गृह-युद्ध में भाग लेने वाले और इसी कारण तरक्की पाने वाले अफसरों में श्रमजीवी-वर्ग के या निम्न वर्गों से ऊँचे उठे

हुए व्यक्ति भी थे।

डोनेट्स क्षेत्र के [illegible] स्थित एक बड़े मशीन-टूल्स के [illegible] अधिकारी ने बताया कि दुर्घटनाएं या देश के गद्दारों और उनकी तुच्छ-शक्ति का [illegible] असम्भव था। इससे यह [illegible] समझाया गया कि [illegible] और [illegible] फासिस्ट दुश्मनों के हुक्म पर उनके खाद्य-सामग्री को [illegible] कर या जान-बूझकर उसे खराब होने देकर खाने के काबिल न रखा। इस मामले की जांच करने के लिए भेजे हुए अनेक डाक्टरों और जांच करने वाली समितियों के सदस्यों को भी गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद नये नियुक्त हुए कर्मचारियों ने इस जिम्मेदारी का भार उठाने का साहस नहीं किया और खाने-पीने का इकट्ठा हुआ सारा सामान नष्ट कर देना पड़ा।

टेकनिशियन और विशेषज्ञ

औद्योगिक क्षेत्र के टेकनिशियनों और विशेषज्ञों की दशा भी सामान्यतः अन्य श्रेणियों के लोगों-जैसी ही थी। औद्योगीकरण की नीति थी कि उत्पादन कार्य में लगे हुए लोगों को पूरी तरह डरा-धमका कर रखा जाए। १९३० की दशाब्दी के आरम्भ से इन लोगों के खिलाफ [illegible] के मुकदमे और गिरफ्तारियों का एक महान् आन्दोलन छेड़ा गया, अतः [illegible] आनको यह श्रेय दे सकते थे कि उनने इस प्रकार के [illegible] वैज्ञानिक विरोध को कुचल दिया है और साथ ही वह इन लोगों से डरा-धमकाकर काम भी ले सकते थे। किन्तु यह आन्दोलन सोवियत काल से पूर्व के टेकनिशियनों के लिए ही खास तौर पर था। उन जमाने में ऐसे बहुत कम लोग थे जो सोवियत काल में पलकर बड़े हुए हों। प्रमुख इंजीनियरों ने एक तथाकथित 'उद्योग-पार्टी' के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया था जिसका लक्ष्य सोवियत राज्य से सत्ता छीन लेना बताया जाता था। किन्तु यह आन्दोलन जल्दी ही समाप्त हो गया। गिरफ्तार इंजीनियरों और विशेषज्ञों के एक बड़े भाग को, विशेषतः तोड़-फोड़ का अपराध स्वीकार करने वालों को, पुनः मुक्त कर दिया गया और वे फिर अपने पुराने [illegible]

और कई लोगों की तो तरक्की भी कर दी गई। किन्तु येभ्जोव-काल में प्रायः उन सबको ही दुबारा जेल जाना पड़ा—खास तौर पर उन लोगों को जिन्होंने अपराध स्वीकार करने से पहले इन्कार किया था। इस बार उनके साथ सोवियत ट्रेनिंग पाये हुए अपेक्षाकृत युवा साथी भी थे जो इस बीच बड़े हो चुके थे और जिन्हें सरकार के असंख्य प्रचार-प्रकाशनों में विशेष गर्व का कारण बताया जा चुका था। पुराने विशेषज्ञों ने ज्यादा दबाव पड़े बिना ही अपना-अपना अपराध स्वीकार कर लिया था किन्तु उनके युवक साथियों ने बहुधा दृढ़ विरोध प्रदर्शित किया।

भारी उद्योग-मन्त्रालय के प्रमुख व्यक्तियों के खिलाफ दिखावे के मुकदमों का एक क्रम आरम्भ करके टेकनिशियनों का शुद्धीकरण आरम्भ हुआ, जिनमें उपमन्त्री पियातकॉव का मुकदमा सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण था। सोवियत यूनियन के नये भारी उद्योग को जन्म देने वाला वह प्रधान कार्य-पालक और असली नेता था। पोलितब्यूरो के सदस्य और स्तालिन के एक निकटतम साथी स्येर्गो ऑरझोनिकिद्ज़े नामक जॉर्जिया-निवासी का अधिकार भारी उद्योग-मन्त्रालय में था। शायद ही कभी किसी इतने उच्च पदाधिकारी के बारे में लोगों की एकमत के साथ इतनी अच्छी राय हो। सोवियत जीवन के अन्य प्रमुख व्यक्तियों के विपरीत वह अपनी विनम्रता, दयालुता तथा सम्मानित चरित्र के लिए सार्वत्रिक रूप से लोकप्रिय था और अपने गुणों के कारण वह अपने निम्न अधिकारियों के आदर और स्नेह का पात्र बन चुका था। पियातकॉव के मुकदमे के थोड़े दिनों बाद ही वह मर गया। यह प्रमाणित नहीं किया जा सकता कि उसकी हत्या की गई या नहीं, लेकिन उसके मरने के बाद बहुत दिनों तक यह अफ़वाह जारी रही कि उसे मार डाला गया था। हमें यह अधिक सम्भव प्रतीत होता है कि वह बूढ़ा और रोगी आदमी अपने द्वारा बनाये गए संगठन का विनाश और अपने घनिष्ठतम तथा निकटतम साथियों का अन्त देखकर जीवित नहीं रह सकता था।

भारी उद्योग-मन्त्रालय के प्रमुख इंजीनियरों की गिरफ्तारी के बाद

व्यवस्थापकों और विशेषज्ञों की बेशुमार गिरफ्तारियाँ शुरू हुईं। हल्के उद्योग, खाद्य, लकड़ी, कृषि आदि के अन्य मन्त्रालयों में तथा वैज्ञानिक एवं टेकनिकल अनुसन्धान-संस्थाओं में भी इसी प्रकार की कार्यवाही जारी की गई।

चूँकि यह इंजीनियरों का प्रथम शुद्धीकरण न था, अतः इसने लोगों का ध्यान विशेष आकृष्ट नहीं किया। केवल एक इंजीनियर या टेकनिशियन होना ही गिरफ्तारी की सम्भावना पैदा नहीं करता था, जब तक कि पार्टी का सदस्य होना, किसी उद्योग का व्यवस्थापक होना या बाहरी देशों से सम्बन्ध रखना आदि बातें मौजूद न होतीं।

टेकनिकल बुद्धिजीवी वर्ग के एक दिलचस्प प्रतिनिधि के रूप में हम उस एक व्यक्ति का उदाहरण पेश करते हैं जो कि यूक्रेन के लकड़ी उद्योग और वन-विभाग में एक प्रमुख पद पर था। १६३० की दशाब्दी के आरम्भ में वह एक दिखावे के मुकदमे में पेश हुआ था, और उसने अपराध स्वीकार किया था कि लकड़ी के पुराने मालिकों के लिए लकड़ी छोड़ देने की नीयत से उसने बहुत कम लकड़ी कटवाई थी; और 'उद्योग-पार्टी' का यही लक्ष्य था कि पुराने मालिकों को उनके अधिकार पुनः प्राप्त हो जायँ। उसे दस वर्ष की बेगारी की सजा दी गई, लेकिन एक साल पूरा होने से पहले ही उसे रिहा कर दिया गया और मन्त्रालय में पहले से अधिक ऊँचा पद दिया गया। बाद में उससे यह अपराध मनवाया गया कि उसने जरूरत से ज्यादा लकड़ी कटवा दी थी ताकि सोवियत यूनियन के जंगलात बरबाद होकर घास के मैदानों में बदल जायँ। उसने हमें बताया कि जिन्होंने पहली बार अपराध स्वीकार किया था उन्हें अधिकांशतः दस वर्ष के बलात्-श्रम की सजा मिली थी लेकिन कुछ समय बाद ही उन्हें रिहा कर दिया गया था। जिन्होंने अपराध मानने से इन्कार किया था उन्हें केवल तीन वर्ष की ही सजा मिली थी, पर उन लोगों को फिर कभी किसी ने नहीं देखा। वन-विभाग के एक अन्य कर्मचारी को स्वीकार करना पड़ा कि उसने पोलिश-सीमा के पास के जंगलों में पोलिश या जर्मन टैंकों के आने के लिए खास तौर पर रास्ते बनवा दिए थे। हमें बताया गया कि चीनी के बर्तन बनाने वाली एक स्त्री विशेषज्ञ

ने सिगरेट की राख झाड़ने के लिए एक षट्कोण कटोरी बनाई, जो कि सोवियत होस्टलों और होटलों तथा विशेषतः विदेशी यात्रियों के होटलों के लिए हजारों की तादाद में तैयार की गई। अगर उस कटोरी को उल्टा करके उसके तीन नोकों को पेंसिल की रेखा से जोड़ दिया जाता तो जियोनिस्ट निशान बन जाता था। अतः उस स्त्री पर 'विदेशी फासिज्म' की आज्ञानुसार डिजाइन बनाने का अभियोग लगाया गया। कई हजार नई कटोरियाँ नष्ट कर दी गईं। एक बूढ़े इंजीनियर पर, जिसने एक बड़ी वैज्ञानिक संस्था बनाई थी, अभियोग लगाया गया कि उसने उस संस्था को नात्सीवाद का गौरव बढ़ाने के लिए अर्द्ध-स्वस्तिका का रूप दिया था।

विदेशीजन और 'विदेशी गुप्तचर'

अब हम येज़ोवकालीन शुद्धीकरण की सबसे महान और सबसे महत्त्व-पूर्ण श्रेणियों पर आते हैं। इन श्रेणियों का 'बाहरी गुण' था किसी विदेशी राज्य से सम्बन्ध रखना। इस श्रेणी के प्रायः प्रत्येक व्यक्ति पर किसी विदेशी राज्य की ओर से जासूसगिरी करने का जुर्म लगाया गया। इन विदेशी राज्यों में आम तौर पर जर्मनी, जापान या पोलैण्ड, कभी-कभी अन्य सीमान्त देश या इटली या कुछ मामलों में तुर्की अथवा 'ब्रिटिश साम्राज्यवाद' को शामिल किया जाता था।

कई विदेशियों ने सोवियत व्यवस्था में ईमानदारी के साथ काम करने की कोशिश की थी और उन्हें उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई थी। रूस में आने वाले श्रमजीवियों की भीड़ को, विशेषतः मन्दी के वर्षों में आने वाले लोगों को, दो समूहों में बाँटा जा सकता है। यद्यपि विभाजन-रेखा सदैव स्पष्ट न थी। पहले हिस्से में वे बेकार विदेशी लोग थे, खास तौर पर जर्मनी से आये हुए लोग, जिन्हें अच्छा काम करना नहीं आता था। बेकारी के जमाने में स्वभावतः उन्हीं लोगों को पहले नौकरी से निकाला जाता है जो कि अच्छे काम करने वाले नहीं होते और इन लोगों में से अनेक ऐसे थे जो कि सुरक्षा और अच्छे जीवन की सम्भावना से आकृष्ट होकर रूस आये थे। आम तौर

नहीं गए थे । इनमें से अनेक १९३३ से पहले के वर्षों में रूस गये हुए थे । इनके अलावा इनमें विशेषज्ञ आर्किटेक्ट, इंजीनियर, डिज़ाइनर और वैज्ञानिक थे जो कि समाजवाद स्थापित करने की भावना से ही केवल प्रेरित होकर काम करते थे । यह न भूलना चाहिए कि आर्थिक संकट के वैज्ञानिक निर्देशन के अन्तर्गत समाजवादी योजना से बनी हुई अर्थ-व्यवस्था ने लोगों को कितना आकृष्ट किया, जहाँ न बेकारी थी और जहाँ वैज्ञानिकों तथा इंजीनियरों के लिए वे सम्भावनाएँ थीं जो कि अन्य किसी अर्थ-व्यवस्था में कहीं भी उपलब्ध नहीं हो सकती थीं ।

राजनीतिक शरणार्थियों की एक बड़ी संख्या को, जिनमें ज्यादातर न कि सभी कम्युनिस्ट थे, सोवियत यूनियन में आश्रय और काम मिला । इनमें स्वभावतः कई विचित्र अतीत वाले रोमांचकारी व्यक्ति भी थे ।

मास्को में कॉमिन्टर्न और अन्तर्राष्ट्रीय रेड यूनियन, अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक संघ, अन्तर्राष्ट्रीय कृषक संघ, स्वतन्त्र विचारक संघ आदि जैसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के सदस्य और कर्मचारीगण भी थे ।

अब इन सब विदेशियों पर जासूसगिरी का शक होने लगा ।

समस्त विदेशियों के लिए ही ऐसी स्थिति समान रूप से संकटमय न थी । पश्चिमी यूरोपीय राज्यों और संयुक्त राज्य अमेरिका से आये हुए विशेषज्ञों, जिनमें सबसे पहले चेकोस्लोवाकिया के विशेषज्ञ, की कार्यवाही बढ़ाई नहीं गई और कई बार तो इन विदेशियों को अचानक निकाल बाहर किया गया जब कि इन्होंने सोवियत नागरिकता के लिए आवेदन भी कर रखा था । अनेक जर्मन और ऑस्ट्रेलियन विशेषज्ञों के साथ भी यही कार्यवाही की गई । वे जितने ही ज्यादा सोवियत विचारधारा के खिलाफ़ होते उनके बाहर निकाले जाने की सम्भावना उतनी ही अधिक होती । अजीब बात है कि जो सोवियत यूनियन की विचारधारा से जितना ही निकट होता उतना ही ज्यादा उसके लिए खतरा बढ़ जाता । जर्मन, आस्ट्रियन, पोल और किसी हद तक इटालियनों को सबसे ज्यादा खतरा था ।

विदेशियों के मकान एक के बाद एक करके खाली होने लगे । उदाहरण

के लिए मास्को में विदेशी विशेषज्ञों ने अपने साथ लाई हुई विदेशी पूँजी से सहकारिता के आधार पर कुछ फ्लैट बनवा लिए थे ताकि उन्हें रहने की जगह जल्दी मिल सके। इनमें से ऐसा कोई भी घर न था जहाँ के रहने वाले गिरफ्तारी से बच पाए हों, ज्यादातर घर ऐसे थे जिनके रहने वाले जल्दी-जल्दी बदलते जाते थे। जेल की कोठरियों में हर जगह विदेशी दिखाई देते थे। प्रायः सभी काम सीखे हुए साधारण विदेशी श्रमजीवी शुद्धीकरण के शिकार बने और जेल की कोठरियों में यदाकदा ऐसे विदेशी भी मिलते थे जो कि अकस्मात ही जाल में फँस गए थे।

बहुत से चीनी एक अद्‌भुत तर्कानुसार गिरफ्तार किये गए थे जिसे समझने में वे पूर्णतया असमर्थ थे; वे प्रायः सभी जापानी जासूस करार किये गए थे। जासूसगिरी के अलावा उन्हें अन्य बातें भी स्वीकार करनी पड़ी थीं। वे बड़ी सफाई-सुथराई से रहते और बड़े अजीब पुराने तरीकों से अपने कपड़ों को धोकर साफ रखते थे। हरेक चीनी के पास सफेद उजले धुले और सावधानी के साथ तह किये हुए कपड़ों का एक बण्डल होता था जिन पर वह चाय की केटली से स्तरी कर लेता था। वे ही सिर्फ ऐसे लोग थे जो कि दूसरों की तरह भूखे होने पर भी रोटी देकर साबुन ले लिया करते थे। अपने घर से कभी-कभी आये हुए उपहारों को सौजन्यता और सम दृष्टि के साथ आपस में उनका बाँट लेना जितना प्रशंसनीय था उतना ही कष्टों को सहने का माद्दा भी प्रशंसनीय था।

जासूसों की खोज की शिकार बनने वाली एक अन्य जाति एसीरियन भी थी। शुद्धीकरण के दौरान में उन्हें 'तुर्की जासूस' या 'ब्रिटिश साम्राज्यवाद' का एजेण्ट बताया गया।

"विदेशी एजेण्ट"

विदेशी राज्यों से सम्बन्ध रखने के कारण जासूस करार करके गिरफ्तार किए जाने वालों की श्रेणी वास्तविक विदेशियों से कहीं अधिक स्पष्टतः समझ में आती थी। इस श्रेणी में वे लोग थे जो कि प्रथम विश्व-युद्ध से

पूर्व रूस के जारशाही प्रान्त—पोलैंण्ड, फिनलैंण्ड और बाल्टिक राज्यों में पैदा हुए थे और वे भी शामिल थे जो स्वयं रूसी थे पर जिनके माता-पिता इन प्रान्तों में रूसी अधिकारियों के रूप में काम करते थे।

इस श्रेणी में वे रूसी भी थे जो कि विदेशों में रह चुके थे। वे खास-तौर पर खतरे में थे। इनमें से अधिकांश वैज्ञानिक थे, क्योंकि १९२५ और १९२९ के बीच सोवियत संस्थाओं की ओर से अनेक वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को जर्मनी, इंग्लैंण्ड, हालैंण्ड और संयुक्त राज्य अमेरिका की वैज्ञानिक संस्थाओं में काम करने भेजा गया था ताकि वे बाहरी देशों से वैज्ञानिक सम्बन्ध पुनः स्थापित कर सकें या नये सम्बन्ध बना सकें।

सोवियत यूनियन में बहुत लम्बे अरसे से वोक्स या वैदेशिक सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित करने वाली एक संस्था कायम थी। इस संस्था के कार्यों में विदेशी विद्वानों और कलाकारों के आगमन की व्यवस्था, सोवियत-सांस्कृतिक प्रगति और सफल कृत्यों का विदेशों में प्रचार, रूस में विदेशी पत्रिकाओं का प्रसारण, अन्तर्राष्ट्रीय सभाओं और सम्मेलनों का संगठन और रूस से बाहर होने वाले ऐसे सम्मेलनों में सोवियत प्रतिनिधित्व का प्रबन्ध भी शामिल था। एन० के० वी० डी० की नजरों में समूची वोक्स-संस्था जासूसों का एक बड़ा जाल बन गई थी और इसके कर्मचारी जर्मन, पोलिश, रूमानियन या जापानियों के वश में होने के कारण प्रायः सभी बिना अपवाद गिरफ्तार हो गए। वोक्स-संस्था १९४७ तक कायम रही और इसके नेता-गण जल्दी-जल्दी बदले जाने लगे।

बाहरी देशों से पत्र-व्यवहार करना न केवल एन० के० वी० डी० द्वारा बल्कि सोवियत जनता द्वारा भी अपराध समझा जाता था और सोवियत-जनता इस विषय में अपने विचार "आलोचना और आत्मविवेचना" सम्बन्धी सभाओं में व्यक्त करती थी। बहुत से लोग, खास तौर पर वे जिनके रिश्तेदार विदेशों में रहते थे, कई वर्षों तक इस प्रकार का पत्र-व्यवहार करते रहे, हालांकि बहुत सोच-समझकर और सावधानी के साथ वे यह काम करते थे। १९२९ से १९३५ के बीच यह पत्र-व्यवहार जारी था क्योंकि

विशेष टॉर्गसिन दुकानों में विदेशी मुद्रा देकर अन्तर्राष्ट्रीय कीमतों पर किसी भी तादाद में सोवियत यूनियन की बनी हुई चीजें जैसे कि खाने-पीने का सामान, कपड़े और दैनिक आवश्यकता की अन्य वस्तुएँ खरीदी जा सकती थीं। अकाल के जमाने में बहुत से परिवार विदेशों में रहने वाले अपने रिश्तेदारों से कभी-कभी प्राप्त होने वाले कुछ डालरों या पौंडों पर जीवित रह पाए थे और स्वभावत: इसी कारण इस पत्र-व्यवहार को कायम रखने की उन्हें प्रेरणा मिलती थी। लेकिन १९३६ के बाद इनमें से ज़्यादातर लोगों को इसका फल भुगतना पड़ा क्योंकि वे जासूसों के रूप में गिरफ़्तार कर लिये गए।

वैज्ञानिक लोग भी विदेशों में अपने साथियों से बहुत काफी पत्र-व्यवहार करते थे और बहुत से रूसी वैज्ञानिक, विशेषत: प्राकृतिक विज्ञान से सम्बन्ध रखने वाले, विदेशी पत्रिकाओं में, खास तौर पर जर्मनी और बाद मे ब्रिटेन और अमेरिका की पत्रिकाओं में अपनी खोज प्रकाशित करते थे।

एक ऐसी विशेष संस्था भी थी जो कि विदेशों में रहने वाले "सोवियत्-यूनियन के मित्रों" से पत्र-व्यवहार को प्रोत्साहन देती थी ताकि विदेशी भाषाओं के अध्ययन को प्रोत्साहन मिल सके। इस कार्य को पूर्ण रूप से प्रोत्साहन प्राप्त था।

चूँकि सोवियत यूनियन में विदेशी दूतावासों के कर्मचारियों और कूट-नीतिक प्रतिनिधियों के अलावा और भी बहुत से विदेशी रहते थे, अत: अनेक सोवियत नागरिकों का विदेशियों से सम्पर्क था। इस श्रेणी के बहुत से लोग और उनके रिश्तेदार गिरफ्तार किये गए।

प्रथम विश्व-युद्ध में जर्मनों और ऑस्ट्रियनों ने दस लाख से ज़्यादा रूसियों को कैदी बनाया। चूँकि यह अभागे 'बाहर' रह चुके थे इसलिए इन लोगों के साथ लागू किए जाने वाले तर्क के अनुसार यह जर्मन गुप्तचर-विभाग की सेवा में थे और इस कारण गिरफ्तार किए जाने वाले लोगों की श्रेणी में यह भी शामिल थे।

अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दियों में दक्षिणी रूस की विजय के

बाद बहुत से विदेशी धार्मिक यन्त्रणा अथवा आर्थिक कष्ट के कारण घर छोड़कर रूस में आ बसे थे, क्योंकि रूसी सरकार ने उनका उदारता के साथ स्वागत किया था।

रूस में यह लोग लोकप्रिय थे। खेतीबारी और रहन-सहन में वे अपने आसपास के किसानों से अधिक उन्नत थे और उन्होंने इन किसानों को खेतीबारी का बहुत काम सिखाया था। सामूहीकरण के ज़माने में इन लोगों को धनी किसानों की श्रेणी में रखा गया और खास तौर पर अधिक धनी लोगों को, कभी-कभी अपने परिवारों के साथ, साइबेरिया में निर्वासित कर दिया गया। १९३६ में सरकार ने सब जर्मन-बस्तियों को व्यवस्थापूर्वक नष्ट करना आरम्भ किया। लेकिन इस बार निर्वासन का साधारण तरीका काम में नहीं लाया गया। गाँवों के प्रायः सभी वयस्क पुरुषों को, जो कि इस बीच सामूहिक खेतों में संगठित किए जा चुके थे, अचानक गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर जर्मनों की ओर से की गई क्रान्ति-विरोधी कार्यवाहियों तथा जासूसगिरी का अभियोग लगाया गया। जेल की एक ही कोठरी में एक पिता और उसके कई बेटे अक्सर एक साथ पाए जाते थे, जिनमें सबसे छोटा लड़का करीब चौदह वर्ष का होता। बाकी परिवार को साइबेरिया और मध्य एशिया के सुदूर इलाकों में निर्वासित कर दिया जाता और उनकी अधिकांश सम्पत्ति पीछे ही रह जाती।

पोलिश-सीमा के पास रहने वाले प्रायः प्रत्येक पोलिश, यूक्रेनियन या श्वेत-रूसी परिवार को यही दुर्भाग्य झेलना पड़ा। हमारे ज़माने में सामूहिक निर्वासन की रीति को पुनर्जीवित करना सोवियत यूनियन के लिए ही बचा था जिसने अपने पश्चिमी सीमान्त की जनता तथा सुदूर-पूर्व में कोरियन-सीमा पर रहने वालों के साथ अपने व्यवहार द्वारा यह कर दिखाया। यह निर्वासन और गिरफ्तारियाँ प्रायः उसी समय हुई थीं जब कि हिटलर और मुसलिनी के समझौते द्वारा दक्षिणी टाइरोल निवासियों का सामूहिक निर्वासन आरम्भ हुआ था।

कोरियन सीमा पर करीब साढ़े सात लाख कोरिया-निवासी रहते थे।

इनमें से बहुतों ने जापानियों के घृणित शासन से भागकर रूस में शरण ली थी। उन्हें जापान की ओर से जासूसगिरी करने के जुर्म में गिरफ्तार किया गया और उनके परिवारों को ताजिकस्तान में निर्वासित कर दिया गया जहाँ के जलवायु से वे पूर्णतया अनभ्यस्त थे। इसी समय सोवियत यूनियन में रहने वाले प्रायः सभी कोरियनों को जापानी जासूस क़रार कर गिरफ्तार कर लिया गया।

सीमा पार करके चले आने वालों की एक अन्य श्रेणी थी जिसके सदस्य सचमुच अपराधी थे और जो कि पश्चिमी सीमा के पास की जेलों में बन्द पाए जाते थे। इनमें से ज़्यादातर पोलिश या रूमानियन सेनाओं से भागे हुए साहसी युवक थे या वे लोग थे जो सोवियत प्रोपेगेण्डा से आकृष्ट होकर काम पाने या शायद उन्नत शिक्षा पाने की आशा से नाजायज तरीके से सीमा पार कर आए थे।

एक बार किएव की एक जेल की कोठरी में एक नया कैदी अकेला बन्द किया गया जिसे सब वार्डनों ने उत्सुकता के साथ देखा। उन वार्डनों ने बाद में अन्य कैदियों को बड़े गौरव और सन्तोष के साथ बताया कि उन्होंने दर-असल एक सचमुच का जासूस देखा है। वास्तविक जासूसों को अलग रखा जाता था और हमें एन० के० वी० डी० के गिरफ़तार अधिकारियों ने बाद में बताया कि इन जासूसों को सज़ा देने के बाद आम तौर पर एन० के० वी० डी० के गुप्तचर-विभाग में भरती कर लिया जाता था।

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक समुदायों के सदस्य

अक्तूबर-क्रान्ति ने सोवियत यूनियन के समस्त राष्ट्रीय समुदायों को सम्पूर्ण राष्ट्रीय स्वतन्त्रता विधिवत् प्रदान की, जिसमें स्वयं लेनिन के शब्दों में "सोवियत यूनियन से स्वतः और सम्पूर्णतः पृथक् हो जाने का अधिकार" भी शामिल था। यह एक ऐतिहासिक वैचित्र्य है कि स्तालिन को सोवियत सरकार में सर्वप्रथम राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों के जन-कमिस्सार का पद मिला और इस प्रकार इस नीति को कार्यान्वित करना उसका कर्तव्य था। सोवियत इतिहास के आरम्भिक काल में भी पृथक् हो जाने के अधिकार को कभी

किसी ने सच्चा नहीं समझा।

१९३७ तक राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों को बहुत काफी सांस्कृतिक स्वतन्त्रता प्राप्त थी, यद्यपि यूक्रेन में उदाहरण के लिए, पूर्ण 'यूक्रेनीकरण' और विकेन्द्रीयकरण तथा रूसी केन्द्रीयकरण के बीच नीति भूलती रही। उदाहरण के लिए १९२० की दशाब्दी के अन्त में आदेश दिया गया कि यूक्रेनियन विश्वविद्यालय में यूक्रेनियन भाषा में ही व्याख्यान दिए जाएँ जिसका अर्थ था कि अनेक अध्यापकों और छात्रों को इस भाषा के सीखने में अपना काफी वक्त खर्च करना पड़ा और तकलीफ उठानी पड़ी, क्योंकि अनेक विषयों के लिए एक नई यूक्रेनियन शब्दावली बनानी जरूरी थी। यूक्रेनियन शिक्षा-मन्त्री स्क्रूपनिक की आत्महत्या ने इस स्थिति को समाप्त कर दिया और इसके बाद शुद्धीकरण आरम्भ हुआ जिसका ध्येय यूक्रेनियन राष्ट्रीयता को कुचलना था।

सांस्कृतिक और भाषा-सम्बन्धी मामलों में केन्द्रीयकरण और विकेन्द्रीयकरण की नीति की अदला-बदली को परास्त करने वाली राजनीतिक और उससे भी अधिक आर्थिक मामलों में सम्पूर्ण केन्द्रीयकरण की नीति थी, जिसके फलस्वरूप समस्त निर्णय मास्को में ही होते थे।

येझोव-काल के आरम्भ में सोवियत यूनियन एक रूसी राष्ट्र की दिशा में अधिकाधिक अग्रसर हो रहा था। अनेक यूक्रेनियन समाचारपत्रों के बन्द हो जाने से और राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों के स्कूलों व थियेटरों की संख्या में काफी कमी कर देने से यह दृष्टिगोचर होता था।

इस नये केन्द्रीयकरण ने आप-से-आप ही समीकरण का विरोध पुनः जाग्रत कर दिया और हमारा विश्वास है कि राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों के असन्तोष का उस समय केवल यही एकमात्र कारण हो सकता था। फिर भी एन० के० वी० डी० की फाइलों में अति व्यापक 'राष्ट्रीय षड्यन्त्रों' की रिपोर्टें प्रकाशित होने लगीं और साथ में राष्ट्रीय पार्टियों के भूतपूर्व समर्थकों के नाम भी दिए जाने लगे, जिसके फलस्वरूप बलात् भर्त्सनाओं की एक लहर उठी और बेशुमार गिरफ्तारियाँ होने लगीं। किसी एक राष्ट्रीय

अल्पसंख्यक समुदाय के प्राय: वे सब सदस्य गिरफ्तार किए जाने लगे जो कि उन इलाकों से बाहर रहते थे जहाँ कि उनकी जाति के अधिकांश लोग बसे थे। केवल जॉर्जिया और आर्मिनिया में पार्टी और सरकार के उच्च पदाधिकारियों, अधिकांश अध्यापकों, इंजीनियरों आदि को राष्ट्रीयता के अभियोग में गिरफ्तार किया गया, लेकिन यूक्रेन में, उदाहरण के लिए, प्रत्येक आर्मिनियन को बिना अपवाद गिरफ्तार किया गया चाहे उसका स्तर किसी सरकारी दुकान या जूतों पर पालिश करने वाली दुकान के व्यवस्थापक जितना ही नीचा क्यों न हो। आर्मिनियन लोग विशेषत: अभागे थे क्योंकि वे प्राय: सभी तुर्की मारकाट से बचकर आये हुए थे जिन्होंने रूस में शरण ली थी। इनमें से अनेक ऐसे भी थे जो अमेरिका या फ्रांस में रहने के बाद रूस आये थे।

'यहूदी राष्ट्रवादियों' की एक खास स्कीम थी। जियोनिज़्म के अर्थों में यहूदी राष्ट्रवाद की सोवियत यूनियन में बहुत दिनों से निन्दा होती चली आई थी और इसलिए जियोनिस्ट आन्दोलन में भाग लेना या किसी व्यक्ति के सम्बन्धियों का फिलस्तीन में जाकर बस जाना उस व्यक्ति के लिए खतरनाक था। फिलस्तीन की यहूदी राष्ट्रीय सरकार के विरुद्ध एक अन्य आकर्षण खड़ा करने के लिए सोवियत यूनियन ने सुदूरपूर्व में बिरोबिदजान नामक यहूदियों की एक स्वायत्त बस्ती बनाई थी और विदेशों में रहने वाले यूनियन के यहूदी समर्थकों में प्रोपेगेण्डा किया कि वे आकर इस जगह बसें। जब नात्सी जर्मनी में यहूदियों को सताना शुरू हुआ तो बहुत से यहूदी, शरणार्थियों ने आशा के साथ सोवियत यूनियन की दिशा में देखा, किन्तु इनमें से बहुत कम ऐसे थे जो सोवियत यूनियन में प्रवेश पाने में सफल हो पाए। वे अमेरिकन यहूदी, जो सोवियत यूनियन के आरम्भिक काल मे उसके साथ सैद्धान्तिक रूप से एकमत थे, बिरोबिदजान में आकर बस गए और अपने साथ ट्रैक्टर व अन्य कृषि-यन्त्र लाए ताकि वे साम्यवादी आधार पर अपना कृषि-समुदाय स्थापित कर सकें। हमें नहीं पता कि इनके साथ क्या हुआ, पर इतना जरूर मालूम है कि प्रोफेसर लाइबरबर्ग जो कि इस स्वायत्त-

प्रदेश के प्रधान बने थे और जो कि यहूदी सांस्कृतिक संस्था (अब बन्द हो चुकी है) के डायरेक्टर थे, अन्य नेताओं के साथ गिरफ्तार कर लिए गए। समस्त सूत्रों से यही पता चला कि १६४७ तक बिरोबिड्जान में यहूदियों का का राष्ट्रीय गृह प्रायः नष्ट हो चुका था। इस बारे में सोवियत प्रोपेगण्डा कई वर्षों तक चुप बना रहा।

यहूदियों का ऐसा विरोध न किया गया कि यहूदी उत्पत्ति ही गिरफ्तारी का कारण बन जाती। इसके विपरीत यह नात्सी प्रोपेगण्डा भी बिलकुल झूठा था कि एन० के० वी० डी० पर यहूदियों का ही नियन्त्रण है और सोवियत यूनियन में यहूदियों को विशेषाधिकार प्राप्त हैं। रूस में यहूदी-विरोध इस माने में ही सच्चा था कि पार्टी और सरकार के उच्च पदों से यहूदियों को धीरे-धीरे और चुपचाप हटा दिया गया और एन० के० वी०-डी० के यहूदी अधिकारी तथा सेना से सम्बन्धित यहूदियों के गिरफ्तार होने की अन्य गैर-यहूदियों से अधिक सम्भावना थी। येझोव काल में लोग कहा करते थे, "न वह पार्टी-सदस्य है और न यहूदी, तो फिर क्यों गिरफ्तार कर लिया गया है?"

'जो कभी थे'

सोवियत शब्दावली में 'जो कभी थे' कहलाए जाने वालों का एक महत्त्वपूर्ण स्थान था। इन शब्दों का उन लोगों के लिए प्रयोग होता था जो क्रान्ति से पूर्व अपनी सम्पत्ति, पदवी व पद के कारण कुछ भी महत्त्व रखते थे। समस्त सोवियत काल मे इस श्रेणी का सदस्य होना अपराध समझा गया है। सोवियत यूनियन में हरेक से हमेशा सवाल पूछे जाते रहे हैं और इन सवालों में सामाजिक उत्पत्ति और 'वर्ग' सम्बन्धी प्रश्न भी होते थे। वर्ग का अर्थ था क्रान्ति से पूर्व के वर्ग, जैसे कि सामन्त-वर्ग, धर्मप्रचारक-वर्ग, मध्यम-वर्ग, व्यापारी-वर्ग या कृषक-वर्ग। लोगों से यह भी पूछा जाता था कि क्रान्ति से पहले वे क्या काम करते थे और किस पार्टी के सदस्य थे। 'सामाजिक उत्पत्ति छिपाना' सोवियत नागरिक का सबसे बड़ा अपराध समझा जाता था। 'जो कभी थे' श्रेणी के अधिकांश व्यक्ति किसी-न-किसी

समय सोवियत जेलों में रह चुके थे। किन्तु १६३७ में भूतपूर्व सामन्तों और व्यापारियों की एक बहुत बड़ी संख्या मुन्शीगिरी या चौकीदारी आदि करके किसी तरह जीवनयापन करती थी। उन दिनों 'वर्ग-सतर्कता' का अर्थ था कि ऐसे लोगों को छोटे-से-छोटे कामों से भी हटा दिया जाय, और वे लोग अपनी नौकरियाँ खोने के बाद और कहीं सिर छिपाने की असफल कोशिश के बाद अपने आपको जेल में पाते थे। जो लोग एक बार जेल जा चुके थे उन्हें दुबारा ज़रूर जेल जाना पड़ता था चाहे वे पहली बार अपनी सज़ा पूरी करने या माफी पाने के बाद रिहा किये गए हों। 'जो कभी थे' श्रेणी के लोग अधिकांशतः ज़ारशाही के ज़माने में अफसर, सरकारी कर्मचारी, जमींदार, धनी-व्यापारी या उद्योगपति रह चुके थे।

सित्तहत्तर वर्षीय जनरल सोरोकिन का एक उपयुक्त उदाहरण है जो कि पूरी आज़ादी के आश्वासन पर पेरिस से रूस लौटे थे। कुछ समय तक वह लाल सेना के एक स्कूल में एक सैनिक शिक्षक की हैसियत से काम करते रहे, लेकिन जब उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया तो वह रात को पहरेदारी का काम करने लगे। अन्त मे वह गिरफ्तार किये गए। उन्होंने स्वीकार किया कि एक सशस्त्र विद्रोह की तैयारी में उन्होंने भाग लिया था। जेल की प्रायः प्रत्येक कोठरी में समान अनुभव-प्राप्त लोग मिलते थे। वे और उनकी कहानियाँ अतीत की हो चुकी थीं।

इन लोगों में प्रत्येक धार्मिक मत के प्रचारकों का एक विशेष स्थान था। हर जगह रोमन कैथोलिक और ऑर्थोडॉक्स पादरियों के साथ-साथ प्रोटेस्टेण्ट पादरी और यहूदी धर्माधिकारी मिलते थे।

प्रसिद्ध व्यक्तियों से सम्बन्ध रखने वाले लोग

सोवियत नागरिक स्वभावतः प्रसिद्धि के उस प्रकाश में आने से डरता है जिससे समस्त प्रमुख सोवियतगण ओतप्रोत रहते हैं, क्योंकि वह जानता है कि उन लोगों के साथ खाई में गिरने का खतरा भी हमेशा बना रहता है। ऐसे बहुत से लोग जेल में मिलते थे जो ऊपर बताई गई श्रेणियों में नहीं रखे जा सकते थे। लेकिन ज्यादा गौर से देखने पर पता चलता कि वे किसी-

न-किसी माने में प्रमुख व्यक्तियों से सम्बन्धित थे। कोई किसी जन-कमिस्सार का मोटर ड्राइवर होता तो कोई पार्टी के किसी उच्च अधिकारी का सेक्रेटरी या किसी बड़े अफसर का अरदली। बात समझने में मुश्किल न थी। अपराध स्वीकार करने के लिए इन प्रमुख व्यक्तियों द्वारा गढ़ी हुई कहानियों को सत्य का आभास देने के लिए अप्रत्यक्ष साक्ष्य आवश्यक था। इन लोगों के नीचे काम करने वालों को इनके अपराधों के चित्रों के छोटे अंशों को पूरा करना पड़ा—उन आतंकवादी षड्यन्त्रों को जिनका पूरा ब्यौरा एन० के० वी० डी० की फाइलों में मौजूद था और कई बार दिखावे के मुकदमों में सर्वसाधारण के समक्ष प्रदर्शित किया जाता था।

बहुधा इन नौकरों को उनके मालिकों से पहले ही गिरफ्तार किया जाता था। मालिकों के विरुद्ध दोषारोपण करने वाले वक्तव्यों को व्यवस्थापूर्वक एकत्रित किया जाता और बाद में मालिकों को उनका सामना करना पड़ता था। किसी भी व्यक्ति को हटाने के लिए ऐसे बयान हमेशा मौजूद रहते थे जिनसे उच्चतम अधिकारियों के सामने किसी भी समय उस व्यक्ति के खिलाफ सोवियत-विरोधी कार्यवाहियों का सबूत पेश किया जा सके। उन बड़े-बड़े लोगों के खिलाफ भी शहादतें इकट्ठी की गईं जिन्हें कभी गिरफ्तार न किया गया। हम एक ऐसी कोठरी में भी रहे जिसमें किएव के पास के उस एक बंगले का चौकीदार भी था जिसमें जन-कमिस्सार छुट्टी मनाने के लिए रहा करते थे। कई बार सख्त मार पड़ने पर वह चौकीदार यूक्रेनियन जनतन्त्र के प्रधान जी० आई० प्यैत्रॉव्स्की के खिलाफ बयान देने के लिए तैयार हो गया। हम प्यैत्रॉव्स्की के सेक्रेटरी से भी मिले जिसकी भी यही हालत हुई थी। प्यैत्रॉव्स्की, जो कि पोलितब्यूरो का सदस्य था, गिरफ्तार हुए बिना ही १९४२ में मर गया।

उच्च सोवियत अधिकारियों के साथ अंगरक्षकों के रूप में एन० के० वी० डी० के एक या अधिक कार्यकर्ता हमेशा रहते थे और उनके व्यक्तिगत जीवनों में भी काफी भाग लेते थे। एन० के० वी० डी० के कर्मचारियों का यह कर्तव्य था कि वे एन० के० वी० डी० को अपने मालिकों की सारी

हरकतों की रिपोर्ट दें, लेकिन इन लोगों को भी, अगर वे पहले गिरफ्तार न हो चुके थे, तो अपने मालिकों के साथ गिरफ्तार होना पड़ा।

गलत पहचान के उदाहरण

रूसियों को केवल अपने नाम से ही नहीं बल्कि अपने पिता के नाम से भी पहचाना जाता है, क्योंकि पिता का नाम सदा प्रयोग में लाया जाता है। लेकिन फिर भी इवानाव और प्यैत्राव जैसे सर्वप्रचिलित नामों को लेकर गलती हो ही जाती थी और इस तरह अक्सर गलत आदमी गिरफ्तार कर लिया जाता था। ऐसे लोगों को आम तौर पर कुछ हफ़्तों या महीनों के बाद छोड़ दिया जाता था। लेकिन हमें ऐसी मिसालें भी मालूम हैं कि गलती मालूम की जाने से पहले ही गिरफ्तार व्यक्ति ने जासूसगिरी या अन्य किसी गम्भीर अपराध को स्वीकार कर लिया था। इतना होने पर भी उसे रिहा किया जा सकता था।

एन० के० वी० डी० का संगठन

हमारे वृत्तान्त से यह प्रतीत हो सकता है कि कम-से-कम उस जमाने में एन० के० वी० डी० ने राज्य के अन्दर एक दूसरे राज्य का जो काम किया वह बहुत कुछ नात्सी जर्मनी में गेस्टेपो द्वारा किये गए काम जैसा ही था। प्रत्येक सोवियत नागरिक एन० के० वी० डी० के स्थायी भय में रहता था; राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार यह भय कम या ज्यादा हो जाता था। लेकिन इस नतीजे पर पहुँचना बिलकुल गलत होगा कि एन० के० वी० डी० के सदस्य, जो कि अपने-आपको निश्चय ही राज्य के कर्ताधर्ता और उसके सबसे महत्वपूर्ण विभाग के सदस्य समझते थे, अमनचैन से रह सकते थे। सोवियत यूनियन की ही यह एक विचित्रता थी कि वे लोग इस तरह नहीं रह पाते थे। एन० के० वी० डी० का प्रत्येक सदस्य, निम्नतम से उच्चतम तक, अपने-जैसे अन्य सोवियत अधिकारियों की भाँति ही उत्पीड़ित था और गिरफ्तारी के उतने ही डर में रहता था। एन० के० वी० डी० में जिस अधिकारी का जितना ऊँचा पद होता उसकी गिरफ्तारी की उतनी ही अधिक सम्भावना होती थी।

एन० के० वी० डी० के अधिकारियों की कैदियों की एक श्रेणी के रूप में विवेचना करने से पहले हमें एन० के० वी० डी० के संगठन पर कुछ ध्यान देना चाहिए। इस संगठन के अन्तर्गत अन्य एक सम्पूर्ण संगठन होता था जो कि राज्य और पार्टी के पृथक् संगठनों के समानान्तर ही कार्य करता था। उदाहरण के लिए इस संगठन में राज्य के अन्य विभागों के समान ही राजनीतिक विभाग, आर्थिक विभाग, सैनिक विभाग, यातायात विभाग, संस्कृति विभाग आदि होते थे। प्रत्येक कल-कारखाने, प्रत्येक राजकीय-आर्थिक व प्रशासनीय संस्था, प्रत्येक विश्वविद्यालय, ट्रेनिंग कालेज और वैज्ञानिक संस्था पर विभिन्न विभागों द्वारा नियन्त्रण रहता था। इन कार्य-कलापों का डायरेक्टर या मैनेजर राजकीय प्रशासन का प्रतिनिधि और पार्टी सेक्रेटरी पार्टी का प्रतिनिधि होता था। इस त्रिभुज की तीसरी भुजा होती थी ट्रेड यूनियन का प्रधान। यह अन्तिम कार्याधिकारी 'श्रमजीवियों द्वारा उत्पादन पर नियन्त्रण' के उस सिद्धान्त का भग्नावशेष था जिसका सोवियत यूनियन के आरम्भिक काल में समर्थन किया जाता था। आरम्भ में विचार यह था कि मजदूरों के हितों को, सरकारी प्रशासन के अतिक्रमण से पार्टी की गलतियों से बचाना ट्रेड यूनियनों का काम होना चाहिए। १६२० की दशाब्दी के अन्त में ट्रेड यूनियनों के कार्य की बहुत-कुछ महत्ता कम हो चुकी थी। उनका कार्य 'निर्धारित कार्य की पूर्ति' का निरीक्षण अर्थात् उत्पादन-सम्बन्धी योजनाओं को कार्यान्वित कराना और कार्य-सम्बन्धी अनुशासन को कायम रखना था। ट्रेड यूनियन के साथ ही प्रत्येक औद्योगिक कार्यकलाप अथवा संस्था में एक 'विशेष विभाग' या एक गुप्त विभाग हुआ करता था। प्रत्येक सोवियत इमारत में इसके दफ्तर को उसके दरवाजों पर लगी लोहे की चादरों से साफ तौर पर पहचाना जा सकता था। यह लोहे की चादर बचाव के लिए न होकर एक प्रतीक के रूप में थी। कोई साधारण आदमी इसको पार करके नहीं जा सकता था। विशेष विभाग के कर्मचारी बाकी कार्यालय के लोगों से एक छोटी खिड़की में से बातचीत करते थे जो कि सिर्फ अन्दर से ही खुल सकती थी। बड़े कार्यालयों में विशेष

विभाग के पास उस इमारत का एक पूरा हिस्सा होता था। इमारत में दाखिल होने के लिए मैनेजर और विशेष विभाग के प्रधान के हस्ताक्षरों से दिया हुआ एक 'साधारण' प्रवेश-पत्र होता था लेकिन लोहे की चादरों वाले दरवाजों से गुजरने के लिए इन्हीं अधिकारियों द्वारा दिया हुआ एक 'विशेष' प्रवेश-पत्र होता था। दरवाजे के सामने एक सन्तरी संगीन ताने खड़ा रहता था ताकि कोई भी अनधिकृत व्यक्ति प्रवेश न पा सके।

गुप्त-विभाग का प्रधान उस कार्यालय के व्यवस्थापक के प्रति उत्तरदायी न होकर एन० के० वी० डी० के प्रति उत्तरदायी होता था। उसकी नियुक्ति या उसकी नियुक्ति की स्वीकृति एन० के० वी० डी० द्वारा ही होती थी। व्यवस्थापन पर और विशेषतः सोवियत कर्मचारियों की व्यक्तिगत राजनीति पर वह अधिकाधिक प्रभाव प्राप्त कर लेता था और इस तरह गैर-सरकारी तौर पर 'चौथा प्रधान' बन जाता था। व्यक्तिगत कारखानों और संस्थाओं के विशेष विभागों के प्रधान स्थानीय स्तर पर एन० के० वी० डी० के सुसंगत विभागों के प्रति उत्तरदायी होते थे। प्रत्येक सोवियत जनतन्त्र में जिलों और प्रदेशों में विशेष विभाग संगठित थे और यह संगठन क्रमशः मास्को तक पहुँचता था। पार्टी की तरह यह सारी मशीन सम्पूर्णतः केन्द्रित थी; सोवियत राज्य के साधारणतः फेडरल ढाँचे से पूर्णतः विपरीत यह दृढ़-केन्द्रीयकरण व्यक्तिगत राजनीति द्वारा सफल हो पाता था। एन० के०-वी० डी० के इन विभागों के अलावा गुलग नामक संगठन भी था जो कि, जैसा कि हम बता चुके हैं, बलात्-श्रम कैम्पों के लिए जिम्मेवार था और इस प्रकार देश की विस्तृत उत्पादन शाखाओं के लिए भी जिम्मेवार था। इसके अतिरिक्त आँकड़ों का एक विभाग था जो सैद्धान्तिक रूप से गुप्त माने जाने वाले समस्त सोवियत आँकड़ो के लिए जिम्मेवार था। रेल, सड़कों और नहरों के निर्माण के लिए अन्य विभाग उत्तरदायी थे। इसके अलावा देश की सीमाओं के निरीक्षण तथा सीमान्त इलाकों के प्रशासन और प्रजा के पुनरावास का काम भी एन० के० वी० डी० के हाथों में ही था और अन्त में, सोवियत यूनियन की सीमाओं पर स्थित सेनाएँ रक्षा-मन्त्रालय के

नियन्त्रण में न होकर एन० के० वी० डी० के नियन्त्रण में थी और उसकी ही वरदियाँ पहनती थी। वह सब अस्त्रों से सुसज्जित एक पूरी सेना थी। एन० के० वी० डी० की इस फौज के दस्ते अन्दरूनी इलाकों में भी नजर आते थे। अशान्ति का भय होने पर या सामूहीकरण-जैसी विशेषतः महत्वपूर्ण सरकारी कार्यवाहियों को कार्यान्वित करते समय इनका प्रयोग किया जाता था। राज्य-सुरक्षा के लिए प्रधान प्रशासन-विभाग भी होता था, जो कि बाद में राज्य सुरक्षा-मन्त्रालय के अधीन बना दिया गया पर जो कि एन० के० वी० डी० की तरह ही सर्वोच्च नियन्त्रण में रहता था और निम्नलिखित कई उप-विभागों में विभाजित था: प्रशासन उप-विभाग जो कि उस समूची विशाल मशीन के लिए जिम्मेवार था; क्रिया-करण उपविभाग, जो कि गिरफ्तारियाँ करता, मुकदमा चलाने वाले अधि-कारियों से सम्बन्ध बनाए रखता और कैदियों के लाने-ले जाने के लिए जिम्मेवार था; जेल-प्रशासन उपविभाग, जो कि गुलग द्वारा जिम्मेवारी संभालने तक कैदियों के खाने-पीने का और उनकी हिफ़ाजत का प्रबन्ध करता; सबसे महत्वपूर्ण था गुप्तचर उपविभाग जो 'सैक्सॅात' (सैकरैतनी-सॉतरुदनिक, गुप्त सहयोगियों) की फौज द्वारा सोवियत जीवन के प्रत्येक अंग पर निगाह रखता था और पूछताछ उपविभाग जिसके अन्तर्गत जाँच करने वाले अधिकांश मजिस्ट्रेट काम करते थे और जो कि कैदियों से पूछताछ करने के लिए जिम्मेवार था। लेकिन गिरफ्तार लोगों के एक बहुत थोड़े भाग से यह विभाग ही पूछताछ करता था; अधिकांश लोगों को तो, चाहे उन पर लगाये गए अभियोग का जासूसगिरी से सम्बन्ध हो या न हो, जासूसगिरी-विरोधी विभाग का सामना करना पड़ता था, जो कि एक माने में सबसे अधिक शक्तिशाली था और जिसका लोगों को सबसे अधिक भय भी था।

एक विदेश विभाग भी था जो कि विदेशों में जासूसगिरी के लिए जिम्मेवार था और जो कि राजनीतिक, सैनिक और आर्थिक उपविभागों में विभक्त था। विदेशों में सोवियत यूनियन के समस्त कूटनीतिक एवं दूतावासों

से सम्बन्ध रखने वाले प्रतिनिधि और वास्तव में, विदेशियों से किसी भी प्रकार का सरकारी सम्पर्क रखने वाले लोगों पर इस विभाग का नियन्त्रण था। ये लोग साधारणतः वैदेशिक मन्त्रालय के प्रति ही उत्तरदायी थे किन्तु अधिकांशतः होते एन० के० वी० डी० के ही सदस्य थे। किसी भी व्यक्ति का पद वास्तव में उसकी महत्ता का द्योतक न था। प्रसिद्ध राजदूत और व्यापारिक प्रतिनिधि आदि अक्सर कठपुतलों की तरह काम करते थे और दावतों व सरकारी वार्ताओं में भाग लेते थे, जब कि असली नेता मामूली क्लर्कों की तरह काम करते और एन० के० वी० डी० के संगठन या पार्टी में दरअसल राजदूतों से ऊँचा पद प्राप्त किये हुए थे।

वैदेशिक गुप्तचर-विभाग तीन स्वतन्त्र संगठनों में विभाजित था। सैनिक गुप्तचर-विभाग रक्षा-मन्त्रालय द्वारा नियन्त्रित होता था। कॉमिण्टर्न का अपना अलग राजनीतिक व टेक्निकल गुप्तचर-विभाग था जिसके प्रति विभिन्न राष्ट्रीय पार्टियों के गुप्त विभाग उत्तरदायी थे। ये विभाग उन देशों में भी जहाँ कि पार्टी गैर-कानूनी न थी, गुप्त और षड्यन्त्रात्मक आधार पर संगठित थे। तीसरा और आखिरी एन० के० वी० डी० का वैदेशिक विभाग था जो कि अपना स्वतन्त्र गुप्तचर संगठन कायम रखता था; कामिण्टर्न की समाप्ति पर सम्भवतः यह ही विभिन्न राष्ट्रीय पार्टियों के गुप्त विभागों पर नियन्त्रण बनाए रखता था। इन तीनों संगठनों का काम आपस में बहुत मिल-जुल जाता था और इनमें से हरेक कई बार उस काम को करने लगता था जिसके लिए वह शुरू में न बनाया गया था। असंख्य विदेशी कार्यकर्ताओं व बुद्धिजीवियों की सोवियत यूनियन के प्रति उद्भावना का बहुत लाभ उठाया जाता था। यदि कोई व्यक्ति अपने व्यक्तित्व, पद व व्यवसाय से साम्यवादी झुकाव प्रदर्शित करता तो उसे कम्युनिस्टों के पक्ष में अपने-आपको घोषित करने से और अधिकृत रूप से पार्टी में भाग लेने से रोका जाता, पर साथ ही उसे कम्युनिस्ट सिद्धान्तों की और अधिक दीक्षा दी जाती तथा इन सिद्धान्तों के साथ अधिक दृढ़ता के साथ उसे बाँध लिया जाता था। उसके पूर्णतः विश्वसनीय बनने पर

उसे इस संगठन के सम्पर्ककर्ताओं के हाथों सौंप दिया जाता जिनसे गुप्त रूप से वह सदा मिलता रहता था। आरम्भ में उसे अपेक्षया निर्दोष कार्य सौंपे जाते, किन्तु क्रमशः उसे अधिकाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य दिए जाते जोकि उसकी शिक्षा और उसके पद के उपयुक्त होते थे। इस संगठन के सदस्य होने के नाते उसे कठोर अनुशासन में रहना पड़ता था। जैसे ही वह अपने देश के नियमों का उल्लंघन करता वह पूरी तरह जाल में फँस जाता था। १९३० की दशाब्दी के आरम्भ में अनेक श्रमजीवी और बुद्धिजीवी कोरे आदर्शवाद से प्रेरित होकर और इस विश्वास के साथ कि इस प्रकार वे विश्व-क्रान्ति में सहयोग दे पा रहे हैं, अपने-आपको खतरे में डालकर और किसी भी प्रकार का पार्थिव-पुरस्कार पाए बिना ही विभिन्न सोवियत संगठनों के लिए काम करते रहे थे। इन संगठनों में, विशेषतः रक्षा-मन्त्रालय में, भाईचारे-जैसा निकट सहयोग देखने में आता था, यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति अपने निकटतम उच्चतम अधिकारी और एक या दो सम्पर्ककर्ताओं से ही केवल परिचित था। ऐसे संगठनों के सदस्य पार्थिव-लाभ के लिए पेशेवर जासूस-गिरी को अपमानजनक और निन्दनीय समझते थे। उनके द्वारा मोल लिये हुए खतरे, उनके कार्य की महानता और अन्त में गुप्त-कार्य का स्वाभाविक रोमांच उन्हें दृढ़तापूर्वक एक-दूसरे से बांधे रखता था। युवकगण बड़े उत्साह के साथ काम करते थे। सोवियत यूनियन के लिए सैनिक, टैक्निकल और राजनीतिक सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए ये संगठन एक अमूल्य साधन के रूप में थे।

किन्तु येझोव-काल में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आरम्भ हुआ। एन०-के० वी० डी० के वैदेशिक संगठन के अतिरिक्त अन्य सब संगठन भंग कर दिये गए। इस युग का विशिष्ट गुण था किसी भी प्रकार के आदर्शवादी अथवा सैद्धान्तिक बन्धन के लिए सोवियत शासन का घोर अविश्वास। परिणाम यह हुआ कि एन० के० वी० डी० के वैदेशिक विभाग द्वारा काम में लाए जाने वाले तरीकों में मौलिक परिवर्तन हो गया। अवैतनिक रूप से गैर-कानूनी काम करने वाले लोगों की जगह सवैतनिक गुप्तचरों ने ले

ली। एन० के० वी० डी० संगटन ने स्वेच्छापूर्ण सहयोग की जगह समझौते और लुटेरों को दिए जाने वाले उपहारों से काम लेना शुरू किया और अपनी गुप्तचर-व्यवस्था को अपने ख़याल में अन्य देशों के नमूने पर बनाना चाहा।

विदेशी संगठन के प्रायः सब सदस्यों को सोवियत यूनियन में क्रमशः बुलाकर और उन्हें जासूस करार देकर गिरफ्तार कर लिया गया। नतीजा यह हुआ कि सोवियत जेलों में विदेशी राज्यों के गुप्तचरों की अपेक्षा स्वयं सोवियत गुप्तचर अधिक मिलते थे। उदाहरण के लिए हमें एक ऐसे सोवियत गुप्तचर की याद है जो कि रूमानिया में जासूसगिरी के लिए आठ साल की सजा काटकर रूस लौटा था। एन० के० वी० डी० द्वारा रूमानियन जासूस करार देकर तुरन्त ही गिरफ्तार किए जाने पर वह सम्पूर्णतः हतप्रभ हो गया। सोवियत गुप्तचर-विभाग का प्रधान, जिसने उसे आरम्भ में बाहर भेजा था और जिससे अब उसने अपील की थी, खुद गिरफ्तार था। रूसी गुप्तचर-विभाग के प्रायः सभी उच्च अधिकारियों ने रूस लौट-आने पर अपने-आपको जेल में पाया।

एन० के० वी० डी० का सबसे महत्त्वपूर्ण और सबसे भयानक विभाग विशेष विभाग था जो कि एन० के० वी० डी० के अन्दर एक दूसरा एन०-के० वी० डी० था। जिस तरह समूचे सोवियत यूनियन में एन० के० वी०-डी० का भय फैला हुआ था उसी तरह एन० के० वी० डी० के अन्दर इस विशेष विभाग का और भी अधिक भय व्याप्त था। प्रत्येक सैनिक-संगठन, प्रत्येक बन्दी-कैम्प में विशेष विभाग के दस्ते मौजूद रहते थे।

एन० के० वी० डी० के अन्तरंग कार्यकर्ता अपने-आपको गर्व के साथ 'पुराने चेकिस्ट' कहते थे। यह लोग क्रान्ति और गृह-युद्ध में भाग लेने वाले पुराने कम्युनिस्ट थे जिन्होंने अपनी मजबूती और ईमानदारी साबित कर रखी थी। इनमें से अधिकांश की सर्वहारा-वर्ग से उत्पत्ति थी किन्तु अनेक बुद्धिजीवी मध्यवर्ग के लोग भी थे। बालित्स्की और उसपैन्स्की नामक यूक्रेन के दो मन्त्री और त्रॉयत्स्की नामक विशेष विभाग का प्रधान

धर्म-प्रचारकों के परिवारों में से थे और धार्मिक शिक्षा देने वाले एक कालेज के छात्र थे। स्तालिन भी, जैसा कि सर्वविदित है, एक अध्यात्मवादी छात्र रह चुका था।

पुराने क्रान्तिकारियों के इस कठोर अन्तर्घट के अतिरिक्त एन० के० वी० डी० के अन्य कार्यकर्त्ताओं को स्वयंसेवा के आधार पर भरती नहीं किया जाता था। यह तरीका १६२० की दशाब्दी के अन्त में ही काम में आने लगा था। एन० के० वी० डी० को जीवनयापन के लिए एक व्यवसाय के रूप में नहीं चुना जा सकता था। इस काम के लिए जिन लोगों का चरित्र और प्रवृत्ति उपयुक्त नजर आती थी उन्हें ही लिया जाता था। उनकी सामाजिक उत्पत्ति का आपत्तिजनक न होना और पार्टी-नीति के प्रत्येक परिवर्तन के साथ उनके आचरण का उपयुक्त होना निश्चय ही अनिवार्य था। १६३० की दशाब्दी के आरम्भ में कोमसोमोल या पार्टी का सदस्य होना आवश्यक था और एन० के० वी० डी० ऐसे लोगों पर अपना 'अधिकार दिखा-कर' उन्हें अपने कार्यकर्त्ताओं के लिए चुन लेती थी। इस अधिकार दिखाने का सदा स्वागत न किया जाता था किन्तु सरकारी तौर पर इसे एक महान् सम्मान समझा जाता था, और इसे स्वीकार न करना व्यक्ति-विशेष की राजनीतिक हत्या थी।

छात्रों में से अधिकांश कार्यकर्त्ताओं को चुनना व्यावहारिक था— कोम-सोमोल के वे सदस्य जो कि पढ़ने-लिखने के बजाय 'सामाजिक कार्य' पर अधिक ध्यान देते थे और जो कि सब प्रकार के प्रशासनीय व राजनीतिक पदों पर आरूढ़ थे। अतः बहुत कम ऐसे छात्र थे जो विश्वविद्यालयों की अपनी शिक्षा समाप्त कर पाए हों। केवल उन्हीं छात्रों पर अपने पाठ्य-क्रमों को पूरा करने के लिए जोर दिया जाता था जिन्हें टेकनिकल या आर्थिक विभागों के लिए चुना गया हो।

एन० के० वी० डी० के कार्यकर्त्ताओं के रहन-सहन का स्तर सोवियत जीवन की प्रत्येक शाखा के स्तर के समान ही अधिकारियों के पदों पर निर्भर करता था। छोटे अधिकारियों की तनख्वाह और रहने की जगह

मामूली से भी बदतर होते हुए भी अन्य संगठनों के समान पदाधिकारियों से कहीं अच्छी थी। लेकिन उच्च और मुख्य अधिकारियों का वेतन ऊँचा होता था, रहने के लिए उन्हें बड़े फ्लैट मिलते थे, सरकारी मोटरगाड़ियाँ मिलती थीं जिन्हें वे अपने निजी काम में भी ला सकते थे और देश में उपलब्ध होने वाली किसी भी चीज का उन्हें अभाव न था। एन० के० वी० डी० के सदस्यों के लिए खोली गई उन खास दुकानों से वे सस्ते दामों में चीजें खरीद सकते थे जो कि अभाव के दिनों में भी हमेशा चीजों से पूरी तरह भरी रहती थीं। वे और उनके परिवार के लोग काकेशस या क्रामिया में स्थित एन० के० वी० डी० के विशेष अवकाश-गृहों में छुट्टियाँ बिताते थे, लेकिन वहाँ भी उपलब्ध होने वाले आराम की मात्रा और खाने-पीने की चीजों की किस्म और तादाद उनके पदों पर ही निर्भर करती थी। सेना का जनरल वही सिगरेट न पीता था जोकि मेजर पीता था और न मेजर वह सिगरेट पीता था जो कि लेफ्टिनेण्ट पीता था।

लेकिन सोवियत जीवन में उच्चतम अधिकारियों को मिलने वाला ज्यादा से-ज्यादा ऐश और आराम उनके जानलेवा काम का मुआवजा अदा नहीं कर पाता था। यह बात खास तौर पर जाँच करने वाले मजिस्ट्रेटों और उनके उच्चतर अधिकारियों के लिए लागू होती थी। जाँच करने वाले मजिस्ट्रेटों को नियमित रूप से सुबह के चार-पाँच बजे तक काम करना पड़ता था, क्योंकि कई वर्षों के अनुभव ने उन्हें सिखाया था कि दिन के बजाय रात को पूछताछ करना अधिक सफल होता है। कैदियों को पूछताछ की मुसीबतें सिर्फ कुछ हफ्तों या महीनों तक ही सहनी पड़ती थीं लेकिन जाँच करने वाले मजिस्ट्रेटों को वर्षों तक दिन-प्रतिदिन काम करना पड़ता था, जो कि केवल दवाइयों के निरन्तर प्रयोग से ही सम्भव था। इसके अलावा बड़े अफसरों का निरन्तर अंकुश, 'सतर्कता' की निरन्तर मांग, ऊपर से दबाव और नये षड्यन्त्रों तथा नये गुप्तचर-संगठनों की खोज लगातार चलती ही रहती थी। जाँच करने वाले मजिस्ट्रेटों में स्नायु-विच्छेद का रोग हर रोज की बात थी।

इस पुस्तक के एक लेखक ने अपनी पूछताछ के दौरान में मजिस्ट्रेट को शक्तिशून्य होते देखा। वह एक युवक लेफ्टिनेण्ट था, जिसके लिए प्रत्यक्षतः उसका अपना काम नया था; वह कुरसी पर बैठकर प्रधान मजिस्ट्रेट की जगह काम कर रहा था जब कि कैदी को उसके सामने खड़ा रहना पड़ रहा था। लगातार पूछे जाने वाला सवाल "तुम्हें किसने भरती किया ?" क्रमशः कम पूछा जाने लगा और हतप्रभ बन्दी ने अचानक देखा कि जाँच करने वाला मजिस्ट्रेट फूट-फूटकर रोने लगा है। मजिस्ट्रेट ने बन्दी को बैठने की इजाजत दी, अपने निजी गिलास में उसे चाय पिलाई, एक सिगरेट भी दी और अपनी जगह किसी दूसरे मजिस्ट्रेट को बुलाया। पूछताछ फिर शुरू हुई।

पूछताछ करने वाला कोई भी ऐसा अफसर न था, शायद ही कोई ऐसा सीधा-साधा आदमी होगा, जो कि बन्दी के अपराध में पूर्णतः विश्वास करता था। अधिकांशतः वे लोग अपने-आपको यह समझा लेते थे कि उनके सामने 'जनता के शत्रु' खड़े हैं और वे कर्त्तव्य-परायणता के साथ उनसे अपराध स्वीकार कराते थे हालांकि वे यह जानते थे कि अभियुक्त झूठ बोल रहे हैं और उनकी कहानियाँ झूठी हैं, पर फिर भी उन्हें यह विश्वास था कि 'कुछ-न-कुछ' बात तो है ही। ऐसे मानवद्वेषी अपवाद रूप में ही थे जो अच्छी तरह जानते थे कि क्या हो रहा है; बहुसंख्यक वे लोग थे जो अपने कार्य के औचित्य के बारे में अपनी समस्त शंकाओं को दबा लेते थे। वे अपने-आपसे कभी चुनने वाले सवाल न पूछते थे क्योंकि उनके जवाब उनकी सारी दुनिया को ही ढाह देते। वे आंशिक रूप से सोवियत शासन के प्रति अपनी स्वामि-भक्ति और आंशिक रूप से आकांक्षी होने व नागरिक साहस के अभाव के कारण और सबसे अधिक स्वयं गिरफ्तार होने के भय से वही काम करते थे जिसकी उनसे आशा की जाती थी। अतः इस प्रकार एक संगठन के आतंक में रहने वाले उस देश का एक अद्भुत चित्र उपस्थित होता है जिसमें उस संगठन के सदस्यगण अपनी सत्ता का फल न भोग पाते थे, क्योंकि वे स्वयं ही सदा आतंक में रहते थे। एन० के० वी० डी० को

विशेष विभाग का भय था, और विशेष विभाग के सदस्यों को अपने बड़े अफसरों के बदल जाने का भय था जिसके फलस्वरूप उनका पतन ही हो जाता।

सामाजिक रूप से एन० के० वी० डी० के सदस्यों को सोवियत यूनियन में सबसे अधिक सम्मान प्राप्त था। वे पुराने प्रथा के सैनिक पदाधिकारियों की भाँति एक अत्युत्तम श्रेणी के लोग थे। अच्छा रूप-रंग, अच्छा आचरण और सर्वोत्तम वेशभूषा के वे स्वाभाविक अधिकारी थे। एन० के० वी० डी० के सदस्यों की सुन्दरतम पत्नियाँ होती थीं जो कि अपने आभूषणों और अपने शृङ्गार का गर्व के साथ प्रदर्शन करती फिरती थीं। ये स्त्रियाँ अधिकांशतः भूतपूर्व धनी और शिक्षित-वर्ग की होती थीं। एन० के० वी० डी० एक पृथकत्व प्रदर्शित करता था। वे पार्टी के उन रईसों से अपने-आपको अलग रखते थे जिनके वे स्वयं भाग थे और सेना के रईसों तथा उच्च टेकनिकल बुद्धिजीवी-वर्ग से भी अपने-आपको अलग बनाए रखते थे। जिस स्त्री की सामाजिक उत्पत्ति सोवियत आवश्यकताओं के अनुरूप न होती, वह यदि एन० के० वी० डी० के किसी उच्च अधिकारी से विवाह कर लेती तो उसे एक ऊँचे दर्जे की आज़ादी और सुरक्षा प्राप्त होती और यह सुविधाएँ किसी हद तक उसके परिवार वालों को भी मिल पाती थीं। किन्तु पुरुषों के लिए ऐसे विवाह अक्सर दुःसम्बन्ध समझे जाते थे और बाद में जब स्वयं एन० के० वी० डी० का शुद्धीकरण आरम्भ हुआ तो इस प्रकार के विवाहों का भयंकर दुष्परिणाम होने लगा।

एन० के० वी० डी० की एक पृथक् जाति की उत्पत्ति अन्य बातों में भी देखी जा सकती थी। एन० के० वी० डी० के अधिकारियों के बच्चे खास स्कूलों में जाते और एन० के० वी० डी० के निम्न पदों पर उच्च अधिकारियों के परिवारों के युवकों को रखा जाता था। राज्य या पार्टी-मशीन के अन्य भागों के सदस्य भी एन० के० वी० डी० में अपने बच्चों को भेजने की कोशिश करते थे। इस प्रकार राज्य के अन्तर्गत कई परिवारों के अन्तर-सम्बन्ध स्थापित हो गए।

सोवियत यूनियन में उन लोगों का भी एक अन्य बड़ा भाग था जो कि एन० के० वी० डी० के सदस्य हुए बिना ही इस संगठन की ओर से विशेष कार्य करते थे। इस श्रेणी के लोगों के लिए विशेष महत्त्व रखने वाला आर्थिक, सैनिक या राजनीतिक कार्य सीमित था। उन्हें अपने और अपने परिवारों के बारे में पूछे जाने वाले असंख्य प्रश्नों का सविस्तर उत्तर देना पड़ता था, और फिर उनको पूरी तरह छिपाए जाने के बाद उन्हें गुप्त कार्य करने की इजाजत दी जाती थी। उदाहरण के लिए, कई कागजात सिर्फ 'गुप्त' टाइपिस्टों द्वारा छापे जाते थे और सिर्फ 'गुप्त' सन्देशवाहकों द्वारा ले जाए जाते थे। कारखानों के विशेष विभागों के कार्यालयों की सफाई 'गुप्त' नौकरानियों द्वारा ही की जाती थी। एन० के० वी० डी० में काम करने वाला प्रत्येक व्यक्ति, चाहे कितना ही नगण्य क्यों न हो, 'गुप्त' व्यक्ति समझा जाता था। अन्य देशों में भी इस प्रकार का प्रबन्ध होता है, लेकिन जिस बेहद सख्ती के साथ 'गुप्तता' के विचार को रूस में प्रयुक्त किया गया था और 'गुप्त' व्यक्तियों की जितनी अधिक संख्या वहाँ थी उतनी और कहीं नहीं थी।

एन० के० वी० डी० के प्रति इन गुप्त कार्यकर्ताओं के विशेष आभारों के बारे में तो ज्ञात था लेकिन 'गुप्त सहयोगियों' या सैकसोटों की विशाल संख्या के लिए, जिनका हम उल्लेख कर चुके हैं, यही बातें लागू न होती थीं। यह लोग सारी आबादी में फैले हुए थे। यह निश्चय ही था कि राजनीतिक या आर्थिक प्रशासन, सेना या एन० के० वी० डी० के किसी भी प्रमुख व्यक्ति से संबन्धित संदेशवाहक, मोटर ड्राइवर, सेक्रेट्री और अनुवादक आदि सैकसोट होते थे। उन्हें नियमित अवधि के बाद अपने मालिकों और उनके परिवारों के बारे में रिपोर्ट देनी पड़ती थी। सोवियत यूनियन में प्रत्येक प्रमुख व्यक्ति की राय, उसके व्यक्तिगत-जीवन व सामाजिक सम्पर्कों पर एक ही साथ कई दृष्टिकोणों से निगाह रखी जाती थी और अलग-अलग रिपोर्टें दी जाती थीं; उन रिपोर्टों की फिर आपस में जाँच की जाती थी। यदि कोई सैकसोट उस व्यक्ति के प्रति उदार होता जिस पर वह निगाह

रखता था और इसलिए उस व्यक्ति की कोई बुरी बात छिपाना भी चाहता तो उसे हमेशा यह डर बना रहता था कि वह बात कहीं-न-कहीं से मालूम हो ही जायगी। साधारणतः सैकसोट को कार्यभार सम्पूर्णतः उसकी इच्छा पर ही दिया जाता था, लेकिन अगर एन० के० वी० डी० किसी व्यक्ति को इस काम के लिए उपयुक्त समझता तो उसे 'समझाने-बुझाने' के तरीके उसके पास मौजूद होते थे। जैसे ही किसी कारखाने या कार्यालय में कुछ मित्रों का एक समूह बनने लगता—विशेषतः छात्रों का समूह—एन० के० वी० डी० उस समूह के किसी एक सदस्य को सैकसोट बनाने की कोशिश करता।

लोगों को सैकसोट बनाने के लिए एन० के० वी० डी० उनकी सोवियत आत्माओं की दुहाई देता और सैकसोट कार्य को निर्दोष बताता, लेकिन अधिकांशतः भावी सैकसोट के परिवार के गिरफ्तार सदस्य के भाग्य में सुधार किए जाने का आश्वासन दिया जाता। अगर यह तरीका भी असफल रहता तो डाँट-डपट और डरा-धमकाकर काम लिया जाता।

बहुत से लोग बिना कुछ कहे ही एन० के० वी० डी० की बात मान लेते थे, लेकिन कुछ ऐसे भी होते थे जो काफी हीले-हवाले के बाद तैयार होते थे। प्रायः सभी इस विश्वास के साथ काम शुरू करते थे कि जब तक वे सत्य का पक्ष लेते रहेंगे उनके काम से कोई हानि न होगी और इस प्रकार वे लोगों के खिलाफ खबर न देते थे। लेकिन उन्हें जल्दी ही मालूम हो गया कि केवल दोषारोपण-सम्बन्धी सामग्री ही चाहिए चाहे दोषारोपण करने का कारण मौजूद हो या न हो। एन० के० वी० डी० उन पर अधिकाधिक दबाव डालने लगा और आखिर वे भी जिन लोगों पर निगाह रखते थे उनके जीवनों की निर्दोष घटनाओं में या अनजान में की गई उनकी गलतियों में भी दोष देखने लगे। जब इन बातों से भी एन० के० वी० डी० को सन्तोष न हुआ तो उनकी कल्पना की लगाम छोड़ दी गई और वे लोग आवश्यकतानुसार आविष्कार करने लगे। इनमें से अधिकांश सैकसोट अन्त में जेल में पहुँचे, जिनमें से एक की कहानी अगले परिच्छेद में दी गई है। सोवियत नागरिक को इस रास्ते पर भटक जाने से अधिक किसी बात

का भय न था और उसका यह भय उचित भी था। सैक्सोट के कार्य का प्रेम, मैत्री और पारिवारिक सम्बन्ध का सब पर प्रभाव पड़ता था और इस तरह दुःखान्त की सम्भावना ही अधिक रहती थी।

एन० के० वी० डी० द्वारा खूबसूरत औरतों और लड़कियों को सैकसोट बनने के लिए अक्सर चुना जाता था; विवाहिता स्त्रियों को, विशेषतः प्रमुख अधिकारियों की पत्नियों को भी, बहुधा इस काम के लिए चुन लिया जाता था। इस काम से बचने का सिर्फ एक ही तरीका था कि अपने-आपको बेवकूफ़ और फिज़ूल की बकवास करने वाला करार कर दिया जाय।

खास तौर पर विदेशी लोग सैकसोटों से हर कदम पर घिरे रहते थे। इंतूरिस्त होटलों और कार्यालयों के सारे कर्मचारी और सब दुभाषिए एन०-के० वी० डी० के गुप्त कार्यकर्ता होते थे।

इस सम्बन्ध में सोवियत यूनियन में वेश्यावृत्ति के प्रायः प्रत्यक्ष अस्तित्व के एकमात्र रूप का उल्लेख करना हमें नहीं भूलना चाहिए। मास्को के होटलों में ठहरने वाले प्रायः प्रत्येक विदेशी को एन० के० वी० डी० की लड़कियों के साथ अजीब अनुभव हुए होंगे। टेलीफ़ोन पर गलत नम्बर से उसे मिला दिया होगा और उसने अपने-आपको किसी ऐसी लड़की से बातें करते हुए पाया होगा जो कि उसकी पूर्व-परिचिता बनने का दावा करती होगी। अगर विदेशी उसके जाल में फंस गया तो वह युवती खतरनाक विषयों पर बातें करने की कोशिश करेगी और चाहेगी कि वह व्यक्ति अपने सामाजिक स्तर से नीचे उतर आए।

यह बात इसलिए विशेष उल्लेखनीय है, क्योंकि सोवियत यूनियन में वेश्यावृत्ति का केवल अस्तित्व ही नहीं बल्कि उसे घोर घृणा के साथ देखा जाता है और मानव-सम्मान के विरुद्ध समझा जाता है। गत महा-युद्ध में जर्मन और हंगेरियन सैनिक अधिकारियों व सैनिकों के लिए अधीन रूस में खोले गए वेश्यालयों से सोवियत जनता में उतना ही क्षोभ हुआ जितना कि यहूदियों के सामूहिक विनाश से। सोवियत व्यवस्था में पले हुए और पहली बार विदेश जाने वाले नवयुवकों के क्षोभ के बारे में जितना लिखा

जाय उतना ही कम है। वे यह न समझ पाते थे कि कैसे एक सभ्य सरकार प्रत्यक्ष वेश्यावृत्ति की इजाजत दे सकती है जो कि सम्मान और गौरव की उनकी कल्पना के विरुद्ध थी।

एन० के० वी० डी० के अधिकारियों को, शायद विदेशियों को छोड़कर, अन्य उल्लिखित श्रेणियों जितना ही गिरफ्तारी का भय था। यागोदा के बाद येझोव के उत्तराधिकारी बनने पर एन० के० वी० डी० के सब प्रमुख पदों में सम्पूर्ण परिवर्तन कर दिया गया; १९३९ में येझोव की बारी आई और वह भी चला गया। यूक्रेन में बालित्स्की, लैपलैव्स्की और उसपैन्स्की नामक तीन गृह-मन्त्री एक के बाद एक करके गिरफ्तार किये गए। इन गिरफ्तारियों के बाद सम्पूर्ण कर्मचारी-मण्डल बदल दिया गया और जिन लोगों की नौकरी चली गई उनमें से कुछ को छोड़कर बाकी सब गिरफ्तार कर लिये गए। पूछताछ के लिए कई वर्षों से बन्द कैदी के लिए यह देख सकना बिलकुल भी अजीब न था कि उससे पूछताछ करने वाले दस या बारह मजिस्ट्रेट खुद गिरफ्तार हो चुके थे। इस पुस्तक के दोनों लेखक अलग-अलग दस से ज्यादा मजिस्ट्रेटों का सामना कर चुके थे और एक ने तो बारह से ज्यादा का मुकाबिला किया था। दोनों मिसालों में वे मजिस्ट्रेट शामिल थे जिन्होंने लेखकों की गिरफ्तारी का हुक्म दिया था। लेकिन मजिस्ट्रेटों की गिरफ्तारियों से कैदियों को कोई राहत न मिलती थी। कैदी की जाँच करने वाले मजिस्ट्रेट का स्वयं 'जनता का शत्रु' बन जाना कैदी के अभियोग या उसकी बलात् अपराध-स्वीकृति के बोझ को या उसकी प्रामाणिकता अथवा उसके कानूनी जोर को हल्का नहीं कर पाता था। इस तर्क-पद्धति से अभ्यस्त होना कठिन था जो कि दो नकारों के सिद्धान्त को स्वीकार न करती थी।

१९३८ के आरम्भ में एन० के० वी० डी०-प्रशासन के विभागीय प्रधानों का पद बहुधा जनरल या कम-से-कम कर्नल के बराबर होता था। लेकिन उच्च अधिकारियों के गिरफ्तार हो जाने के कारण आगे तरक्की न हो सकी। १९३९ के अन्त में यूक्रेनियन सोवियत जनतन्त्र के विभागीय प्रधान

कप्तान या लेफ्टिनेएट ही थे। १६३६ के मध्य में स्वयं जन-कमिस्सार के अतिरिक्त मन्त्रालय के अन्य उच्चतम अधिकारीगण मेजर थे और कई मामलों की जाँच करने वाले मजिस्ट्रेट सार्जेएट भी थे जिनके लिए १६३७ में कम-से-कम मेजर नियुक्त किये गए होते। हरेक कैदी देख सकता था कि उसकी जाँच करने वाले मजिस्ट्रेट का पद क्रमशः नीचे गिरता जा रहा है। हमने अपनी सिर्फ तीन साल की कैद के दौरान मे उन लोगों को विभागीय प्रधान बनते देखा था जो कि लेफ्टिनेएट का पद प्राप्त करने से पहले सिर्फ निम्न सहकारीगण थे। छोटे-छोटे कस्बों के इन मामूली लोगों को, जो कि सितारों की तरह बड़े नगरों में उच्च स्थान प्राप्त कर चुके थे, स्वभावतः यह अनुभव न था कि किन परिस्थितियों में बन्दियों से अपराध स्वीकार करवाया जाता था, या जो-कुछ उन्हें मालूम था कि वह सिर्फ सुनी हुई बातों पर ही आधारित था। इसके अलावा येझोव के जमाने के पूछताछ के सर्वप्रचलित तरीकों को उसके उत्तराधिकारी बेरिया के जमाने में अपेक्षया कम काम मे लाया जाता था, यद्यपि इन तरीकों को पूरी तरह कभी भी न छोड़ा गया था। अतः येझोव-काल के अन्त में युवा मजिस्ट्रेटों का एक बड़ा भाग 'जनता के शत्रुओं' के अपराध में और उनकी अपराध-स्वीकृतियों में बहुत-कुछ सचाई के साथ विश्वास करता था।

येझोव-काल के अन्त मे गिरफ्तार हुए व्यक्तिगत मजिस्ट्रेटों पर समाचार-पत्रों ने अभियोग लगाया कि उन्होंने हिंसात्मक तरीकों के द्वारा कैदियों से जबरदस्ती झूठा अपराध स्वीकार करवाया था। मजिस्ट्रेटों पर दरअसल मुकदमे भी चले और उन्हें दण्ड-विधि में निर्धारित नियमों का उल्लंघन करने के लिए दो से तीन साल तक की कैद या बलात्-श्रम की सजा दी गई। इस प्रकार किएव के एन० के० वी० डी० के राजनीतिक कार्यपालन-विभाग के प्रधान कप्तान शिरोकी को, मोलदेविदन जनतन्त्र के एन० के० वी० डी० के प्रधान पद पर नियुक्त किए जाने के बाद गिरफ्तार किया गया और तिरासपोल के सार्वजनिक मुकदमे में गोली से मार देने की सजा दी गई, हालाँकि उन बेशुमार कैदियों के लिए कुछ न किया गया जिनकी अपराध-

स्वीकृतियों और सज़ाओं के लिए वह जिम्मेवार था। हममें से एक लेखक तो दरअसल उससे परिचित था और जानता था कि वह कोई खास तौर पर सख्त मजिस्ट्रेट न था। कुछ भी हो इसमें शक नहीं कि वह अपने बड़े अफसरों के हुक्म पर ही काम करता था। सोवियत यूनियन में कई बार सरकारी रुख के मुताबिक व्यक्तिगत उदाहरणों को लेकर उन्हें 'निम्न अधिकारियों द्वारा अपने अधिकारों का उल्लंघन' या जान-बूझकर की गई विद्रोही कार्यवाही करार कर सख्त सज़ा दी जा चुकी थी।

एन० के० वी० डी० के गिरफ्तार अधिकारियों के साथ अन्य कैदियों-जैसा ही बरताव होता था, पर उनसे पूछताछ और ज्यादा सख्ती के साथ की जाती थी। वे अन्य कैदियों के आशावाद या अपराध-स्वीकृतियों की कहानियों के उनके आविष्कार में भाग न ले पाते थे। वे बेहद हठी और अपराध स्वीकार करने के इच्छुक न होते थे, क्योंकि वे जानते थे कि भविष्य में उनके साथ क्या होने वाला है। उन पर प्रायः सदा ही 'दण्ड संहिता' के ५८वें अनुच्छेद, पेराग्राफ १ के अनुसार राजद्रोह का अभियोग लगाया जाता था। किसी भी समय अपने मारे जाने का भय उन्हें बना रहता था यद्यपि वे अभिशस्त न हुए थे। ज़रा-सी भी आवाज़ से वे चौंक उठते थे हालांकि उनकी मुद्रा शान्त बनी रहती थी और वे एन० के० वी० डी० के भेदों को छिपाए रखने में अधिक-से-अधिक सावधानी बरतते थे।

उनमें से अधिकांश ने स्वीकार किया कि उनकी अपनी गिरफ्तारी से पहले सोवियत यूनियन में उनकी आस्था कभी भी कम न हुई थी। अपराध-स्वीकृति के लिए कही गई मनगढ़ंत कहानियों की असम्भवता के बावजूद भी वे कैदियों को कम-से-कम जनता का और सोवियत-पद्धति का भावी शत्रु जरूर समझते थे। शुरू में वे अपनी गिरफ्तारियों को ऐसी गलतफहमी समझते रहे जो जल्दी ही दूर हो जाने वाली थी। इजाजत मिलने पर वे अपने उन भूतपूर्व साथी और बड़े अफसरों को शिकायत के पत्र लिखते जो कि अब उनकी जांच करने वाले मजिस्ट्रेट थे, पर धीरे-धीरे उन्हें ज्ञात होने लगा कि वे अपने अन्य साथी कैदियो की तरह ही जनता के शत्रु थे।

: ६ :

तीन उदाहरण

गत परिच्छेदों में हमने शुद्धीकरण और उसके द्वारा प्रभावित जनता के विभिन्न अंगों तथा देश में एन० के० वी० डी० के प्रमुख स्थान का एक समुचित चित्र उपस्थित करना चाहा है। हम जान-बूझकर व्यक्तिगत संस्मरणों के तरीके से दूर रहे हैं और उसके बजाय हमने ऐतिहासिक वृत्तान्त का तरीका अपनाया है जिसके फलस्वरूप सजीवता और मानवीयता का अभाव रह जाना अनिवार्य हो गया है।

किसी हद तक इस कमी को पूरा करने के लिए हमने तीन उदाहरणों का बहुत-कुछ सविस्तार वर्णन करना निश्चय किया है। हमने अपनी जेल की कोठरी के एक साथी का वृत्तान्त उद्धृत किया है जिसने हमें अपने वृत्तान्त के अलावा अन्य दो व्यक्तियों का हाल भी सुनाया था। हमारे इस साथी ने अपने वृत्तान्त का कुछ भाग जेल में, जहाँ कि हम लोग काफी समय तक साथ रहे थे और बाकी भाग अपनी रिहाई के बाद सुनाया था और जहाँ तक हो सका है हम इसे उसके शब्दों में ही उद्धृत कर रहे हैं। हमने इसमें न कुछ जोड़ा है और न बदला है। उस व्यक्ति के चरित्र से परिचित होने के कारण हम उसके वृत्तान्त की यथार्थता का आश्वासन दिला सकते हैं जिसकी जांच हमने अन्य सूत्रों से भी की है।

अभी तक हम अपने-आपको, जहां तक सम्भव हुआ है, किसी भी

प्रकार के नैतिक निर्णय की घोषणा करने से रोकते आए हैं और इस बन्दी की कहानी में दिये गए ऐसे निर्णयों के लिए हम जिम्मेवार नहीं हैं। हम इस कहानी को बिना बदले हुए केवल एक प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

हम इन तीनों उदाहरणों को विशेषतः भयावह समझकर नही पेश कर रहे और न हमारा यह कहना है कि इन उदाहरणों से सम्बन्धित व्यक्तियों का भाग्य विशेषतः असाधारण था। इनसे भी बुरे उदाहरण मौजूद थे पर हम इन्हें इसलिए दे रहे हैं क्योंकि वे प्रतिनिधि रूप हैं और क्योंकि इस कथाकार की परिस्थितियों व व्यक्तित्व से हम अपनी पूरी जानकारी के कारण आश्वासन दिला सकते हैं कि यह कहानी पूर्णतः तथ्यों पर आधारित है।

कुछ शब्द कथाकार के लिए भी आवश्यक हैं। वह एक प्रसिद्ध इतिहासकार है और एक प्रमुख रूसी विश्वविद्यालय में प्राचीन इतिहास का प्रोफेसर था जहाँ कि वह प्राचीन इतिहास और बाद में मध्यकालीन इतिहास का अध्यक्ष रह चुका था। उसका पिता एक उच्च धर्माधिकारी था। इस कथाकार ने क्रान्ति से पूर्व सेण्टपीटर्सबर्ग में अपना ऐतिहासिक अध्ययन समाप्त किया था। वह उन प्रसिद्ध इतिहासकार रॉसतोवतज़्यैफ़ का एक प्रतिष्ठित शिष्य था जो कि क्रान्ति के बाद रूस छोड़कर येल विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बन गए थे। यह कथाकार इतिहासकार के रूप में एडुअर्ड मेयर, रॉसतोवतज़्यैफ आदि द्वारा आरम्भ की हुई विचार-धारा का समर्थक था। उसे किसी भी तरह एक कट्टर मार्क्सवादी नहीं कहा जा सकता था, हालाँकि सोवियत शासन में उसने कभी भी अपने व्याख्यान या अपने लेखों द्वारा इतिहास की अनुदार वित्ति का खण्डन नहीं किया था।

इतिहासकार की अपनी कहानी

सोवियत विद्वानों को कई शुद्धीकरणों का पहले से ही अनुभव प्राप्त हो चुका था। १६३१ में 'प्रोलेतेरियन रेवोल्यूशन' नामक पत्र के सम्पादक को स्तालिन के प्रसिद्ध पत्र के बाद होने वाला शुद्धीकरण सबसे अधिक उग्र

था। इस पत्र में स्तालिन ने सोवियत विद्वानों पर अराजनीतिक होने और सोवियत-निर्माण की पूर्ति के कार्यों में पिछड़ जाने का दोषारोपण किया था; उसने समस्त विद्या और समस्त बौद्धिक कार्यों को कम्युनिस्ट राजनीति के कार्यों व उद्देश्य के अधीन बना देने की माँग की थी।

सब विद्वानों को अपने पापों के लिए पश्चात्ताप करना पड़ा और स्वयं को सहर्ष दोषी ठहराना पड़ा। इसे 'आत्मा-विवेचना' कहते थे। उन्हें मार्क्सवाद-लेनिनवाद के प्रति अपनी भक्ति और सोवियत-निर्माण के प्रति अपनी लगन का निरन्तर प्रदर्शन करते रहना पड़ता था। जाँच-पड़ताल के बाद बहुत से लोगों को पदच्युत और गिरफ्तार किया गया।

१६३१-३२ के शुद्धीकरण का मुझ पर विशेष प्रभाव न पड़ा। न मैं इतना जवान था कि पुरानी पीढ़ी के लोगों के खिलाफ लड़ाई में भाग ले सकूँ और न इतना बूढ़ा या प्रमुख था कि दूसरों के हमले का निशाना बन सकूँ। फलतः कुछ छोटी-मोटी बातों के अतिरिक्त न मेरी जाँच-पड़ताल की गई और न मुझे अपने साथियों की जाँच-पड़ताल में शरीक किया गया।

किन्तु १६३७ में स्थिति बहुत अधिक गम्भीर बन गई। मैं अपने सहकारियों और शिष्यों के बर्बर आक्रमणों का निशाना बन गया; हर तरह की जाँच-पड़ताल, आलोचना और आत्म-विवेचना का मैं शिकार बन गया और अन्त में गिरफ्तार होकर ही रहा।

विश्वविद्यालय की पत्रिका में 'जान-बूझकर या गलती से?' नामक एक लेख के प्रकाशन के बाद ही मेरी जाँच-पड़ताल आरम्भ हुई। इस लेख का लेखक मेरा ही एक शिष्य था, जो कि प्रसंगवश कहना पड़ता है कि सम्पूर्णतः प्रतिभाहीन था और जो कि सक्रियवादियों के गुट में रहकर अपना भविष्य बना रहा था। उसने जॉन ऑफ आर्क को अपने और पार्टी के संरक्षण में ले लिया।

मुझ पर पार्टी-नीति से पथभ्रष्ट होने का अभियोग लगाया, गया क्योंकि शतवर्षीय युद्ध-सम्बन्धी एक भाषण में मैंने प्रसिद्ध फ्रांसीसी नायिका, जॉन-

ऑफ आर्क को अधीर और उद्दण्ड बताया था। कामिण्टर्न के सेक्रेटरी-जनरल दिमित्रॉफ ने कामिण्टर्न के गत अधिवेशन में घोषणा की थी कि फ्रेंच कम्युनिस्टों ने फासिस्टों के इस दावे को मानने से इन्कार किया है कि फ्रांस की राष्ट्रीय नायिका जॉन ऑफ आर्क उनके सिद्धान्तों की प्रवर्त्तक थी। दूसरे शब्दों में फ्रेंच कम्युनिस्ट अपने-आपको अच्छे देश-भक्त बताना चाहते थे, क्योंकि जॉन ऑफ आर्क ने एक विदेशी उत्पीड़क के विरुद्ध स्वतन्त्रता-संग्राम में भाग लिया था। कम्युनिस्ट केवल 'न्यायोचित' युद्धों को ही अच्छा मानते थे। अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतन्त्रता-संग्राम भी न्यायोचित था। यह थी दिमित्रॉफ की दलील। लेकिन मैंने अपने भाषण में जॉन ऑफ आर्क को उद्दण्ड बताकर संघर्षरत जनता के प्रतिनिधि के रूप में उसकी महत्ता कम कर दी थी और इस प्रकार पार्टी के एक नेता के वक्तव्य का आदर न किया था। अतः राष्ट्रीय आन्दोलन-सम्बन्धी विषय में पार्टी-नीति से पथभ्रष्ट होकर मैंने अपने-आपको बुर्जुआ विद्वान् साबित कर दिया था। विश्वविद्यालय के भित्ति-समाचारपत्र में प्रकाशित एक लेख में मुझ पर यह अभियोग लगाया गया था।

यह बातें १६३६-३७ में हुई थीं। दो वर्ष पूर्व कोई भी सोवियत-इतिहासकार किसी भी भाषण में जॉन ऑफ आर्क का नाम लेने का भी साहस नहीं कर सकता था। ऐसा करने से वह आदर्शवादी करार कर दिया जाता, क्योंकि सर्वप्रथम मार्क्सवादी ऐतिहासिक विज्ञान ने ऐतिहासिक प्रक्रिया में व्यक्ति के कार्य को, विशेषतः 'नायक नायिकाओं' के कार्य को, कोई महत्त्व प्रदान न किया था और इससे भी अधिक चर्च द्वारा ऋषिवत् माने जाने वाले नायक-नायिकाओं का तो सम्पूर्णतः परित्याग कर रखा था। इसके अतिरिक्त, मार्क्सवादी इतिहास उस समय तक केवल वर्ग-संघर्ष का ही इतिहास था न कि साधारण युद्धों और मूढ़ विश्वासों का इतिहास, और इसलिए शतवर्षीय युद्ध-जैसी आकस्मिक घटनाओं को और उससे भी ज्यादा जॉन ऑफ आर्क जैसी परियों की कहानियों को उस इतिहास में स्थान नहीं दिया जा सकता था। सोवियत इतिहासकार 'मध्यकालीन मूढ़ विश्वास'

और 'चर्च के प्रतिक्रियावादी एवं विश्वासघातक कार्यों' को चित्रित करने के लिए ही केवल जॉन ऑफ आर्क का उल्लेख कर सकता था।

दो वर्ष पहले यह स्थिति थी लेकिन १६३६ तक एक मौलिक परिवर्तन हो चुका था। शतवर्षीय युद्ध और 'युद्ध', 'कूटनीति,' 'विचारधाराएँ'-जैसे अन्य ऐतिहासिक तथ्य, जो अभी तक उपेक्षित और निन्दित थे, अब इतिहास के अध्यापन में प्रमुख स्थान प्राप्त करने लगे। 'पाखण्डी' या 'मध्यकालीन अन्धविश्वास और धार्मिक कपट की शिकार' कहलाई जाने वाली जॉन ऑफ आर्क अब 'फ्रांसीसी जनता की राष्ट्रीय नायिका' और 'न्यायोचित स्वतन्त्रता-संग्राम की नेत्री' का रूप धारण कर चुकी थी। बोलशेविक पार्टी ने उसे अपने संरक्षण में ले लिया था। यह तार्किक न्याय था।

मेरे अन्य साथियों को भी ऐसे ही अनुभव हुए। उदाहरण के लिए मध्यकालीन इतिहास के विशेषज्ञ ब्रेचकैविच ने मेकिवेली-सम्बन्धी एक भाषण में मार्क्स का उल्लेख किया जिसने सर्वविदित है कि इटालियन राजनेता मेकिवेली की बहुत प्रशंसा की थी। किन्तु इस बीच सोवियत यूनियन के राजकीय अभियोजक विशिन्स्की ने एक मुकदमे में एक कैदी पर अन्य बातों के साथ-साथ मेकिवेलीवाद का भी अभियोग लगाया और इस प्रकार मेकिवेली की निन्दा की। ब्रेचकैविच ने समाचार-पत्रों में विशिन्स्की का यह भाषण नहीं पढ़ा था और वह मार्क्स के निर्देश से ही सन्तुष्ट था। राजनीतिक संसार की उपेक्षा करने, पार्टी-नेताओं के वक्तव्यों की अवहेलना करने और अपने-आपको राजनीतिक रूप से उदासीन बनाए रखने का उस पर अभियोग लगाया गया।

केवल सोवियत इतिहासकारों के लिए ही स्थिति इतनी विषम न थी, अन्य सब विद्वानों का भी यही हाल था। वे साध्य जो कल तक निर्विवाद-रूप से सत्य समझे जाते थे आज अनास्थापूर्ण और पार्टी-नीति से पथभ्रष्ट समझे जाने लगे और वह व्यक्ति निश्चय ही अभागा था जो इन तार्किक परिवर्तनों के साथ कदम मिलाकर आगे न बढ़ पाता था।

जॉन ऑफ आर्क वाला मामला मेरे लिए मँहगा पड़ा, क्योंकि इसके साथ-साथ मेरी अन्य कई त्रुटियों और पापों को याद किया गया, जिनमें मेरी सामाजिक उत्पत्ति भी मेरा एक पाप था। लेकिन यह सब सिर्फ शुरूआत ही थी। जॉन ऑफ आर्क के बाद माइडास आया। मैंने अपने एक भाषण में किसी बात का, शायद धन और मुद्रा के आविष्कार को समझाने के लिए माइडास की कथा का उल्लेख किया। यह पौराणिक कथा उस विषय के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण न थी और मैंने सिर्फ ऐसे ही उसका जिक्र कर दिया था; अतः हो सकता है कि इस कथा के किसी पहलू पर मैंने पूरा जोर न दिया हो। शायद हो सकता है मैंने उसके अपरिचित रूप का ही वर्णन किया हो।

इसके बाद स्तालिन ने अधिकारियों और पार्टी के आम सदस्यों के बीच के मतभेद को लेकर अपने एक भाषण में एण्टियस की कथा का उल्लेख किया। मेरे आलोचकों ने, जिनमें मेरे अपने सहकारीगण भी थे और जिन्हें 'नई पीढ़ी का प्रतिनिधि' कहा जाता था, मुझे बताया कि केवल एक बुर्जुआ प्रोफेसर ही—मेरा नाम भी लिया गया—इन पौराणिक कथाओं की उपेक्षा करेगा या उन्हें तोड़-मरोड़कर अपने छात्रों के सामने एक बुरे उदाहरण के रूप में पेश करेगा, जब कि पार्टी और सारे संसार के श्रमजीवियों के सबसे बुद्धिमान और ओजस्वी नेता स्तालिन ने पौराणिक-कथाओं के प्रति अपना महानतम आदर प्रदर्शित किया है और यहाँ तक कि अपने निर्णयों के समर्थन में उनको उद्धृत भी किया है। मेरे आलोचकों की राय में मेरी गलती का यह राजनीतिक अर्थ लगाया गया कि मैंने पार्टी-नेता के प्रभुत्व के प्रति अपर्याप्त आदर दिखाया है और उसके वक्तव्यों को अपना पथ प्रदर्शक सिद्धान्त के रूप में स्वीकार नहीं किया है। यह सब-कुछ एक मजाक नजर आता है, लेकिन यह एक ऐसा मजाक था जिसका परिणाम गम्भीर था।

माइडास वाली घटना के बाद मुझ पर अधिकाधिक दोषारोपण होने लगा हालाँकि मेरे ऊपर पृथक् और व्यक्तिगत हमले ही किए जाते थे। मैं

अधिकाधिक स्पष्टता के साथ महसूस करने लगा कि यह सब एक बड़े हमले की तैयारियाँ हैं और आखिर वह हमला १६३७ के पतझड़ में शुरू हो ही गया जब कि सारा देश एक अपूर्व. शुद्धीकरण से पीड़ित था। आखिर मेरी बारी भी आई। लगातार कई दिनों और रातों तक मैं जाँच-पड़ताल की प्रक्रिया का शिकार बना रहा जो कि विश्वविद्यालय की उन सभाओं में होती थी जिनमें मेरे साथी, सहकारी और छात्रगण उपस्थित होते थे। साथ ही विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं मे मेरे निबन्धों और लेखों की तीव्र आलोचना प्रकाशित होने लगी।

यह अभियोग, जैसा कि सामान्यतः ऐसे मामलों में होता है, पूर्व-प्रवृत्त, अतिरंजित, उलझे हुए और अक्सर बिलकुल झूठे होते थे। मेरे ऊपर खास तौर पर त्रॉत्स्कीवाद, बुर्जुआ विचार-धारा और मार्क्सवाद-लेनिन वाद के मूल ग्रन्थों की उपेक्षा करने का अभियोग लगाया गया। मैं इस कार्यवाही की असलियत को चित्रित करने के लिए कुछ उदाहरण पेश करता हूँ।

उदाहरण के लिए मेरा त्रॉत्स्कीवाद क्या था? भूत-प्रेत-सम्बन्धी सिद्धान्तों के एक अध्ययन में मैंने कुछ विचार व्यक्त किए थे। मैंने कहा था कि देहाती लोग हमेशा पिछड़े हुए होते हैं और शासक-वर्ग के ऐतिहासिक विकास के पीछे ही रहते हैं। यह एक साधारण-सा विचार था, किन्तु मेरे आलोचकों ने इससे निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला। किसानों के पिछड़ेपन के बारे में किसने कहा था? त्रॉत्स्की ने! यह विचार कि ऐतिहासिक विकास में कृषक-वर्ग पिछड़ा हुआ है प्रत्यक्ष त्रॉत्स्कीवाद है और जो इतिहासकर इस विचार की पुष्टि करता है स्वयं त्रॉत्स्कीवादी है। अतः मैं त्रॉत्स्कीवादी था। रोमन साम्राज्य के कृषक विद्रोह-सम्बन्धी एक निबन्ध में मैंने दिखाया था कि उत्तरी अफ्रीका के डोनेटिस्ट आन्दोलन का एक भाग–रोमनों के खिलाफ न्यूमिडियनों की लड़ाई–राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का संघर्ष था। यह मुझे बुर्जुआ राष्ट्रवादी करार करने के लिए काफी था। मैं एक ही साथ त्रॉत्स्कीवादी और बुर्जुआ राष्ट्रवादी बन गया जोकि एक आदमी

के लिए ज़रूरत से ज्यादा था। लेकिन मुझ पर 'बुर्जुआ विज्ञान के प्रभुत्व के सामने झुकने' का अभियोग भी लगाया गया, क्योंकि मैंने पश्चिमी यूरोपीय विद्वानों के शब्द उद्धृत किए थे, और 'शास्त्रीय विरासत की उपेक्षा' करने का भी—क्योंकि कई बार मैंने मार्क्स, लेनिन और स्तालिन के शब्द उद्धृत न किए थे।

दिन-प्रतिदिन आलोचनाएँ तीव्र होने लगीं और आवाज़ें उठने लगीं 'कीलों से इसे गाढ़ दो!' (ईसा की तरह—अनुवादक) या सोवियत शब्दावली में 'संगठक आज्ञप्ति'—बरखास्त और गिरफ़्तार किए जाने की माँग होने लगी। मेरे सिर पर झूलती हुई तलवार अधिकाधिक खतरनाक बनती गई और मेरा भविष्य अधिकाधिक स्पष्ट।

१९३७ के दौरान में चेतावनी की घण्टी की तरह कई घटनाएँ घटीं। उस वर्ष के वसंत मे विश्वविद्यालय के मेरे निकटतम निजी मित्र और साथी गिरफ्तार कर लिये गए—इतिहासकार लोमोव जो कि भूतपूर्व मेनशेविक था और साहित्यिक इतिहासकार प्यैरोव। केवल वे ही मेरे अन्तिम स्वतन्त्र मित्र थे।

मैं स्वभावतः अपने मित्रों के लिए दुखी था, किन्तु मैं उनके लिए केवल दुखी ही न था मुझे उनका भय भी था। आखिर वे हमारी बातचीत के दौरान में कही हुई उन बातों के बारे में कुछ कह सकते थे जो कि हमेशा ही कट्टर विचार-धारा के अनुरूप नहीं होती थीं। इस वार्तालाप में कुछ भी आपराधिक न था, न उनमें सोवियत सत्ता पर आक्रमण ही किया जाता था। किन्तु प्रत्येक वार्तालाप में प्रकट होने वाली छोटी-मोटी आलोचनाओं और क्षोभ की अभिव्यक्ति और निराशाओं ने प्रत्येक सोवियत नागरिक को स्वयं को अपराधी समझने के लिए बाध्य कर रखा था।

उसी वर्ष के ग्रीष्मकाल में एक उल्लेखनीय घटना घटी। यूक्रेन के जन-कमिस्सार परिषद् के अध्यक्ष ए० ल्युबच्चैन्को ने अपनी पत्नी एन० क्रूप्यैनिक की हत्या करने के बाद स्वयं आत्महत्या कर ली। इस घटना का यूक्रेन पर वही प्रभाव पड़ा जो कि किरोव की हत्या का समस्त सोवियत यूनियन

पर पड़ा था। १९३४ में यूक्रेन के एक अन्य जन-कमिस्सार की आत्महत्या का सबक हम सब पहले ही सीख चुके थे। इसके बाद विभिन्न बुद्धिजीवी क्षेत्रों के तथाकथित बुर्जुआ राष्ट्रवादियों की सामूहिक गिरफ्तारियाँ शुरू हुईं। बहुत से लोगों को उस राजनीतिक प्रदर्शन की कीमत अपनी जान या आजादी से देनी पड़ी। ल्युबच्यैन्को के मामले में ऐसे ही परिणाम की आशा थी किन्तु इस बार इसका परिमाण बहुत बड़ा होने वाला था।

ल्युबच्यैन्को युग्म की मृत्यु का मेरे ऊपर प्रभाव पड़ना पूरी तरह सम्भव था। कुछ भी हो मुझे यूक्रेनियन बुर्जुआ राष्ट्रवादी जरूर बताया जाता। यह सत्य है कि यूक्रेनियन राष्ट्रवाद से मेरा कभी कोई वास्ता न रहा था और न मुझे उसके प्रति सहानुभूति ही थी, लेकिन मेरा नाम यूक्रेनियन था और मेरे परिचित जनों में यूक्रेनियन राष्ट्रवाद से सहानुभूति रखने वाले कई लोग थे।

मेरी स्थिति इसलिए और विषम बन गई थी क्योंकि ल्युबच्यैन्को की पत्नी मेरे साथ विश्वविद्यालय में अध्यापिका थी और साथ ही विश्वविद्यालय की ट्रेड यूनियन समिति की अध्यक्षा भी थी। इसका मतलब यह था कि एन० के० वी० डी० वाले विश्वविद्यालय में उसके साथ काम करने वालों में उसके पति के साथ सहानुभूति रखने वाले और सहयोग देने वालों की तलाश करेंगे। इससे क्या फ़र्क पड़ता था कि मैंने अपने सारे जीवन में उस स्त्री से केवल एक-दो बार ही थोड़े से शब्द आदान-प्रदान किए थे? इससे भी क्या फर्क पड़ता था कि इस उच्च स्त्री-अधिकारिणी द्वारा दी जाने वाली दावतों आदि में मुझे कभी भी आमन्त्रित नहीं किया गया था? मेरे साथियों की गिरफ़्तारी और ल्यूबच्यैन्को की आत्महत्या ने मुझको अपनी स्थिति के बारे में गम्भीरता के साथ सोचने के लिए बाध्य किया। जांच-पड़ताल ने तो स्थिति की गम्भीरता के बारे में शक की गुंजाइश नहीं रखी थी।

और इससे भी बढ़कर एक स्थिति ऐसी पैदा हो गई थी जो कि सोवियत जीवन की एक खास बात थी। मेरा जान-पहचान के वे लोग जो कि मेरी तरह ही मेरे भविष्य को अच्छी तरह जान गए थे, मुझसे जान-बूझ-

कर दूर रहने लगे। जब हम रास्ते में मिलते तो वे मुझे न पहचानते या जल्दी से सड़क पार कर लेते थे। कई लोग बड़ी बेशरमी के साथ यह करते और कई लोग छिपी हुई शरम के साथ, जोकि मुश्किल से छिप पाती थी।

आखिर मेरा वक्त आ ही गया। १८ मार्च १९३८ को मैं गिरफ्तार किया गया और मेरे घर की जल्दी से तलाशी लेने के बाद मुझे एन० के० वी० डी० की जेल में ले जाया गया।

मैं समझा चुका हूँ कि मेरी गिरफ़्तारी मेरे लिए कोई आश्चर्य की बात न थी। मुझे एक वर्ष तक इसके लिए तैयार किया गया था; दरअसल मुझे अपने गिरफ्तार होने की बहुत पहले ही उम्मेद थी लेकिन पिछले एक वर्ष से मैं किसी भी समय गिरफ्तार होने के लिए तैयार बैठा था। लेकिन गिरफ्तारी का यह निरन्तर भय क्यों ? क्या यह इसकी अनिवार्यता की जानकारी थी ? सोवियत यूनियन के प्रति मैं अपना कौनसा अपराध महसूस करता था ?

अन्तिम प्रश्न का मैं पूरी ईमानदारी के साथ उत्तर दे सकता था कि मैंने कोई भी अपराध नहीं किया था। मुझे पूर्ण विश्वास था कि मैंने ऐसा कोई भी अपराध नहीं किया था जिसके लिए मेरी गिरफ्तारी को न्यायोचित ठहराया जा सके। यह सत्य है कि मेरे पिता एक कट्टर पादरी थे, लेकिन स्तालिन कह चुका था कि "बेटा अपने बाप के लिए जिम्मेवार नहीं है।" मैं अपने मित्रों और परिचितों के साथ हमेशा सोच-समझकर बातें किया करता था हालाँकि मैं मानता हूँ कि कई बार मैंने सोवियत जीवन के कई पहलुओं और कई घटनाओं पर आलोचनात्मक टिप्पणियाँ की थीं। मैं अपने सार्वजनिक रूप में सदा ही सम्पूर्णतः राज्यभक्त था और मैं बोलशेविज्म का कभी भी कट्टर और अटल विरोधी न था। मैं न सोवियत सक्रियवादी था और न गैर-पार्टी बोलशेविक। मैं एक राज्यभक्त सोवियत नागरिक था। क्या यह काफी न था ?

मुझ पर 'बुर्जुआ प्रवृत्तियों' या 'आदर्शवाद' और 'मार्क्सवाद के विरोध' का अभियोग लगाया गया। किन्तु जैसा कि मेरे आलोचकगण भली-

भाँति जानते हैं यह अतिशयोक्तियाँ थीं। मार्क्सवाद की अनिवार्य कट्टरता मुझे बुरी और झूठी लगती थी। मैं अपने-आपको कट्टर मार्क्सवादी कहने का दावा नहीं कर सकता था, क्योंकि पार्टी-नीति के निरन्तर परिवर्तनों ने वैज्ञानिक रूप से आधारित विश्वासों के साथ लगातार कट्टरता का रुख बनाए रखना असम्भव बना दिया था। लेकिन मैं अपने ऐतिहासिक कार्य में सरकारी हिदायतों की हद में ही रहने की हमेशा कोशिश करता था; 'शास्त्रीय विरासत' का पूरा उपयोग करता और सोवियत नीति की इच्छाओं के अनुसार चलता था। इस काम में किसी हद तक मैं सफल भी हो पाया था क्योंकि मुझसे काफी तकाज़ा करने वाले मेरे श्रोतागण मुझसे सन्तुष्ट थे, और मेरी जाँच होने तक मुझे एक राज्यभक्त सोवियत विद्वान् समझा जाता था। इतना सब होते हुए भी मैं अपनी गिरफ्तारी के लिए तैयार था। क्यों? क्योंकि अन्य सब सोवियत नागरिकों की तरह मुझमें भी अपराध की तथा न समझ में आने वाले एक पाप की भावना बनी रहती थी और अपनी सीमा को उल्लंघन करने की एक अस्पष्ट और अबोध्य भावना के साथ ही अनिवार्यतः दण्ड पाने की एक अटल आशंका भी मौजूद रहती थी। इस प्रकार हममें से हर एक व्यक्ति का छानबीन, जाँच-पड़ताल, आलोचना और आत्म-विवेचना द्वारा एक अलग रूप बन गया था। उन परिचितों, साथियों और मित्रों की गिरफ़्तारियों ने जो कि अपने-आपको हमारे जितना ही दोषी या निर्दोष महसूस करते थे, इस मानसिक दशा को और अधिक उग्र बना दिया।

जब नियमानुसार सामान्य कार्यवाहियों के बाद मुझे एक अकेली कोठरी में रख दिया गया तो मुझे एक राहत-सी मिली—एक सोवियत विद्वान के यथाक्रम जीवन के सख्त दिनों के बाद मिलने वाली राहत। भाषण, सम्मेलन, सभाओं और अपने निरन्तर कार्य के बोझ से मेरे दिन लबालब भरे रहते थे। कई बार मुझे दिन में पन्द्रह-सोलह घण्टे काम करना पड़ता था जिसमें अपने घर में किया हुआ काम शामिल न होता। इसके अलावा राजनीतिक चिन्ताएँ सदा बनी रहती थीं। प्रत्येक व्याख्यान के बाद प्रत्येक

विद्वान् को यही चिन्ता रहती थी कि कहीं उसने मार्क्सवाद या पार्टी-नीति का उल्लंघन तो नहीं कर दिया और अगर किया है तो उसकी भूल को 'जान-बूझकर या गलती से' की गई समझा जायगा ? अन्त में अनिवार्यतः गिरफ्तार होने की निरन्तर आशंका तो बनी ही रहती थी। जीवन बड़ा कठिन था। प्रत्येक सोवियत नागरिक, कम-से-कम प्रत्येक 'जिम्मेवार श्रमजीवी', इसी दशा में रहता था और उसका पद जितना ऊँचा और उसकी जिम्मेवारियाँ जितनी ज्यादा होतीं उतना ही ज्यादा उसका बोझ बढ़ जाता था।

मैं अपनी कोठरी के एकाकीपन में अपनी स्थिति और अपनी गिरफ्तारी के हो सकने वाले कारणों पर विचार कर पाया। मैं मुख्यतः इस व्यथित प्रश्न से चिन्तित था कि मुझे क्या दण्ड दिया जायगा, क्या अभियोग लगाया जायगा और अपनी सफाई में मुझे क्या कहना होगा ? मैंने सोचा कि यह स्पष्ट था कि मुझ पर उन बातों का ही अभियोग लगाया जायगा जिनके लिए जाँच-पड़ताल के दौरान में मेरी आलोचना की गई थी, लेकिन अन्तर केवल इतना ही होगा कि मेरी 'त्रुटियों' को अब मेरा 'अपराध' बताया जायगा। इस प्रश्न का उत्तर कि मैंने जान-बूझकर या गलती से यह काम किए थे इस बार दूसरी तरह दिया जायगा और यह उत्तर निश्चय ही मेरे पक्ष में न होगा। मेरे खिलाफ की गई पहले की शिकायतों को अब 'सोवियत-विरोधी प्रोपेगेण्डा' और 'सैद्धान्तिक क्रान्ति-विरोध' करार कर दण्ड-संहिता की भाषा में रूपान्तरित कर दिया जायगा। इसके लिए तीन वर्ष की कैद से लेकर 'सर्वोच्च-दण्ड' तक दिया जा सकता है। यह बहुत बड़ा फर्क था, लेकिन क्यों मैं यह समझूँ कि मुझे बदतर सज़ा ही दी जायगी ? क्या मेरा अपराध वास्तव में इतना भीषण था ? जॉन ऑफ आर्क ? माइडास ? क्या मुझे आर्लियन्स की कुमारी के लिए एक अपशब्द कहने पर अपनी ज़िन्दगी देकर कीमत अदा करनी होगी ? ट्रॉत्स्कीवाद ? राष्ट्रवाद ? मेरे जुर्म का क्या सबूत था ? एक भाषण के बाद अपने दो साथियों से मेरी बातचीत ही क्या काफी सबूत था ? लेकिन जो-कुछ मैंने कहा था वह

किसने सुना ? क्या दो-तीन साथियों को अपनी निजी बातचीत में अपनी मरज़ी के मुताबिक कुछ भी कहने का हक़ नहीं है ? और अगर मान भी लिया जाय कि उस वार्त्तालाप में व्यक्त मेरे राजनीतिक विचारों के बारे में एन० के० वी० डी० को मालूम भी हो गया हो तो क्या होगा ? क्या मुझे मुजरिम करार करके सज़ा देने के लिए वह काफी होगा ? दण्ड-संहिता में प्रचार को अपराध माना गया है, व्यक्तिगत वार्तालाप को नहीं। इस सब सोच-विचार से मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि मुझे तीन साल से ज्यादा सजा न दी जायगी। यह निश्चय ही एक अप्रिय भविष्य था। लेकिन आखिर सोवियत यूनियन से ऐसे कितने लोग थे जो कभी जेल न गये हों ? बच्चों को जिस तरह कभी-न-कभी खसरा निकलता ही है उसी तरह कभी-न-कभी कैद होना अनिवार्य था। कहावत है कि सोवियत नागरिक तीन समूहों में बँटे हैं : वे जो कि जेल में हैं, वे जो कि जेल हो आए हैं और वे जो कि अभी तक जेल नहीं गये हैं। मैं एक समूह से केवल दूसरे समूह में ही तो स्थानान्तरित कर दिया गया था।

एक दूसरी कोठरी में मुझे भेजे जाने से मेरे चिन्तन में बाधा पड़ी। यह कोठरी भी 'अकेली' थी लेकिन फिर भी इसमें पाँच या छः कैदी थे। यह मेरे प्रथम बन्दी-मित्र थे और साथ ही कारावास के सिद्धान्त और अभ्यास के मेरे शिक्षक भी थे जो कि मेरे लिए एक बिलकुल नई विद्या थी। मेरे लिए कारावास का वह विद्यालय साथ ही एक ऐसा विद्यालय भी था जहाँ कि मैंने बोलशेविज़्म की असलियत या कम-से-कम जनता को डराने-धमकाने और उस पर असर डालने की बोलशेविक पद्धति को जाना।

मैंने अपने हरेक परिचित बन्दी से बहुत-कुछ सीखा। चूँकि मैं एन० के० वी० डी० की नजरों में एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक अपराधी था अतः मुझे समान महत्त्वपूर्ण लोगों के साथ रखा गया और दरअसल वे बड़े दिलचस्प लोग निकले। उनमें से हरेक बोलशेविज़्म की पुस्तक का मेरे सामने खुला हुआ एक नया पृष्ठ था जिसे मैंने बड़े गौर के साथ पढ़ा।

मेरी कोठरी के साथियों ने जो-कुछ मुझे बताया उससे मेरा विश्वास हो

गया कि मेरा मामला जितना मैंने समझ रखा था उससे कहीं ज्यादा गम्भीर था। मुझे पूछताछ के तरीकों के बारे में—जैसे कि 'समझाना बुझाना', कुरसी के पाये को काम में लाना, सोने न देना, और दूसरों को पकड़वाना आदि के बारे में—जानकारी न थी। मैंने अपने-आपको अपराधी करार करने वाली मनगढ़ंत कहानियों को दिखावे के मुकदमों का ही अंग समझ रखा था। मुझे मालूम न था कि मुझसे भी यही आशा की जायगी।

जाँच करने वाले मजिस्ट्रेट के सामने मुझे कौनसी कहानी गढ़ने के लिए बाध्य किया जायगा कि मैं अपने मामले के असली तथ्यों के अनुरूप इस कहानी को कैसे बना पाऊँगा और कि भरती करने वाले सवाल का क्या जवाब देना होगा। यह याद रखना चाहिए कि अपने-आपको निर्दोष या निरपराधी साबित करने का खयाल ही मेरे दिमाग में कभी नहीं आया। हरेक सोवियत नागरिक के दिमाग में यह हथौड़े की चोट से बिठा दिया गया था कि अपने अपराध को अस्वीकार करना एन० के० वी० डी० की अक्षुण्णता पर सन्देह प्रकट करना है जिसके फलस्वरूप मामला और ज्यादा बिगड़ सकता है। एन० के० वी० डी० वाले जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं। अगर कोई गिरफ्तार किया गया है तो जरूर ही कोई राजनीतिक बुनियाद होगी जिस पर कोई सन्देह नहीं कर सकता।

मेरे बाहरी गुण मुझे सैद्धान्तिक विध्वंस अथवा क्रांति-विरोधी प्रचार का अभियुक्त बनाने के लिए उपयुक्त थे। इस प्रकार का अभियोग मेरी उन 'प्राविधिक त्रुटियों' के साथ ठीक बैठता था जिनके बारे में मैं अपनी जाँच-पड़ताल के दौरान में बहुत-कुछ सुन चुका था। लेकिन स्थिति कहीं ज्यादा गम्भीर निकली।

मेरी जाँच करने वाले प्रथम मजिस्ट्रेट शापिरो ने, जो कि एन० के० वी० डी० के तृतीय विभाग का प्रधान था, (यही जासूसों को पकड़ने वाला विभाग था जो सबसे ज्यादा सख्ती से काम लेता था) हमेशा पूछे जाने वाले इस प्रश्न से मेरा अभिवादन किया कि क्या मैं अपने-आपको क्रांति-विरोधी कार्यवाहियों के लिए अपराधी समझता हूँ। मैंने घुमा-फिराकर उत्तर देने

की कोशिश की। मैंने कहा कि यदि मेरी प्रावैधिक त्रुटियों को अथवा व्यक्तिगत वार्तालाप में व्यक्त किये हुए मेरे कुछ विचारों को क्रांति-विरोधी कार्यवाही समझा गया है तो मुझे अपने-आपको अपराधी स्वीकार करना पड़ेगा। घुमा-फिराकर उत्तर देने की मेरी इस कोशिश का जवाब शापिरो ने अपमान और धमकियों से दिया।

मेरे साथ बहुत दिनों तक चलने वाली पूछताछ का तरीका काम में लाया गया, साथ ही मुझे लगातार खड़ा रखा गया या असुविधाजन स्थिति में बिठाया गया और कई दिनों तक सोने नहीं दिया गया। पचास दिन तक लगातार प्रायः विना रुके हुए ही दिन-रात पूछताछ चलती रही। मुझे दिन में दो-तीन घण्टे से ज्यादा सोने न दिया जाता था और वह भी बैठकर सोना पड़ता था। कई दिन ऐसे भी होते थे और उनकी संख्या कम न थी जब कि मुझे बिलकुल सोने न दिया गया। खड़े-खड़े और बैठे-बैठे मेरे पैर सूज गए थे और नींद की कमी ने मेरे शरीर को पूर्णतः अशक्त बना दिया था। सोचने-समझने की मेरी शक्ति जाती रही थी। मुझे मारा-पीटा न गया था लेकिन मेरा विश्वास है कि अगर मुझे मारा भी जाता तो नींद की कमी से मेरी जो हालत बन चुकी थी उस पर और ज्यादा कुछ असर न होता। मेरी पूछताछ के दौरान में तेरह मजिस्ट्रेट बदले गए और मुझे बाद में मालूम हुआ कि इनमें से आधे गिरफ्तार किये गए और उन्हें भी अपने द्वारा गिरफ्तार किये गए लोगों जैसी ही मुसीबतें भोगनी पड़ीं। मेरी दीर्घ-कालीन पूछताछ में करीब हरेक आठ घण्टे बाद मजिस्ट्रेट बदल दिए जाते थे।

हरेक मजिस्ट्रेट मेरा मामला फिर से शुरू करता। जितनी पूछताछ हो चुकी थी उसका नतीजा जानने में उसे रत्ती-भर दिलचस्पी न होती। हरेक नया मजिस्ट्रेट अपने पूर्वाधिकारी से ज्यादा सख्त होता और ज्यादा बड़ी माँगें पेश करता था। नतीजा यह हुआ कि मेरा मामला पहाड़ की तरह बढ़ता गया। मेरा 'सैद्धान्तिक विध्वंस' और 'क्रांति-विरोधी प्रचार' तथा 'सैद्धान्तिक मोर्चे पर मेरी पथभ्रष्टता' अब मेरे प्रश्नकर्त्ताओं को स्वीकार न

थी। यह चाल सफल न हो पाई। मुझ पर सोवियत सत्ता के विरुद्ध सशस्त्र-विद्रोह की तैयारियों में भाग लेने और पार्टी-नेताओं के विरुद्ध आतंकवादी कार्यों की तैयारी करने का अभियोग लगाया गया। कहा गया कि यूक्रेन केन्द्रीय समिति का प्रथम सेक्रेटरी कॉसियर मेरे द्वारा आयोजित हत्या-षड्यन्त्र का शिकार होने वाला था।

पूछताछ के दौरान में मुझे मालूम हुआ कि इस भयंकर अभियोग का कारण यह था कि मैं कई वर्षों तक विज्ञान अकादमी की एक संस्था में काम कर चुका था और इस संस्था का प्रधान प्रसिद्ध विद्वान् और राजनेता, मिखाइल गरसॉव्स्की था। प्रोफेसर गरसॉव्स्की द्वारा विदेश से लौटकर यूक्रेन में किये गए वैज्ञानिक कार्य को एन० के० वी० डी० ने छिपी हुई सोवियत विरोधी कार्यवाही बताया था, और इसका कारण स्वयं एन० के० वी० डी० वाले ही जानते थे। फलतः प्रोफेसर गरसॉव्स्की के कार्य से किसी भी प्रकार सम्बोन्धित रहने वाला व्यक्ति एन० के० वी० डी० की नजरों में एक सोवियत-विरोधी राजनीतिक संगठन का सदस्य था। एन० के० वी० डी० की सूझ के अनुसार प्रोफेसर गरसॉव्स्की ने इस संगठन के सब कार्यकर्ताओं को खुद भरती किया था। उस प्रोफेसर और उसके राजनीतिक संगठन की इस परियों-जैसी कहानी में एन० के० वी० डी० ने मुझे भी एक पार्ट दिया। मेरी पूछताछ के दौरान में और बाद में एक अन्य दिखावे के मुकदमे में स्वर्गीय प्रोफेसर गरसॉव्स्की और ल्युबच्चैन्को के प्रेतों और जीवित पात्रों के रूप में उनके उत्तराधिकारियों तथा शिष्यों के साथ मुझसे अपना पार्ट अदा करने की माँग की गई।

जेल की कोठरी में प्राप्त शिक्षा ने बहुत-कुछ ऐसे ही काम के लिए मुझे तैयार कर रखा था, लेकिन फिर भी मैंने विरोध करना चाहा क्योंकि मुझ से अपने अलावा अन्य लोगों पर भी अभियोग लगाने की माँग की गई थी। प्रोफेसर गरसॉव्स्की को तो मैं नुकसान पहुँचा ही नहीं सकता था लेकिन उनकी पत्नी, पुत्री, भाई और परिवार के अन्य लोग तो थे ही। इसके अलावा उनके पुराने कार्यकर्ता भी थे जो कि मेरी तरह ही उनके क्रांति

विरोधी संगठन में सदस्यता पाने के लिए उम्मेदवार बताये गए थे।

प्रसंगवश यह कहा जा सकता है कि किसी व्यक्ति के साथ उसी जगह काम करना अभियोग का बाहरी आधार नहीं होता था। सिर्फ मामूली जान-पहचान या खाने-पीने व ताश के खेल पर जरा-सी मुलाकात ही काफी होती थी। अतः प्रत्येक सोवियत नागरिक को यह याद रखना पड़ता था कि किसी भी समय उस पर क्रान्ति-विरोधी कार्यवाहियों में भाग लेने का अभियोग लगाया जा सकता है और खास तौर पर जब कि उसके अन्य बाहरी गुण उसके पक्ष में न हों जैसे कि उसकी सामाजिक उत्पत्ति।

अन्त में मेरे द्वारा किए जाने वाला विरोध भी समाप्त हो गया—सिर्फ पचास दिन की पूछताछ और नींद की कमी के कारण ही नहीं बल्कि प्रोफेसर गरसॉव्स्की की पत्नी और बेटी तथा मेरे साथ काम करने वाली श्रीमती एन० एम० आर्कादियन का मुकाबला होने पर। मेरे सामने श्रीमती गरसॉव्स्की को लाए जाने पर उन्होंने बताया कि मैंने एक उस सोवियत-विरोधी संगठन में उनके और उनके पति के साथ भाग लिया था जिसका लक्ष्य सोवियत सत्ता के विरुद्ध सशस्त्र-विद्रोह की तैयारी करना था। पूछ-ताछ के दौरान में मुझे मृत प्रोफेसर के हाथ के लिखे हुए बयान दिखाये गए जिनमें घोषणा की गई थी कि उनका वैज्ञानिक कार्य वास्तव में छिपा हुआ क्रान्ति-विरोधी कार्य था और उनके सहकारियों ने उनकी इन योज-नाओं में भाग लिया था। मैं जानता था कि वह अपनी मृत्यु से कुछ पहले एन० के० वी० डी० द्वारा गिरफ्तार किये गए थे और उन्होंने इस प्रकार का अपना अपराध स्वीकार किया था, अतः मुझे विशेष आश्चर्य नहीं हुआ।

प्रोफेसर आर्कादियन और भी आगे बढ़ चुकी थी। उन्होने कहा कि यूक्रेनियन प्रेसिडेण्ट की पत्नी श्रीमती ल्युबच्यैन्को ने उन्हें गुप्त रूप से बताया था कि मैं उस 'सोवियत-विरोधी गुप्त संगठन' का बहुत दिनों से सदस्य था जिसके नेता प्रोफेसर गरसॉव्स्की और ल्युबच्यैन्को दोनों थे।

निःसन्देह यह सब कोरी कल्पना थी और मैं पूछताछ के उन तरीकों

को खूब अच्छी तरह जान गया था जिनके द्वारा इस तरह के बयान ज़बर-दस्ती हासिल किए जाते थे। लेकिन मैं यह भी समझ गया था कि अब अधिक विरोध करना व्यर्थ होगा क्योंकि मुझे अभिशस्त करने के लिए पर्याप्त प्रमाण मौजूद था। मैंने अपने-आपको अपने भाग्य पर छोड़कर स्वीकार किया कि मैंने सशस्त्र विद्रोह और आतंकवादी कार्यों की तैयारियों में भाग लिया था।

अब मैं समझ गया था कि दिखावे के मुकदमों में फँसे हुए लोग इतनी जल्दी हरेक अभियोग को क्यों स्वीकार कर लेते थे, और अब मुझे पुराने ज़माने की जादूगरनियों के पकड़े जाने से इन मुकदमों की तुलना रोचक प्रतीत न होती थी। कई परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं जिनमें कोई भी मनुष्य कैसा भी अपराध स्वीकार कर लेगा।

भरती किए जाने या करने वाले सवाल से मैं अपने-आपको होशियारी के साथ बचा पाया था। मैंने अपने परिचितों में केवल उन्हीं लोगों पर दोषारोपण किया जो कि मर चुके थे जैसे कि ल्युबच्चैन्को और गरसॉव्स्की—और यह नाम मेरे अभियोग के चित्र में ठीक बैठ भी गए—या उन लोगों पर किया जो कि मुझसे पहले पूछताछ की प्रक्रिया से गुजर चुके थे। मुझे विश्वास था कि मैं इन लोगों को नुकसान नहीं पहुँचा सकता, क्योंकि इन लोगों के लिए निर्धारित दण्ड इन्हें पहले ही मिल चुका था। मैंने उन जीवित और स्वतन्त्र व्यक्तियों, जैसे कि प्रोफेसर गरसॉव्स्की के भाई, प्रोफेसर तिरासॉव, अकादमी के एक सदस्य आदि, का नाम तभी लिया जब कि मेरे सामने और कोई चारा न था और तब भी मैंने केवल उन घटनाओं का ही उल्लेख किया जो कि समाचारपत्रों में प्रकाशित हो चुकी थीं या जाँच-पड़ताल और आलोचना व आत्म-विवेचना की प्रक्रिया में सार्वजनिक रूप से प्रकट हो चुकी थीं।

मुझे 'तोड़' लिया गया—यह शब्द उन कैदियों के लिए प्रयोग किया जाता था जो कि अपने काल्पनिक अपराधों को स्वीकार कर चुके थे। अब प्रत्यक्षतः अधिक नरम तरीके काम में लाए जाने लगे। मेरी लम्बी

पूछताछ के आखिरी दिनों में मुझे हर रोज कुछ घण्टों के लिए बिस्तरे में सोने की इजाजत भी दी जाने लगी और कुछ ऐसा भी हुआ कि मुझे नजर आने लगा कि मेरा मामला अब एक कम गम्भीर क्रम में प्रवेश कर रहा है। कुछ महीनों बाद मेरे मजिस्ट्रेट ने बिलकुल अचानक मुझसे कहा कि मैं अपने 'आपराधिक कार्यों' के वक्तव्यों में 'आतंक' सम्बन्धी अपनी कार्यवाहियों का उल्लेख न करूँ। मैंने खुशी के साथ ऐसा ही किया, खास तौर पर, क्योंकि आतंकवादी कार्यवाही या उसमें भाग लेना विद्रोह की तैयारी से कहीं बड़ा अपराध है।

मेरा खयाल था कि आतंक-सम्बन्धी निर्देश इसलिए हटा दिया गया था क्योंकि मेरे बाहरी गुणों और मेरी कहानी के साथ वह मेल नहीं खाता था। मुझे बाद में पता चला कि उन सब मामलों से यह बात निकाल ली गई थी जिनमें कोसियर को आतंकवादी आक्रमण का शिकार बनाने की बात कही गई थी।

जेल की कोठरियों में बन्द हम कैदी एक साथ इस नतीजे पर पहुँचे कि कोसियर भी गिरफ्तार हुआ होगा और आखिर यही बात सच निकली। दीवारों पर टँगी उसकी तस्वीरें गायब हो गईं। कोसियर यूक्रेन पार्टी-समिति का प्रथम सेक्रेटरी और कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के पोलितब्यूरो का सदस्य था। देश के एक सर्वोच्च अधिकारी से अब वह जनता के शत्रु में रूपान्तरित किया जा रहा था और ऐसी स्थिति में उसको मार डालने का अभियोग अजीब ही था। एन० के० वी० डी० के लिए यह मामला कुछ पेचीदा था लेकिन उसे सुलझाने में उन्हें कोई खास मुश्किल न उठानी पड़ी। कोसियर के नाम से सम्बन्धित आतंकवादी कार्यवाहियों के अभियोग ही छोड़ दिये गए या कोसियर की जगह अन्य लोगों के नाम दे दिये गए जो कि एन० के० वी० डी० के अनुसार आतंकवादी कार्यवाहियों के शिकार बनने वाले थे या अभियुक्तों के लिए सिर्फ यही कहा गया कि उन्होंने पार्टी और सरकारी नेताओं के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा था।

मेरे कागजातों में से 'आतंक' हटा देने से जो राहत मुझे मिली थी

वह अनुचित थी, क्योंकि उसकी जगह 'जासूसगिरी' का अभियोग लगा दिया गया।

येझोव-काल में अधिकांश बन्दियों पर जासूसगिरी का अभियोग लगाया गया था। जर्मन, जापानी, पोलिश, रूमानियन और अन्य 'जासूसों' की एक साथ बाढ़ आ गई थी। मुझे स्वयं यह बात अजीब मालूम हुई थी कि मेरे अभियोग में 'विद्रोह' और 'आतंक' शामिल किया गया था न कि 'जासूसगिरी'। मेरा खयाल था कि आवश्यक बाहरी गुणों के अभाव में ऐसा किया गया है, लेकिन वह गुण भी ढूँढ़ निकाले गए और वह भी बहुत ठोस थे।

कुछ वर्षों से मैं किएव-स्थित यूक्रेनियन विज्ञान अकादमी की बाइ-जेण्टोलोजिकल समिति का अध्यक्ष था। चूँकि उस समय—बाद में नहीं—बोलशेविकों द्वारा 'बाइज़ेण्टोलोजी' और 'बाइज़ेण्टोलोजिकल' शब्द प्रति-क्रियावादी समझे जाते थे अतः उनके स्थान पर 'निकट पूर्व' शब्द प्रयोग में लाए जाते थे। टर्की, फारस और अन्य निकट-पूर्वीय देशों के इतिहासों को सम्मिलित करके बाइज़ेण्टाइन इतिहास का छिपे रूप में अध्ययन करना सम्भव था।

किन्तु शब्दों में बहुत शक्ति होती है। 'निकट पूर्व' शब्दों ने उनमें और मेरे बीच एक सम्बन्ध स्थापित कर दिया। सोवियत यूनियन के लिए सबसे ज्यादा खतरनाक पूर्वी देश जापान था। अतः जापान के साथ मेरा सम्पर्क होना निश्चित था। यह एक मज़ाक नज़र आता है लेकिन यह एक गम्भीर सत्य था। बाइजेण्टाइन इतिहास में मेरी पेशेवर दिलचस्पी ने मुझे जापान के सम्पर्क में ला दिया था जो कि राज्य के लिए खतरनाक था। जाँच करने वाले मजिस्ट्रेट ने, जिसकी इतिहास और भूगोल में कोई दिलचस्पी न थी, निकट और सुदूर पूर्व, प्राचीन, मध्यकालीन और अर्वा-चीन में कोई अन्तर न समझा। उसे केवल एक बाहरी आधार की जरूरत थी और वह उसे मिल गया।

अतः बाइजेण्टाइम में मेरी दिलचस्पी जापान की ओर से जासूसगिरी

करने के मेरे अभियोग की शृङ्खला में पहली कड़ी थी। जल्दी ही दूसरी कड़ी भी ढूँढ़ निकाली गई। अपने 'सामाजिक कार्य' के दौरान मैंने लाल सेना के उच्च अधिकारियों को प्राचीन युद्ध-कला के बारे में भाषण दिए थे और सिकन्दर, हैनिबाल तथा सीज़र के बारे में उन्हें बताया था। इस प्रकार मैं लाल सेना से 'बाहरी' रूप में सम्बन्धित था और अगर चाहता तो जासूसगिरी करने का मुझे अवसर प्राप्त था। अतः मेरे ख़िलाफ़ दो बातें स्थापित कर ली गईं। मैं जापान की ओर से जासूसगिरी कर रहा था और लाल सेना के अफसरों को भाषण देने का अवसर पाकर यह कर पा रहा था। अपनी क्रान्ति-विरोधी प्रवृत्ति के कारण मेरा उद्देश्य सोवियत-सत्ता को अधिक-से-अधिक क्षति पहुँचाना था। अब केवल यही प्रमाण चाहिए था कि किसी विदेशी गुप्तचर-विभाग के प्रतिनिधियों से मेरा सम्पर्क था। यह प्रमाण भी ढूँढ़ निकाला गया।

पूर्वी देशों के इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् और हिटाइट इतिहास के विशेषज्ञ चेकोस्लोवाकिया-निवासी प्रोफेसर ग्रॉसनी १६३७ में कीएव पधारे थे और उनके सम्मान में सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित करने वाली संस्था ने एक विशेष स्वागत-समारोह आयोजित किया था। मैं भी आमन्त्रित लोगों में था। मुझे इस प्रतिष्ठित विदेशी से पाँच-छः मिनट के लिए बात करने का अवसर भी मिला था, जो कि किसी विदेशी गुप्तचर-विभाग में भरती किए जाने के लिए कुछ कम समय नजर आता था। प्रसंगवश यह बताया जा सकता है कि इस स्वागत-समारोह के बाद ही उस सांस्कृतिक संस्था के अध्यक्ष वेलिचको को जासूसगिरी के लिए गिरफ्तार कर लिया गया। मैं उसके उत्तराधिकारी और भूतपूर्व सोवियत कूटनेता स्मिरॉव से एन० के० वी० डी० की जेल की कोठरी में मिला था। इस सांस्कृतिक संस्था की अध्यक्षता एक बहुत खतरनाक काम था।

अन्त में यह भी ढूँढ़ निकाला गया कि मुझे किसने भरती किया था। वैज्ञानिक भाषण-समिति का अध्यक्ष मिखाइलॉव, जो कि लाल सेना में दिए जाने वाले भाषणों का प्रबन्ध करता था, निकट-पूर्वीय इतिहास-अध्य-

यन-समिति का सदस्य भी था और मेरा एक व्यक्तिगत मित्र भी। १६३७ के ग्रीष्म में वह सुदूरपूर्व के सैनिक एककों के लिए भाषणों की व्यवस्था करने वहाँ गया था। किन्तु एन० के० वी० डी० की दृष्टि में वहाँ जाने का उसका वास्तविक ध्येय जापानी गुप्तचर-विभाग से सम्बन्ध स्थापित करना या पुराने सम्बन्धों को कायम बनाए रखना था। उसे अपने इस उत्साह का इनाम गिरफ्तारी से दिया गया।

विभिन्न व्याख्यायकों ने अपने व्याख्यानों के दौरों की रिपोर्ट मिखाइ-लॉव को दी थी क्योंकि वह इस समिति का अध्यक्ष था और कहा जाता है कि उसने इस सामग्री का जासूसगिरी के काम में उपयोग किया; पूछताछ के दौरान में काफी दबाव पड़ने पर उसने यह अपराध स्वीकार भी किया था। चूँकि वह मुझे व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत रूप से अच्छी तरह जानता था अतः कहा गया कि उसने अपनी जासूसगिरी की कार्यवाहियों में मेरा विशेष उपयोग किया था।

मिखाइलॉव को अपने अभियोग की सामग्री की तैयारी व पूर्ति में ऑड्येसा के प्रोफेसर मॉकरॉव नामक एक व्यक्ति से सहायता मिली थी। मॉकरॉव में इतनी पर्याप्त कल्पना-शक्ति थी कि ऑड्येसा में जापानी राजदूत से अपनी एक बार की मुलाकात से वह अपने विरुद्ध एक विश्वासजनक अभियोग रच पाया था और इस अभियोग के चित्र मे उसने अपने-आपको, मिखाइलॉव को और मुझे तथा पूर्वी देशों के प्रसिद्ध यूक्रेनियन विद्वान् प्रोफेसर ए० क्रिम्सकी व यूक्रेनियन विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष बॉगोमोल्येत्स को भी उपयुक्त पार्ट सौंपे थे।

एन० के० वी० डी० ने सब तरह की ज़रूरतों का सामना करने के लिए समस्त प्रमुख व्यक्तियों के विरुद्ध अभियोगजनक सामग्री इकट्ठी कर रखी थी। मॉकरॉव-जैसे कैदी किसी भी व्यक्ति पर किसी भी समय दोषारोपण करने के लिए तैयार रहते थे चाहे उन्होंने उन व्यक्तियों को कभी देखा भी न हो। इस प्रकार एकत्रित किये हुए 'प्रमाण' उन लोगों के कागजातों में दरज कर दिए जाते। इतना सब होते हुए भी वे सम्मानसूचक उच्च-

पारितोषिक और पदक आदि प्राप्त करने से वंचित न रहते थे और सम्मान के यह प्रतीक अंत तक उनके पास बने रहते थे।

उदाहरण के लिए क्रिम्सकी को १६४० में उसकी जुबली के अवसर पर श्रम की लाल पताका प्रदान की गई। फिर भी १६४१ में युद्ध आरम्भ होने पर उसे गिरफ्तार कर लिया गया। मेरी अनिच्छुक अभियोजका प्रोफ़ेसर ऑर्काडियन ने जून १६३८ में सोवियत विद्वानों के लिए क्रेमलिन से आयोजित एक स्वागत-समारोह में भाग लिया था। केवल विशेषतः विश्वस-नीय विद्वानों को ही इसमें आमन्त्रित किया गया था, फिर भी एक महीने बाद उसने अपने-आपको जेल में पाया। अन्य लोगों का भी यही हाल हुआ था।

तो मिखाइलॉव और मॉकरॉव द्वारा भरती किया हुआ मैं जापानी जासूस था। इन दोनों व्यक्तियों द्वारा गढ़ी हुई कहानी के अनुसार मैं अपने दौरे के भाषणों की रिपोर्ट के रूप में और व्यक्तिगत वार्तालाप द्वारा मिखाइलॉव को सूचना भेजा करता था। मिखाइलॉव इस सूचना को मॉकरॉव के पास भेज देता और वह उसे जापानी राजदूत तक पहुँचा देता था। यहाँ तक तो यह कहानी समझ में आ सकती थी। लेकिन मेरी गुप्त रिपोर्टों में होता क्या था? अब सिर्फ यही एक कड़ी बाकी बची थी।

लाल सेना में अपने भाषणों द्वारा मैं जापानी जनरल स्टाफ के लिए कौनसी उपयोगी सूचना एकत्रित कर सकता था? मेरी रिपोर्टों का क्या मूल्य था और वह किस बारे में हो सकती थीं? उदाहरण के लिए एक बार मैंने मॉकरॉव से कहा था कि लाल सेना के कुछ उच्च अधिकारियों ने नेपोलियन तृतीय को नेपोलियन प्रथम तथा सिकन्दर को सीज़र समझ लिया था। यह सेना की 'राजनीति-सम्बन्धी मानसिक स्थिति' के बारे में मेरी रिपोर्ट बताई गई थी। इसके अलावा मैं और क्या रिपोर्ट दे सकता था?

क्या मैं जॉच करने वाले मजिस्ट्रेट का मुकाबिला कर सकता था? क्या मैं उन लोगों द्वारा बताये गए अपने कार्य से इन्कार कर सकता था

जिन्होंने मुझे 'भरती' किया था ? शायद मैं ऐसा कर पाता लेकिन मेरी हिम्मत टूट चुकी थी और मेरे खिलाफ दो शहादतें थीं। मुझे सजा देने के लिए यह काफी था और इसके अलावा मुझसे सम्बन्ध रखने वाले 'बाहरी तथ्य' स्थापित किए जा चुके थे। और सत्य ? केवल सत्य के लिए लड़ने का मुझमें साहस न रहा था और एन० के० वी० डी० को सत्य में रत्ती-भर भी दिलचस्पी न थी।

केवल सत्य के लिए ही लड़ने का न मुझमें साहस था और न शक्ति। यही मेरा अपराध था। जो लोग मेरी ही तरह एन० के० वी० डी० के द्वारा किए जाने वाले शुद्धीकरण से गुजर चुके हैं उन्हें ही पहले मेरे ऊपर पत्थर फेंकने दीजिए।

सिलाकॉव

एक रात, जैसा कि मेरे साथ पहले भी कई बार हो चुका था, मुझे अपनी कोठरी से 'अपनी चीजों के समेत' बुलाया गया। जेल की भाषा में 'अपनी चीजों के समेत' का बहुत-कुछ अर्थ होता था। इसका मतलब हो सकता था कि कैदी को रिहा किया जाने वाला है और यह भी कि उसे गोली मारने के लिए ले जाया जाने वाला है। किन्तु सामान्यतः इसका अर्थ होता था एक कोठरी से दूसरी कोठरी में स्थानान्तरण। बन्दी जीवन के एकसेपन में यह स्थानान्तरण महत्त्वपूर्ण घटनाएँ थीं; इसका मतलब था नये लोग, नये प्रभाव, नई जानकारी और कई बार बाहरी दुनिया की नई खबर। इस बार मैं अपनी पहली कोठरी से भी ज्यादा छोटी कोठरी में रखा गया। इसमें दो आदमी थे। वे तब तक सोए न थे। इनमें से एक पच्चीस-छब्बीस वर्ष का लम्बा और खिलाड़ियों-जैसा तन्दुरुस्त चौड़े मंगोलियन चेहरे वाला आदमी था जिसका नाम सिलाकॉव था। कोठरी में मेरे दाखिल होने पर उसने जरा-सी भी हरकत न की, लेकिन वह अपनी पटरी पर आगे झुककर और रूसी भिखारी की तरह बायाँ हाथ पसारे एक अजीब तरीके से बैठा रहा। उसके होंठ चुपचाप हिल रहे थे और मैंने देखा कि वह कोई जादू का मन्त्र पढ़ रहा था। कोठरी के दूसरे साथी ने, जो कि एन० के० वी०

डी० का एक उच्च अधिकारी था, मुझे बाद में बताया कि अपने मामले से छुटकारा पाने के लिए वह बहुत दिनों से जादू में लगा है।

मिलार्कॉव का मामला किसी भी अर्थ में सीधा-सादा न था। वह क्रियान्स्क स्टेशन पर काम करने वाला एक रेलवे कर्मचारी था। उसका पिता गार्ड था अतः वह सर्वहारा-वर्ग का सच्चा सदस्य था। उसका स्वभाव ही ऐसा था कि वह अजीब खयालातों और कल्पना की उड़ान में लगा रहता था। बचपन में ही वह घर से भागकर कई वर्षों तक बे-घरबार बच्चों के साथ भटकता फिरा, जिन्होंने उसे पाप और दुराचार में पक्का बना दिया था। बड़ा होने पर वह कुछ सुधरा और अन्त में काम करने लग गया। ट्रेनिंग स्कूल से निकलकर उसे रेलवे में नौकरी मिल गई और उसने शादी कर ली। लेकिन सैनिक कार्य के लिए बुलाए जाने पर उसका काम रुक गया। कम्युनिस्ट युवक-संघ के एक कार्यकर्ता और सदस्य होने के नाते उसे एक विशेष एकक में रखा गया। यह एक प्रकार का सीमान्त-स्थित एकक था जिसका काम विशेषतः महत्त्वपूर्ण और गुप्त था। फलतः चुने हुए लोगों, विश्वसनीय कम्युनिस्टों और कमसोमोल के सदस्यों से उसका सम्पर्क हुआ जो कि सब-के-सब श्रमजीवी-वर्ग से पैदा हुए थे। उसके अफसर लाल सेना के आजमाये हुए लोग थे जिन्हें सम्मानपदक प्राप्त थे। सिलार्कॉव अपने उच्छृंखल चरित्र के कारण बारिकों के जीवन और अनुशासन का अभ्यस्त न हो पाया और न उसे बरदाश्त कर सका। वह दुखी रहने लगा और फिर कुछ ऐसी घटनाएँ घटीं कि उसका मानसिक सन्तुलन बिलकुल बिगड़ गया। घर से दिन-पर-दिन बदतर खबरें आने लगीं। उसकी बूढ़ी माँ, जिसके प्रति उसका पाशविक किन्तु अति मृदुल स्नेह था, बुरी तरह बीमार पड़ गई। उसकी युवा पत्नी, जो कि एक कमसोमोल की लड़की और कार्यकर्त्री थी, उसे छोड़कर मास्को में एक विद्यार्थी के साथ रहने लगी थी। सिलार्कॉव ने छुट्टी के लिए अरजी दी। लेकिन लाल सेना के रँगरूटों के लिए कोई छुट्टी नहीं होती। अतः उसने भाग जाने की ठानी।

भाग जाने के तुरन्त बाद ही उसे बहुत दुःख हुआ। उसे अपनी इस

करतूत के लिए सज़ा मिलने वाली थी। अगरचे सज़ा से बिलकुल बचना मुश्किल था तो कम-से-कम उसे नरम बनाने की कोशिश तो की जा सकती थी। उस ज़माने में सब अपराधियों द्वारा अपने-अपने अपराध स्वीकार करवाने के लिए एक भीषण प्रोपेगेण्डा हो रहा था। सोवियत सरकार इतनी कृपालु बन गई थी कि ईमानदारी के साथ पश्चाताप करने पर बड़े-से-बड़े अपराध के लिए क्षमा प्रदान करने को तैयार थी। इस प्रोपेगेण्डा में फौजदारी जुर्मों के लिए निर्देश था जिनके प्रति सोवियत दण्ड-नीति उन दिनों अपेक्षया नरम थी।

सिलार्कॉव ने इस प्रोपेगेण्डा से लाभ उठाना और 'स्वतः अपना अपराध स्वीकार करना' तय किया। अपने अपराध के महत्त्व को बढ़ाने के लिए उसने एक सोवियत-विरोधी षड्यन्त्र की कहानी गढ़ी जिसका वह स्वयं केन्द्रीय पात्र बना। वह जानता था कि इस तरह की नाटकीय कल्पनाएँ बहुत प्रचलित थीं अतः उसने अपनी किस्मत भी आज़मानी चाही। इस 'षड्यन्त्र' का यथार्थतम रूप उसके सामने स्पष्ट न था और बड़े छोटे पैमाने पर उसने इसे गढ़ा था। उसने यह कहानी गढ़ी थी कि उसने अपने दो या तीन दोस्तों के साथ मिलकर एक डाकखाने पर सशस्त्र हमला करना तय किया था और वहाँ से चुराया हुआ रुपया राजनीतिक आतंकवादियों के एक दल को दिया जाने वाला था; लेकिन उसने अपना विचार बदल दिया और अपना अपराध स्वतः स्वीकार करके सोवियत न्याय की दया पर अपने-आपको छोड़ दिया है। उसकी युवावस्था और सर्वहारा से उसकी उत्पत्ति उसके पक्ष में निर्णय किए जाने की एक पर्याप्त गारण्टी थी।

किएव पहुँचकर सिलार्कॉव सीधा एक टेलीफोन बॉक्स[1] में गया और एन० के० वी० डी० को टेलीफोन किया कि एक भगोड़ा और महत्त्वपूर्ण राजनीतिक अपराधी सोवियत न्याय के हाथों अपने-आपको सौंपकर कुछ

---

1. लेखकों की राय में इस कहानी में केवल यही एक त्रुटि थी कि सिलाकॉव को किएव में एक ऐसा टेलीफोन बॉक्स मिल गया जो कि बिगड़ा हुआ न था। लेकिन कभी-कभी ऐसा भी हो जाता था।

महत्त्वपूर्ण गुप्त बातें बताना चाहता है। इसके बाद टेलीफोन बन्द करके वह देखने लगा कि अब क्या होता है। आध घण्टे बाद वह पकड़ लिया गया और इस तरह प्रसिद्ध सिलार्कॉव केस शुरू हुआ।

सिलार्कॉव अपनी कहानी गढ़ते समय पहले से यह न सोच पाया था कि एन० के० वी० डी० वाले उसके लिए एक अन्य योजना या एक भिन्न कहानी गढ़ेंगे जिसे मानने के लिए उसे बाध्य होना पड़ेगा। उसे 'काले कौवे' में बिठाकर जन-कमिस्सार के दफ्तर ले जाया गया, जहाँ कि अधिकारीगण एक असाधारण अपराधी के लिए उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे। कुछ सामान्य प्रश्नों के बाद उससे बहुत ही सख्ती के साथ पूछताछ की गई। उसे लातें मारी गईं—जेल की भाषा में इसे 'फुटबॉल' कहते थे—और खूब पीटा गया और फिर अधमरा करके कोठरी में डाल दिया गया। कई दिन और रात तक यह क्रम जारी रहा। सिलार्कॉव की कहानी भी क्रमशः बदलने लगी, और आखिर उसका संशोधित रूप बहुत-कुछ एन० के० वी० डी० की जरूरतों के मुताबिक हो गया। उसका अन्तिम रूप, जो कि सिलार्कॉव ने स्वयं मुझे सुनाया और जिसका जेल की विभिन्न कोठरियों में मिलने वाले उसके साथियों ने समर्थन किया, इस प्रकार है: सिलार्कॉव और उसके दो या तीन मित्रों ने ही केवल षड्यन्त्र में भाग न लिया था बल्कि उस सम्पूर्ण सैनिक एकक ने लिया था जिसे छोड़कर सिलार्कॉव चला आया था। इस षड्यन्त्र का नेता सिलार्कॉव न था, जैसा कि कहानी के मूल रूप में कहा गया था, बल्कि उसका कमांडिंग अफसर था जिसके नीचे काम करने वालों ने उसकी मदद की थी। सोवियत शासन को पलटकर पूँजीवाद और सम्राटशाही को पुनः स्थापित करने वाले इस षड्यन्त्र में अब सिलार्कॉव को एक मामूली पार्ट अदा करने के लिए दिया गया। कुछ षड्यन्त्रकारियों ने सोवियत सरकार के सदस्य और पार्टी-नेताओं के विरुद्ध आतंकवादी कार्यवाहियाँ करने का बीड़ा उठाया था। कुछ लोगों ने भावी शासन में अपने-अपने पद बाँट लिए थे, जैसे कि, उदाहरण के लिए सिलार्कॉव मास्को का गवर्नर-जनरल बनने वाला था।

यदि इतने अधिक लोगों के लिए यह कहानी दुःखान्तक न होती तो इसका कोई महत्त्व न था। किएव बन्दीगृह की कोठरियाँ सिलार्कॉव षड्यन्त्र में भाग लेने वालों से भरने लगीं। कमांडिंग अफसर से लेकर गाड़ियाँ चलाने वालों तक वह प्रायः सम्पूर्ण सैनिक एकक गिरफ्तार कर लिया गया जिसमें सिलार्कॉव काम कर चुका था। कई अफसरों की बीवियाँ और लाल-सेना के बहुत-से सैनिक भी गिरफ्तार किये गए और सिलार्कॉव की दोनों बहनें, जो कि दोनों काम करने वाली लड़कियाँ थीं, उसकी बूढ़ी और अशक्त माँ, उसका पिता और उसके उस चाचा को भी गिरफ्तार किया गया जिसने अपने भतीजे को जिन्दगी में सिर्फ एक बार देखा था। पूछताछ के दौरान में यह अभागा चाचा, जो कि ज़ारशाही सेना में कोरपोरल रह चुका था, ज़ार-शाही जनरल में रूपान्तरित कर दिया गया। मैं यह बात बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कह रहा कि किएव बन्दीगृह की कोई भी कोठरी ऐसी न थी जिसमें सिला-कॉव षड्यन्त्र से सम्बन्धित कोई-न-कोई व्यक्ति न हो।

एन० के० वी० डी० की मशीन तेज़ी में चलने लगी। पूछताछ का हरेक तरीका काम में लाया जाने लगा। अधिकांश मामलों में कैदियों ने, विशेषतः लाल सेना के युवक सैनिकों ने, जो कि कठोर अनुशासन के अभ्यस्त थे, अपने अपराध को अस्वीकार न किया। सिलार्कॉव षड्यन्त्र बृहत्तर रूप धारण करता गया और अधिकाधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों को इसमें घसीटकर लाया जाने लगा। उस सैनिक एकक के तमाम अफसरों ने स्वीकार किया कि उनके बड़े अफसरों ने उन्हें 'भरती' किया था और उन्होंने अपने छोटे अफ-सरों को। ईश्वर ही जानता है कि यदि इस क्रम को अपने-आप पर छोड़ दिया जाता तो यह कहाँ जाकर रुकता। वरोशिलॉव से लेकर सारी लाल सेना इस 'सैनिक आतंकवादी षड्यन्त्र' में फँस जाती। लेकिन एक साथ सारा क्रम उलटा चलने लगा। एक नया राजनीतिक क्रम आरम्भ हुआ—'विरोधी वक्तव्यों' और बन्दीगृह से मुक्ति का क्रम। सोवियत नीति के इस परिवर्तन को समझने में कुछ समय तक मैं असमर्थ रहा। लेकिन इस नीति-परिवर्तन में सिलार्कॉव षड्यन्त्र का ज़रूर कुछ हाथ था। यह स्पष्ट होने लगा था कि येझोव

प्रतिनिधियों की मूर्खताएँ किस हद तक जा सकती हैं। इसके अलावा यह खतरा भी पैदा हो गया था कि अगर शुद्धीकरण बन्द न किया गया तो एक ऐसा सार्वजनिक रोष फूट पड़ेगा जिसे किसी भी प्रकार का डराना-धमकाना दबा न सकेगा। आखिर डराने-धमकाने की भी कुछ सीमाएँ होती ही हैं।

खैर, कुछ भी हो, पूछताछ के दौरान में सिलार्कॉव को सलाह दी गई कि वह अपने द्वारा स्वीकार की गई प्रत्येक बात को झूठा बताकर सारे षड्यन्त्र को ही एक मनगढंत कहानी घोषित करे। गरीब सिलार्कॉव स्वयं अपने कानों पर विश्वास न कर पाया। आखिर क्यों उन्होंने उससे यह सब बातें मनवाने के लिए उसे इतनी बुरी तरह पीटा था, और सच कहने की उसकी हरेक कोशिश को कुचलकर क्यों उन्होंने उसे हर बार झूठ बोलने के लिए प्रोत्साहित किया था? शुरू में उसने सोचा कि यह सलाह भी उसकी जाँच करने वाले मजिस्ट्रेटों की कोई नई चाल होगी, अतः वह सिलार्कॉव षड्यन्त्र को सच्चा बताने की कोशिश करता रहा। लेकिन जब पूछताछ के तरीके दोबारा काम में लाए जाने लगे तो उसने महसूस किया कि विरोधी वक्तव्यों की उनकी सलाह पर दरअसल गौर करना चाहिए।

सिलार्कॉव षड्यन्त्र में भाग लेने वाले अन्य लोगों को भी यही अनुभव हुआ। सिलार्कॉव ने अपने अनुपम परिहास के साथ मुझे बताया कि पहले मुकाबले में उसके एक 'पलटे हुए' साथी ने कितने उत्साह के साथ कल्पित कहानी का अनुमोदन करना चाहा था, यद्यपि इस कहानी के अनुसार उस पर भीषण दोषारोपण होता था और जिसके फलस्वरूप उसे भयंकर दण्ड मिल सकता था। दूसरे मुकाबले में वही लाल सैनिक विरोधी वक्तव्य देने में, अर्थात् एन० के० वी० डी० के मजिस्ट्रेट के सामने अपनी उस अपराध-स्वीकृति को झूठा बताने में बेहद डर महसूस करने लगा जिसके द्वारा उसे मृत्यु दण्ड मिलने वाला था। आखिर यह क्या था? झूठी विनम्रता? झूठ बोलने की अनिच्छा या साहस का अभाव? या सख्त सजा ने आत्म-रक्षा की भावना को ही समूल नष्ट कर दिया था? यह समस्याएँ मनोवैज्ञानिकों के लिए ही छोड़ दीजिए। हुआ यह कि सिलार्कॉव षड्यन्त्र में

भाग लेने वाले प्रायः प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिक्रिया सिलाकॉव जैसी ही थी। पहले सबने स्वीकार किया कि वे उस षड्यन्त्र में शामिल थे, पर बाद मे वे पीछे हट गए।

मुझे अपनी रिहाई के बाद मालूम हुआ कि सिलाकॉव को सिर्फ सेना छोड़कर भाग जाने के लिए तीन वर्ष का दण्ड दिया गया। एन० के० वी० डी० में इतनी भलमनसाहत थी कि उन्होंने उसकी उस कल्पित कहानी के लिए उसे दण्ड न दिया जिसके इतने गम्भीर परिणाम हो चुके थे, या उस कहानी के वास्तविक सृजनकर्ता को दण्ड देने की उनकी इच्छा ही न थी।

एक नया क्रम आरम्भ हो चुका था। जन-कमिस्सार उसपैन्सी 'लौह-कमिस्सार' येझोव की तरह ही गायब हो गया। उनके छोटे-बड़े सब सहकारी-गण भी उनके साथ ही गायब हो गए। जबरदस्ती दिये गए बयानों और अपराध-स्वीकृतियों का 'खण्डन' और 'विरोधी वक्तव्यों' का क्रम जारी हुआ। पूछताछ के कमरों में अब अधिक शान्ति दिखाई देने लगी। येझोव काल के पहले या बाद मे वे कभी भी पूरी तरह शान्त न नजर आते थे, लेकिन उस तूफानी जमाने को देखते हुए अब अपेक्षाकृत अधिक शान्ति व्याप्त थी।

मेरे द्वारा बताये गए पूछताछ के तरीके सदा ही नियमित रूप से काम में नहीं लाए जाते थे, हालांकि उन्हें कभी पूरी तरह छोड़ा भी न गया था। 'बाहर से' नये कैदियों का आना अधिकाधिक कम हो गया। सबकी एक साथ रिहाई की अफवाहें जेल की कोठरियों तक पहुँच गईं। मेरे हृदय में भी आशा जगी। जासूसगिरी के अभियोग के हटाए जाने से यह आशा और भी बलवती बन गई। मिखाइलॉव ने अपने प्रारम्भिक वक्तव्यों को खण्डित किया, यद्यपि मॉकरॉव अपनी कल्पित कहानी पर अड़ा रहा। सोवियत-विरोधी षड्यन्त्र और विद्रोह की तैयारी का अभियोग भी हल्का पड़ने लगा। मेरी आशा के लिए उचित कारण मौजूद थे और अन्त मे मेरी आशा सफल भी हुई।

१९३९ के पतझड़ में एक दिन मुझे अपनी कोठरी से 'अपनी चीज़ों

समेत' बुलाया गया। दूसरी कोठरी में भेजे जाने के लिए यह एक असाधारण समय था, लेकिन मुझे तो जाँच करने वाले मजिस्ट्रेट के पास ले जाया जा रहा था, जिसने मुझे बताया कि मैं छोड़ा जाने वाला हूँ।

मुझे वचन देना पड़ा कि अपनी कैद के दौरान में जो कुछ मैंने देखा और सुना था उसके बारे में कभी किसी से कुछ न कहूँगा। मैं अपनी यह प्रतिज्ञा भंग कर रहा हूँ। क्या मुझे ऐसा करने का अधिकार नैतिक प्राप्त है। मेरी आत्मा ने मुझे धिक्कारा नहीं है।

सेकसौट

सोवियत जीवन का सबसे अधिक उद्विग्न बनाने वाला पहलू, जोकि उस पर एक खास छाप छोड़ चुका था, सेकसौट या उस गुप्त पुलिस का मुखबिर था जो कि पहले जी० पी० यू० बाद में एन० के० वी० डी० और फिर एन० वी० डी० कहलाने लगी थी।

गुप्त राजनीतिक एजेण्टों की नियुक्ति बोलशेविकों का आविष्कार नहीं है। राजनीतिक जासूसगिरी, झूठी शहादत, कल्पित अभियोग, यहाँ तक कि कल्पित आत्माभियोग और जबरदस्ती मनवाये गए अपराध तथा उत्पीड़न का बोलशेविकों ने आविष्कार नहीं किया था। बोलशेविकों ने सिर्फ इन चीजों को बेहद बढ़ा दिया था। और यही बात सेकसौट लोगों के लिए लागू होती थी।

कहा जाता है कि अगर तीन सेकसौट नागरिक आपस में मिलते हैं तो उनमें से एक सेकसौट होता है। मैं नहीं कह सकता कि यह बात सच है या नहीं। हो सकता है कि दो सेकसौट हों या शायद तीनों ही; या यह सब कुछ अतिरंजन है। असलियत तो यह है कि हरेक सोवियत नागरिक हरेक कदम पर, चाहे वह कहीं भी हो, अपने-आपको सेकसौटों की निरन्तर निगाह के अन्दर पाता है। कम-से-कम वह अपने दिल में तो कभी भी इस गुप्त निरीक्षण से मुक्त नहीं हो पाता, चाहे वह अपने काम पर हो या सड़क पर घूम रहा हो या अपने मित्रों व अपने परिवार वालों के साथ बातचीत कर रहा हो। इसके अलावा प्रत्येक सोवियत नागरिक जानता है

कि उसका आराम, चाहे वह कितना ही सीमित क्यों न हो, उसकी सामाजिक स्थिति, उसकी आज़ादी और उसकी ज़िन्दगी इन्हीं सेकसौटों पर निर्भर करती है। जनता इन लोगों की अभ्यस्त हो चुकी थी; उन्हें बीमारियों के कीड़े या दुर्घटनाओं की तरह ही स्वाभाविक और अनिवार्य समझा जाता था। वे सोवियत जीवन के एक अत्यन्त दर्दनाक और कुत्सित पहलू हैं जो कि सबके लिए समान रूप से, जिनमें स्वयं सेकसौट भी शामिल हैं, विपत्ति और विनाश लाते हैं।

वे कौन लोग हैं जो इस प्रकार के कार्य के लिए स्वयं अपनी सेवाएँ अर्पित करते हैं? किस सामाजिक स्तर से और किस किस्म के लोगों में से इन्हें भरती किया जाता है? इनकी सेवाओं के लिए इन्हें वेतन नहीं दिया जाता; इनके कार्य को 'सामाजिक कर्त्तव्य' बताया जाता है। यहाँ हमें दो प्रकार के सेकसौटों में भेद करना होगा—स्वेच्छा से काम करने वाले और स्वेच्छा से न काम करने वाले। स्वयंसेवी सेकसौटों की कई किस्में होती हैं जिनमें दुराचारी, मानवद्रोही, अनैतिक और पतित लोगों की प्रमुख किस्म है जो कि ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ और किसी भी प्रकार की नैतिक विकृति के कारण अपने पड़ोसियों को नुकसान पहुँचाने के लिए तैयार रहते हैं। इनमें से कई भावी आदर्शवादी और कुछ-न-कुछ करते रहने वाले होते हैं जिनका विश्वास है कि उनके कार्य किसी-न-किसी प्रकार उपयोगी और अनिवार्य हैं, और विश्व-क्रान्ति व सोवियत शक्ति के वैभव को बढ़ाने वाले हैं।

लेकिन दूसरे किस्म के सेकसौटों को अपना काम करने के लिए वह मशीन बहुत कुछ मजबूर करती है जिसके वे खुद पुरजे बन चुके हैं। यह लोग अक्सर दुर्बल और चरित्र-रहित व्यक्ति होते हैं, या वे लोग होते हैं जिनके लिए गुप्त पुलिस से डरने का कोई खास कारण मौजूद होता है। अधिकांशतः यह उन बहुसंख्यक लोगों में से लिये जाते हैं जो पुलिस के लिए काम करके एन० के० वी० डी० के कृपापात्र बनने की आशा रखते हैं तथा जिन्हें विश्वास होता है कि इस प्रकार वे 'वर्ग-शत्रुओं' के भयंकर भविष्य से बच सकेंगे। लेकिन यह उनका गलत ख्याल होता है। अक्सर

वे विशेष गुण वाले व्यक्ति भी होते हैं जैसे कि असाधारण सौन्दर्य व साहस वाली स्त्रियाँ और लड़कियाँ जिनसे पुलिस के दबाव और उकसाने से, खास तौर पर अपने मित्रों और निकट सम्बन्धियों को बचाने की आशा से काम करवाया जाता है। सामान्यतः पुलिस इस सौदे के प्रति सच्ची बनी रहती है— कम-से-कम जब तक कि नई घटनाएँ इन लोगों की सेवाओं को अनावश्यक नहीं बना देती, और यदि ऐसा हुआ तो इन सेक्सौटों को भी गिरफ्तार कर लिया जाता है।

मेरा ख्याल था कि रिहाई से पहले कोर्ट मार्शल के सामने मेरा मुकदमा पेश किया जायगा। मुझे एक दूसरी कोठरी में स्थानान्तरित कर दिया गया जहाँ कि मुझे एक नया साथी मिला जो कि मेरी तरह ही अपने मुकद्मे के इन्तजार में था। वह एक अधेड़ व्यक्ति था, शायद ४५-४६ वर्ष का हो। मेरी प्रथम धारणा थी कि वह कोई बुद्धिजीवी होगा, जो कि उन दिनों अक्सर सोवियत जेलों में मिल जाया करते थे। ऐसे लोगों को व्यंग्यात्मक रूप में 'त्रॉत्स्कीवादी' कहा जाता था।

वह मिलनसार और बातचीत करने का शौकीन साबित हुआ। वह कई महीनों से अकेली कोठरी में था, अतः बातचीत करने के लिए एक साथी पाकर खुश हुआ। परिचय प्राप्त करने के लिए पूछे हुए प्रथम सामान्य प्रश्नों के बाद, जैसे कि 'आप कौन हैं? जेल में कब से हैं? आप पर क्या अभियोग या किस अनुच्छेद के अन्तर्गत अभियोग लगाया है?' हम सचमुच एक-दूसरे को जानने लगे और महसूस करने लगे कि हम मित्र हैं। वह व्यक्ति एक भूतपूर्व इंजीनियर था और उसने अपनी जो कहानी मुझे सुनाई वह करुण होते हुए भी शिक्षाप्रद थी।

कोवाल्यैन्को एक धनी और बुद्धिमान परिवार का व्यक्ति था। बहुत-सी डगमगाहट और हृदय-परिवर्तनों के बाद अन्त में वह कम्युनिज़्म में सम्पूर्णतः विश्वास करने लगा था। चूँकि श्वेत रूसियों से उसका सम्पर्क था और उसके कई रिश्तेदार श्वेत अधिकारी रह चुके थे, अतः वह पार्टी का सदस्य न बन सकता था। एक जिम्मेवार और सम्मानित कम्युनिस्ट की

सलाह पर उसने सेकसौट के रूप में पार्टी की सेवा करना तय किया। उस प्रसिद्ध कम्युनिस्ट ने उसे आश्वासन दिलाया कि उसका कार्य एक पार्टी-सदस्य के कार्य जितना ही महत्वपूर्ण है। वास्तव में कई दृष्टियों से उसकी स्थिति अधिक महत्त्वपूर्ण और अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण थी।

कोवाल्यैन्को ने अपने समस्त नैतिक संशयों का इस विचार द्वारा समाधान कर दिया कि उसका नया कार्य विश्व कम्युनिज़्म के सेवार्थ उचित है। सामूहिकवादी नैतिकता में डुबकी लगाने और एक आदर्श के लिए अपने-आपको समर्पित कर देने में दरअसल एक प्रलोभन, एक सम्मोहन और एक साहसपूर्ण उत्साह था। उच्चतर अधिकारियों द्वारा यह भी तय हो चुका था कि उसे मामूली जासूसगिरी का काम न दिया जायगा जो कि एक सेकसौट का सामान्यतः कार्य हुआ करता है। अपने दोस्तों की छिपकर बातें सुनने या उनके हाव-भाव को पढ़ने से ज्यादा बड़ा काम उसे दिया गया। इसके अलावा "रेशमी दस्ताने पहनकर कम्युनिज़्म का निर्माण नहीं किया जा सकता। लड़ाई में लड़ाई का तरीका ही ठीक है।" दाँव लग चुका था और अब चिकनी ढाल पर लुढ़कना शुरू हो गया।

शुरू में कोवाल्यैन्को अपनी आत्मा के प्रति सच्चे बने रहने में सफल रहा। न उसने झूठी रिपोर्ट भेजी, न उसने अपने पड़ोसी के खिलाफ झूठी शहादत दी और अपने निकट मित्रों व परिचितों को अर्थात् उन लोगों को पकड़वाने से भी वह दूर रहा जो कि उसका विश्वास करते थे और उस विश्वास के दुरुपयोग द्वारा जो कि तकलीफ में पड़ सकते थे। वह बहिर्मुख और निरपेक्ष होकर चीजों को देखता और अपने इन निरूपणों को कैमरे की प्लेट-जैसी अचूकता व अलगाव के साथ लिख भेजता। कैमरे की प्लेट से अधिक उसने अपने-आपको कभी अपराधी न समझा, और अगर उसकी रिपोर्टों के फलस्वरूप लोगों को नुकसान पहुँचा तो यह उसका दोष न होकर उनका अपना ही दोष था। वह केवल अपना कर्तव्य पूरा करता था, और अपना कर्तव्य पूरा करना सदा ही प्रिय होता है। जब कभी उसे अपने संशयों या अपनी पसन्द और नापसन्द से ऊपर उठना पड़ता

था तब वह अपने-आपको एक सच्चा साहसी पुरुष समझता था।

उसके सामने कुछ कम प्रलोभन न था। कई बार वह किसी मित्र को बचाना चाहता या उसके द्वारा की हुई या कही हुई किसी बात के लिए उसे चुप रखना चाहता; और कई बार जो व्यक्ति उसे नापसन्द था उसके किसी खतरनाक व्यवहार या बयान को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने का भी उसे प्रलोभन होता। आरम्भ में वह अपने कार्य के अधिक अप्रिय पहलुओं से थोड़ा-बहुत समझौता करने में किसी हद तक सफल हुआ। किन्तु वह अधिकाधिक कठिन होता गया और वह अपनी आत्मा के साथ अधिकाधिक क्लेशयुक्त संघर्ष में फँसता गया; और हमेशा ही उसकी आत्मा की विजय न होती थी।

उसके उच्च अधिकारीगण उसके द्वारा दी जाने वाली निरपेक्ष तथ्यों की रिपोर्टों से सन्तुष्ट न थे। उसके साथियों, मित्रों और परिचितों द्वारा उनके वार्तालाप में कही जाने वाली बातों और सामान्यतः सोवियत शासन से तथा विशेषतः सोवियत कार्यवाहियों से उनकी असन्तुष्टि के बारे में एन० के० वी० डी० वाले खूब अच्छी तरह जानते थे। इस विषय में बोलशेविकों को किसी प्रकार का भ्रम न था; वे इतने यथार्थवादी थे कि लोकप्रिय सहानुभूति पर निर्भर नहीं करते थे; मेकेविली और गुइसिडारनी से उन्हें सबक मिल चुका था कि वे जनता की सहानुभूति पर निर्भर रहने का खतरा मोल न लें। एन० के० वी० डी० अपने गुप्त एजेण्ट, सेकसैटों से चाहता था कि वे असली कार्यवाहियों के बारे में रिपोर्ट दें। लेकिन कोवाल्यैन्को इस काम में निपुण न था। उसकी रिपोर्टें लोगों के विचार और भावनाओं के बारे में होती थीं, न कि उनकी कार्यवाहियों के बारे में। उसके मित्रों में इतना साहस न था कि वे क्रान्ति-विरोधी कार्यवाहियाँ कर सकें।

कोवाल्यैन्को तब तक यह न जानता कि इस तरह की कार्यवाही प्रायः सदा ही एन० के० वी० डी० द्वारा गढ़ी जाती थी कि हत्या, उपद्रव, विद्रोह, उलट-पुलट करने के प्रयास आदि के अभियोग प्रतिबन्धक कार्यवाहियों को न्यायोचित ठहराने के लिए गुप्त पुलिस द्वारा गढ़े जाते थे।

कारावास की मेरी सम्पूर्ण अवधि में, पोलिश या रूमानियन गुप्तचरों द्वारा रूसी सीमा में घुस आने के कुछ उदाहरणों के अतिरिक्त, मैंने कोई भी ऐसी बात न देखी थी जो क्रान्ति-विरोधी कार्यवाहियों के वास्तविक अस्तित्व की ओर इंगित करती हो। कारखानों में अक्सर होने वाली दुर्घटनाओं का कारण प्रत्यक्षतः भूल-चूक अथवा लापरवाही होती थी, और जिसे इनके लिए जिम्मेवार ठहराया जाता था वह प्रायः सदा ही लापरवाही के खिलाफ चेतावनी दे चुका होता था। लेकिन हत्या के असंख्य षड्यन्त्र, विप्लवी कार्यवाहियाँ और विद्रोह आदि 'प्रयास' से आगे कभी न बढ़े। आखिरी मौके पर कुछ-न-कुछ बिगड़ ही जाता था—कभी मौसम खराब होता तो कभी और कोई चीज़ बाधा डाल देती थी।

एन० के० वी० डी० और सेकसौटों के बीच एक असमान युद्ध छिड़ गया; एन० के० वी० डी० 'कार्यवाहियों' की रिपोर्ट माँगता था और सेकसौटों के पास शब्दों के अलावा और कुछ देने को न था। अफ़सोस तो इस बात का था कि सत्य में एन० के० वी० डी० की कतई दिलचस्पी न थी। उसे कार्यवाहियों की रिपोर्ट चाहिए थी चाहे वह रिपोर्टें तथ्यों के अनुरूप हों या न हों। लेकिन अभागा सेकसौट तथ्यों पर ही अड़ा रहा। फलतः अपने उच्च अधिकारियों से उसके सम्बन्ध दिन-प्रतिदिन बिगड़ने लगे। वे उसके साथ अधिकाधिक अशिष्टता का व्यवहार करने लगे और उसे धमकियाँ देना भी शुरू कर दिया गया। उन्होंने उसे जता दिया कि उस पर विश्वास नहीं किया जाता और वास्तव में उस पर क्रान्ति-विरोधी होने का सन्देह भी किया जाने लगा। उसने महसूस किया कि उसकी स्थिति में एक मौलिक परिवर्तन हो गया है; वह साम्यवाद का एक सच्चा समर्थक होने निकला था और अब पुलिस का एक मामूली जासूस बनकर रह गया। वह चाहता था कि इस काम को छोड़कर उसके परिणामों को स्वीकार करे लेकिन उसमें शक्ति का अभाव था। उसने आत्महत्या का भी विचार किया लेकिन वह कमज़ोर था। सबसे आसान तरीका शराब के नशे में अपनी आत्मा को डुबा देना था। यहीं से उसका पतन आरम्भ हुआ। उसने अपनी

आत्मा और सत्य के लिए अपनी भावना के अन्तिम अवशेषों तक को क्रमशः खो दिया।

एन० के० वी० डी० के एक निपुण उच्च अधिकारी की सलाह पर वह तथ्यों से 'विश्लेषणात्मक निष्कर्ष' निकालने के काम पर लग गया। इसका अर्थ था कि वह अपनी रिपोर्टों में लोगों की कही हुई बातों की 'व्याख्या' करने लगा और उनमें छिपे हुए अर्थों को पढ़ने लगा। यह कथन कि दुकानें खाली हैं और उनमें खरीदने की कोई चीज नहीं है 'पार्टी की आर्थिक नीति के प्रति असन्तोष और उसकी आलोचना' समझा जाने लगा। यदि कोई किसी विदेशी से सोवियत आवास-स्थिति के बारे में कुछ कह देता तो उसको जासूसगिरी बताया जाता और स्तालिन के बारे में किसी भी तरह का मजाक करने वाला 'आतंकवादी विचारों को भड़काने वाला' कहा जाने लगा। मित्रों और साथियों के असंदिग्ध समूहों का 'राजनीतिक समूहों' और 'संगठनों' आदि में रूपान्तर हो गया। अब शब्दों को इधर-उधर बदल देने और उन्हें नया अर्थ देने का ही सारा काम रह गया। किन्तु इस प्रक्रिया ने झूठ और सच, कल्पना और तथ्य के बीच का सारा भेद क्रमशः मिटा दिया। कल्पना के नीचे तथ्यों को पूरी तरह गाड़ दिया जा चुका था।

इन 'वकीलों के तरीकों' ने, लेकिन, ज्यादा मदद न की। एन० के०-वी० डी० की माँगें अधिकाधिक बढ़ती ही गईं और उन्होंने सम्भावनाओं या लोगों की मानसिक दशाओं से सन्तुष्ट होना छोड़ दिया। उन्हें 'वास्तविक' संगठनों और 'वास्तविक' जासूसों के बारे में तथ्य चाहिएँ थे। लेकिन एक बात यह थी कि सोवियत यूनियन की जनता अधिक सशंकित और अधिक सावधान होती जा रही थी। निरन्तर भय और सेकसौटों द्वारा उन पर लगातार निगाह रखने ने उनको व्यक्तिगत वार्तालाप में भी अधिकाधिक पराङ्मुखी और अल्पभाषी बना दिया था।

इस प्रकार वह सेकसौट अधिकाधिक माँग करने वाले और सन्देह रखने वाले एन० के० वी० डी० तथा पूर्ण रूप से भयभीत व बेहद सावधान हुए सोवियत नागरिक के बीच फँस गया। ऐसी स्थिति में वह क्या कर

सकता था।

परिणाम यह हुआ कि तथ्य और कल्पित के बीच की रेखा अधिकाधिक धुँधली पड़ने लगी और वास्तविक का स्थान क्रमशः सम्भावित ने लिया। इसके बाद बिलकुल झूठ और मनगढ़न्त बातों का दौर शुरू हो गया। कोवाल्यैन्को अब 'वकीलों के तरीकों' की जगह अपनी कल्पना का बेरोक-टोक प्रयोग करने लगा। अब वह सत्य या सत्य की छाया तक की चिन्ता न करता। सत्याभास की परिधि में रहना ही अब वह अपना काम समझने लगा। क्या अमुक व्यक्ति की शिक्षा, सामाजिक स्थिति, सामान्य आचरण और अतीत को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि अमुक परिस्थितियों में उसकी अमुक प्रतिक्रिया होगी? यदि उत्तर 'हाँ' था तो बस काफी था। न सेकसौट और न एन० के० वी० डी० की इस बात में दिलचस्पी थी कि उस व्यक्ति ने दरअसल अमुक कार्य किया भी था या नहीं। अब तथ्य मर चुके थे और कल्पना का ही बोलबाला था।

सब दिशाओं से प्रस्फुटित होने वाले यह सब आविष्कार एन० के०-वी० डी० द्वारा एकत्रित किये जाते, जिनकी बुनियाद पर सोवियत-विरोधी संगठनों, विद्रोह की योजनाओं, विप्लवी कार्यवाहियों, जासूसगिरी और तोड़-फोड़ के कल्पित सदन खड़े किये जाते और इन सब कल्पित अभियोगों को बाद में पूछताछ के प्रचलित तरीकों से स्वीकार करवाया जाता। इस प्रकार कल्पना रक्त और मांससहित एक मूर्त रूप धारण कर लेती थी।

कोवाल्यैन्को की कल्पना की उड़ानों ने एन० के० वी० डी० को केवल आंशिक रूप से सन्तुष्ट किया। कुछ सीमाएँ ऐसी बची थीं जिन्हें पार करने के लिए वह तैयार न था। यह स्वाभाविक सत्याभास की सीमाएँ थीं। वह यथार्थवादी बना रहना चाहता था, चाहे कलात्मक रूप में ही क्यों न हो। क्यों? यह वह खुद न जानता था। वह बहुत पहले से विश्वास करता आया था कि लक्ष्य पर साधन का औचित्य निर्भर करता है, किन्तु वह यह विश्वास नहीं कर पा रहा था कि जिन साधनों को वह अब काम में ला रहा था उन्हें किसी भी तरह उचित ठहराया जा सकता था और

यही उसके दुःख का प्रभाव था।

कोवाल्यैन्को उन विद्रोहों और षड्यन्त्रों की रिपोर्ट एन०के०वी०डी० को न देना चाहता था जिनमें सत्याभास का थोड़ा-सा भी अभाव था, और इस प्रकार अपने उच्च अधिकारियों से उसके बिगड़े हुए सम्बन्ध चलते रहे। उसकी गिरफ़्तारी तक यही स्थिति बनी रही और फिर उसे वह सब करना पड़ा जिसके खिलाफ वह इतने वर्षों से लड़ता आया था। उसे स्वीकार करना पड़ा कि उसकी रिपोर्टों में दी हुई सब 'सम्भावित' बातें दरअसल 'वास्तविक' थीं। एन० के० वी० डी० की दृष्टि से कोवाल्यैन्को की उपयोगिता समाप्त हो चुकी थी। जीवन का यही निर्दय नियम है।

क्रान्ति-विरोधी 'तथ्यों' के लिए एन० के० वी० डी० की अपरिमित भूख के बावजूद भी ज़ारशाही ओखरानी के ज़माने की तुलना में 'एजेण्ट प्रवोकेटियर' की प्रविधि का अपेक्षया गौण प्रयोग एक आश्चर्यजनक बात थी। सेकसौट लोग बहुधा साधारण तरीके से बातचीत शुरू करते और फिर सोवियत शासन के विरुद्ध निन्दनीय व अपमानजनक बातें कहते ताकि जिन लोगों पर वे निगाह रख रहे थे वे अपने-आपको सुरक्षित महसूस करके ठीक रूसी तरीके से अपने दिल को खोलकर रख दें। लेकिन मैंने कई वर्षों की अपनी कैद के बाद भी वास्तविक 'एजेण्ट प्रवोकेटियर' प्रविधि, अर्थात् सरकारी गुप्तचरों द्वारा क्रान्ति-विरोधी कार्यवाही, हत्या, षड्यन्त्र आदि के संगठन का एक भी उदाहरण न देखा। अफवाह थी कि कुछ दिखावे के मुकदमों के लिए नाजायज परचे छपवाये गए थे और ऐसा प्रतीत होता था कि इस प्रकार की बातें येझोव काल के अन्त में अधिक प्रचलित हो गई थीं जब कि पूछ-ताछ की प्रक्रिया अधिक यथाक्रम रूप में कार्यान्वित की जाने लगी थी। यह एक विरोधाभास प्रतीत होता है, लेकिन सच यह है कि 'एजेण्ट प्रवोकेटियर' की कार्यवाहियों से पहले विधिवत् शासित सरकार का कम-से-कम एक बाहरी ढाँचा होना जरूरी है। येझोव-काल में एन० के० वी० डी० को 'तथ्यों' के श्रमपूर्वक संगठन की कोई भी ज़रूरत न थी। वह केवल सेकसौटों की मनगढ़न्त कहानियों और कैदियों की अपराध स्वीकृतियों

से ही सन्तुष्ट था। उन्हें तथ्यों की जरूरत न थी, क्योंकि कागज़ी तथ्यों से ही उनका काम चल जाता था; और जिन अपवादों का उल्लेख किया गया है वे इस सिद्धान्त की पुष्टि ही करते हैं।

राज्यभक्त या 'आस्तिक' सोवियत नागरिक सोवियत शासन से असन्तुष्ट हो सकता है और उससे उसे क्षति भी पहुँच सकती है लेकिन उसके प्रति आस्था खोने का अर्थ स्वयं अपने प्रति आस्था खोना होगा। उसकी आस्था में ही उसकी मुक्ति है। सोवियत आदर्श के लिए प्रत्येक कम्युनिस्ट को अपनी आत्मा और अपनी स्वाभाविक नैतिक भावनाओं का बलिदान करना होता है। उस व्यक्ति का क्या हाल होगा जो अपने देवता के लिए अपने एक-मात्र प्रिय पुत्र की बलि चढ़ाकर उस देवता में आस्था खो बैठता है ?

यह बात हमें दिखावे के लोक-प्रसिद्ध मुकदमों के विषय पर ले आती है। इनकी मुख्य विशिष्टता इनके अतिरंजित विज्ञापन अथवा इनके प्रचारात्मक लक्ष्य में न होकर इस बात में है कि बन्दियों के अभियोगों का उनके गिरफ़्तार किये जाने के वास्तविक कारणों से रत्ती-भर भी सम्बन्ध नहीं है। जनता की दृष्टि में राजनीतिक विपक्षियों के उन्मूलन को न्यायोचित ठहराना और उन्हें जनता तथा भविष्य के सामने सदा के लिए घोरतम अपराधी चित्रित करना ही इनका एकमात्र उद्देश्य है। वास्तविक तथ्य तो सम्पूर्णतः नगण्य हैं।

यह कितना आसान काम था! दस आदमियों को पकड़कर हुक्म दिया जाता कि वे घोषणा करें कि किसी उच्च पार्टी-अधिकारी ने शहीद बनने के लिए चुने गए अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर सोवियत सत्ता को पलट देने के लिए क्रान्ति-विरोधी षड्यन्त्र की रचना में या स्तालिन अथवा वरोशिलॉव या अन्य किसी उच्च अधिकारी पर आतंकवादी आक्रमण करने की तैयारी में उनका सहयोग दिया था। एक बार किसी ऐसे कारणवश, जो समझ में नहीं आता, खारकॉव पार्टी समिति के सेक्रेटरी देम्तश्यैन्को और अन्य उच्च अधिकारियों को शिकार बनाया गया। कहा गया कि इन लोगों ने पेतल्यूरा के भूतपूर्व सहकारी मातवियेव्स्की और अन्य लोगों के साथ मिल-

कर एक षड्यन्त्र रचा था।

इस प्रकार की गुप्त रिपोर्टों के आधार पर एक रात देम्तश्यैन्को को अपने साथियों के साथ गिफ़्तार करके 'काले कौए' में बिठाकर एन० के० वी० डी० की अन्दरूनी जेल में ले जाया गया। अक्तूबर क्रान्ति के इस योद्धा कोएवंलेनिन और स्तालिन के साथी तथा प्रमुख बोलशेविक को यह जानकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि वह बोलशेविक नहीं, केवल एक 'क्रान्ति-विरोधी गुट' का सदस्य है, एक 'बलवाई' और 'आतंकवादी' है। इसके बाद पूछ-ताछ शुरू हुई। आठ-दस महीने की इस कार्यवाही के बाद—जरूरत पड़ने पर यह उन्नीस-बीस महीने तक चल सकती थी—उसका मुकदमा शुरू हुआ, और इस मुकदमे में उसने अपने देशवासियों, अपनी पार्टी और सारे संसार के सामने किसी एक अति भयंकर, अविश्वसनीय और रोंगटे खड़े कर देने वाले अपने अपराध को स्वीकार किया, जिसके फल-स्वरूप उसे सर्वोच्च दण्ड प्राप्त हुआ। इस बात से कोई फ़र्क न पड़ता था कि उसने कुरसी के पाए के जोर से अपना अपराध स्वीकार किया, जैसा कि हम सब बन्दियों का विश्वास था, या सोवियत शक्ति और अपने आदर्श के लिए एक 'प्रत्यक्ष राजनीतिक आवश्यकता' देखते हुए अपना बलिदान कर डाला। दोनों तरह से नतीजा एक ही था।

सोवियत राजनीतिक मुकदमों में बन्दियों की सम्पूर्ण अपराध-स्वीकृति को समझना आसान नहीं है। इसका आंशिक उत्तर आपको सोवियत मानव के मानसिक गठन में मिलेगा। यह एक निर्विवाद है कि न्यायालय में बन्दियों की वश्यता केवल पूछ-ताछ की प्रक्रिया द्वारा उन पर पढ़े हुए प्रभाव से नहीं समझाई जा सकती। यह ठीक है कि पूछ-ताछ के तरीके, खास तौर पर जब कि वे वर्षों और महीनों तक चलते रहते हैं, बलिष्ठ-से-बलिष्ठ आत्मा वाले आदमी को तोड़ने में सफल होते हैं। किन्तु असली बात कुछ दूसरी ही है। वह यह है कि अधिकांश पक्के कम्युनिस्टों को सोवियत यूनियन में अपनी आस्था हर कीमत पर बनाए रखनी ही पड़ती है। इस आस्था को त्याग देना अपनी ताकत के बाहर जाना होगा, चूँकि कई

परिस्थितियों में अपने दीर्घकालीन और गहरे बैठे हुए विश्वासों को त्याग देने के लिए, यहाँ तक कि जब कि उनकी रक्षा करना असम्भव हो गया हो तो भी, एक महान् नैतिक शक्ति की आवश्यकता होती है। अधिकांश कैदियों में, कई बार जार के खिलाफ लड़ने वाले पुराने क्रांतिकारियों में भी, यह शक्ति न होती थी। इस अद्भुत बात का उत्तर, जिसके लिए लोगों ने तरह-तरह के उलझे हुए अनुमान लगाए हैं, न तो गुप्त दवाओं में है और न आत्माभियोग की रहस्यमयी रूसी प्रवृत्ति में है। यह लोग अपने-आपको अपने उस निजी राज्य का शिकार या शहीद नहीं कह सकते जिसके लिए यह लड़े थे और जिसको इन्होंने खुद बनाया था। हो सकता है कभी वे अपने दिलों में स्तालिन और पार्टी-नेतृत्व के खिलाफ रहे हों, चाहे उन्होंने यह स्वीकार न किया हो, लेकिन वे अक्सर अपनी विभेद-बुद्धि के विरुद्ध सरकार के साथ बहुत काफी समझौते कर चुके थे और जिन गलतियों और कृत्यों को उन्होंने स्वयं आपराधिक समझा था अब वे उसी के अपराध में भागीदार बन गए थे, क्योंकि उनके खिलाफ खुल्लमखुल्ला विद्रोह करने का उनमें माद्दा न था।

मैं दिखावे के मुकदमे में पेश किये जाने से बच गया। यूक्रेन के कुछ उच्चतम पार्टी-अधिकारियों के विरुद्ध, जिनमें पॉस्तीचैव और कॉसियर तथा अन्य कई विद्वान्, वैज्ञानिक और टेकनिशयन शामिल थे, बुर्जुआ राष्ट्रवाद के अभियोग में चलाया जाने वाला सामूहिक मुकदमा अन्त में न चलाया गया। दिखावे के मुकदमों का जमाना समाप्त हो चुका था; उनका असर जाता रहा था। सोवियत यूनियन में किसी को भी इन अभियोगों अथवा अपराध-स्वीकृतियों की दिखावट पर विश्वास न रहा था।

अन्त में मैं मुक्त होकर अपने परिवार में लौट आया। मुझे आराम करने के लिए क्रीमिया भेजा गया और पुनः अपने पूर्व पद पर नियुक्त किया गया। उन्हीं छात्रों ने जय-जयकार के साथ मेरा स्वागत किया जिन्होंने मेरी गिरफ्तारी से पहले और बाद में इतनी निर्दयता के साथ मेरी आलोचना की थी। मैं फिर अपने व्याख्यानों में व्यस्त हो गया।